Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

श्री श्री १०८ शोभा माता जी के द्वारा लिखित

पत्राशीष

सन्त आश्रम-वाराणसी

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

॥ ॐ श्री गुरवे नमः ॥

श्री श्री १०८ शोभा माता जी के द्वारा लिखित

पत्राशीष

❋

अनुदित

ब्र० डॉ० निर्मला जैन

❋

सन्त आश्रम वाराणसी

CC-0. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रकाशक :
ब्र० आनन्द
संत आश्रम, कल्याणी

❀

प्रथम संस्करण : २६ फरवरी, २००९

❀

अनुदित :
ब्र० डॉ० निर्मला जैन
वाराणसी

❀

प्राप्ति स्थान :
सन्त आश्रम, डी ५३/८८ जी-लक्सा,
सन्त नगर, वाराणसी

❀

© सर्वाधिकार सुरक्षित :
सन्त आश्रम, लक्सा, वाराणसी

❀

प्रणामी : ७०/- रुपये

❀

अक्षर संयोजन :
आर०के०कम्प्यूटर एण्ड प्रिंटर
राजघाट, वाराणसी

❀

मुद्रक :
काबरा आफसेट्स
रवीन्द्रपुरी, वाराणसी

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भूमिका

'तन्मे मनः शिवसंकल्पमस्तु'—'शिवस्तोत्र' के प्रस्तुत मंत्र में प्रार्थना की गयी है—मेरा मन शिव (कल्याणकारक) संकल्प वाला हो।

किसी शुभ-संकल्प का स्फुरण चैतन्य-ज्योति की किरण है। उस निराकार चिज्ज्योति की शक्ति उसके पीछे होती है। उस परम ज्योति को पुनः पुनः नमन।

श्री श्री १०८ पूर्णब्रह्मज्ञा शोभा माँ के द्वारा लिखित **'पत्राशीष'** बँगला भाषा में लिखे गये पत्रों का संकलन है। इसका प्रथम खण्ड बँगला सन् १४ फाल्गुन, १३९६ में सन्त आश्रम-कल्याणी से प्रकाशित हुआ था। द्वितीय खंड चौथे श्रावण सन् १४०४ में सन्त आश्रम-वाराणसी से प्रकाशित हुआ। इन दोनों खण्डों में से संकलित किये गये पत्रों का संकलन है—हिन्दी भाषा में अनुदित 'पत्राशीष'। यह श्री श्री माँ से प्राप्त अनुमति एवं उनके शुभाशीष का प्रतिफल है। गुरु भाई-बहनों की पुनः पुनः प्रेरणा इस लेखन कार्य की प्रेरक है।

प्रस्तुत पुस्तक **'पत्राशीष'** श्री श्री माँ का शुभाशीष है। यह चिन्मयी माँ का शब्द ब्रह्ममय रूप में दर्शन है। इसमें श्री श्री माँ के हृदय से निकली अमृतमयी वाणी सँजोयी हुई है। समय-समय पर जिज्ञासु शिष्य-शिष्याओं के द्वारा प्रेषित पत्रों के उत्तर दिये गये हैं। इन पत्रों में अपनी सन्तानों के प्रति हार्दिक सान्त्वना, वात्सल्य, करुणा, कल्याणकामना निहित है। मधुर-उद्बोधन, संबल प्रेषित किया गया है शब्द-सूत्रों के माध्यम से। दूरवर्ती शिष्य-शिष्याओं को पत्रों के द्वारा गुरुसंग का सहज लाभ हो जाता है। **'सद्ग्रन्थ का पठन सत्संग है'**—श्री माँ ने यह उपदेश हमें पदे-पदे दिया है। भववैद्य श्री गुरु जी के द्वारा दी गयी महौषधि इस ग्रन्थ में निहित है। इसके द्वारा अशान्त-अस्थिर मन सहज शान्त-स्थिर हो जाता है। आनन्द का उत्स छिपा है इसमें। निःस्वार्थ व्यापक प्रेम में सब सीमाएँ घुलमिल जाती हैं। प्रेम ही प्रभु-रस का रसास्वादन है। बिना गुरुकृपा के इसकी अनुभूति असंभव है। अनुभूति के लिए समर्पण आवश्यक है एवं समर्पण के लिए अहं विसर्जन।

२६ फरवरी, १९६९ श्री श्री माँ का शुभ जन्मोत्सव मेरे जीवन में महोत्सव बनकर आ गया। श्री श्री माँ का प्रथम शुभ दर्शन, स्पर्शन के साथ 'फिर आना' यह मधुर भाषण हृदय-मंजूषा में सँजोयी मधुर स्मृति है। श्री श्री माँ के तीव्र आकर्षण ने मन मोह लिया, पुनः पुनः दौड़ शुरू हुई श्री श्री माँ के श्री चरणों की ओर। श्री माँ के श्री चरणों में बैठकर शांति एवं आनन्द का प्रतिपल लाभ लिया। प्रभु की गुरु रूप

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

में कृपा-वारि वर्षित होने लगी, मन मयूर नाचने लगा, हो गया निस्तरंग, नीरव। क्या इससे बड़ी निधि कोई मिल सकती है?

बात चल रही है 'पत्राशीष' ग्रन्थ की। सत्संग-सरिता में स्नात होती हुई मैं कभी पहुँची माँ के द्वार पर, मातृ-धाम में। माँ घिरी हुई बैठीं थीं अपनी अनेक शिष्याओं के बीच प्रातःकाल लगभग आठ बजे। और शिष्याओं के माध्यम से एक साथ अनेक पत्रों के उत्तर लिखवाती जा रही थी। यह क्रम प्रायः चलता था। मैं मूक दर्शक बनकर शांत-रस का पान करती थी। इन्हीं पत्रों का संकलन है पत्राशीष में। इसके अलावा कोलकाता, कल्याणी, पुरीधाम, वरकान्ता ग्राम आदि से प्रेषित पत्रों का भी संकलन है इसमें।

बच्चों का काम ही है माँ को तंग करना, पर माँ भला कभी होती है तंग। उसका हृदय तो वात्सल्य का सागर है। जब लौकिक माँ का ऐसा स्वरूप है तो अध्यात्म के शिखर पर विराजित शोभा माँ का क्या स्वरूप होगा? मैं प्रायः दोपहर के समय जब श्री माँ विश्राम करती थीं तब संत आश्रम का द्वार खटखटाने पहुँच जाती थी। पर श्री माँ ने मुझे कभी असमय में पहुँचने पर आपत्ति नहीं की।

उपर्युक्त प्रसंग भी 'पत्राशीष' से जुड़ा हुआ है। संत आश्रम के द्वार पर एक पत्र-पेटिका बनी हुई थी। पत्र वाहक के द्वारा उसमें डाले गये अनेक पत्रों को लेकर मैं श्री माँ को दे देती थी या टेबिल पर रख देती थी। श्री माँ उन्हें धीर-गंभीर रूप में प्यार से पढ़ती थीं और उपर्युक्त प्रकार से कई पत्रों का एक साथ उत्तर देती थीं। और मुझे बहुत से पत्रों को एक साथ डाकखाने में डालने के लिए भी प्रायः देती थीं। उन पत्रों के उत्तर भी इस ग्रन्थ-रत्न में दिये गये हैं।

'पत्राशीष' के हिन्दी अनुवाद में श्री श्री माँ की वह असीम अनुकम्पा भी निहित है, जो मुझे ४० वर्ष पूर्व मिल चुकी थी। बँगला वर्णमाला से सर्वथा अनभिज्ञ थी मैं, फिर भाषा का ज्ञान तो और भी दुरुह कार्य है बिना सीखे। परंतु लीलामयी के लीला-रसास्वादन की चिर आकांक्षिणी मुझे बँगला-भाषा का ज्ञान श्री माँ की कृपादृष्टि से अचानक हो गया। संत आश्रम की संत-आशीष पत्रिका को हाथ में ज्यों ही उठाया, बस बँगला पढ़ने लगी। श्री माँ की वाणी, लीला आदि पढ़कर मिलने लगा अपूर्व आनन्द। मेरे हृदय के दर्द को—'यदि बँगला आती तो श्री माँ के विषय में पढ़ लेती'—माँ ने सदैव के लिए मिटा दिया। अनेक पत्रिकाओं से श्री माँ की वाणी का संकलन करके सन् १९७० में 'माँ' लघु हिन्दी पुस्तक श्री माँ की स्वर्ण-जयन्ती के उपलक्ष्य में प्रकाशित हुई।

'पत्राशीष' चार भागों में विभक्त है—

१. गुरु-प्रसंग—इसमें गुरु स्वरूप, गुरु महिमा, गुरुमंत्र, गुरु-वाक्य, गुरु उपादेयता आदि का उपदेश है।

CC-0. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

२. साधना-प्रसंग—इसमें साधना के विषय में आदेश व उपदेश दिये गये हैं।

३. शान्ति-पथ—इसमें शांति मन में है, बाहर नहीं। विविध आयामों से उसकी प्राप्ति के उपाय उपदिष्ट हैं।

४. विविध-प्रसंग—इसमें अनेक विषयों से संबंधित पत्र हैं।

हिन्दी भाषा में अनुदित प्रस्तुत 'पत्राशीष' श्री श्री माँ की कृपा का प्रकाश है विशेषकर हिन्दी-भाषा भाषियों के लिये। इसे मातृ चरणानुरागी, मातृ कृपाधन्य शिष्य-शिष्याओं, भक्तों, जिज्ञासुओं के हाथों में सौंपते हुए मैं हर्षित हूँ। यह ग्रन्थ जैसे मेरे साधन-पथ का पाथेय बना, वैसे ही सबके लिए पाथेय बने। वर्षों की साध श्री माँ की अनुपम कृपा से ही साधित हुई है।

ग्रन्थ में हुई भाव-भाषा जन्य त्रुटियों के लिए मुझे श्री श्री माँ क्षमा करें। ग्रन्थ के अध्येता भी मुझे क्षमा करें और सुधार हेतु इंगित करने की कृपा करें। श्री माँ की आन्तरिक अभिलाषा निम्नलिखित उनके ही वाक्य में व्यक्त है

''आमि एक दिन थाकबो ना—किन्तु आमि चाई तोमादेर मध्ये दिये बेंचे थाकते अर्थात् आमार आदर्शेर रूपायन देखते।''

—श्री श्री माँ (पत्राशीष/द्वि०खं०/द्वि०अ०/पत्र सं०१०४)

''मैं एक दिन नहीं रहूँगी—किन्तु मैं तुम लोगों के माध्यम से रहना चाहती हूँ अर्थात् अपने आदर्श का रूपायन देखना चाहती हूँ।''

—श्री श्री माँ

प्रस्तुत 'पत्राशीष' श्री श्री माँ को समर्पित करते हुए मैं प्रमुदित हूँ, कृपाधन्य हूँ! श्री श्री माँ के चरणों में कोटि-कोटि नति।

श्रीचरणाश्रिता:—

ब्र०डॉ० निर्मला जैन

 CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रकाशकीय

'गुरुकृपा हि केवलम्'

श्री श्री १०८ शोभा माता जी की असीम अनुकम्पा से मुझे उनके द्वारा बँगला भाषा में लिखित 'पत्राशीष' के हिन्दी संस्करण को प्रकाशित कराने का सौभाग्य प्राप्त हुआ है। इसके पूर्व भी सन् १९९५ में श्री श्री माँ की जीवनी—'ब्रह्मज्ञ बालिका श्री श्री शोभा माँ' को भी प्रकाशित कराने का सौभाग्य मुझे मिला था। सन् २००२ में बँगला भाषा में संकलित 'वन्दना' के हिन्दी संस्करण को प्रकाशित कराने के लिए गुरुभाई श्री सूरजमल जैन को पूर्ण सहयोग करने का अवसर भी मुझे मिला था। प्रकाशित पुस्तकों को देखकर श्री श्री माँ को जो हार्दिक प्रसन्नता हुई—यह मेरे ऊपर उनकी अति कृपा है।

संत आश्रम कल्याणी में रहते समय मुझे 'पत्राशीष' को प्रकाशित कराने की सूचना मिली, इससे मुझे काफी प्रसन्नता हुई। गुरु की प्रसन्नता ही शिष्य का परमधन है। गुरु की सेवा ही प्रभु सेवा है। अतः मैंने प्रकाशन का कार्य सहर्ष स्वीकार किया। १७ जनवरी, २००९ को मैं वाराणसी आया और तत्परता से ग्रन्थ के प्रकाशन का सम्पूर्ण भार सँभाला। २६ फरवरी सन् २००९—श्री श्री माँ के शुभ जन्मोत्सव के अवसर पर 'पत्राशीष' ग्रन्थ सभी शिष्यों एवं भक्तवृन्दों को उपलब्ध हो सके, इसके लिए बहुत अधिक प्रयास करना पड़ा। श्री श्री माँ की कृपा से ही इतने अल्प समय में यह कार्य पूर्ण हो सका है।

इस महत् कार्य में श्री विशाल जैन का प्रारंभ से ही सभी कार्यों में मुझे पूर्ण सहयोग प्राप्त हुआ है। इसके लिए अन्य जिस किसी का भी सहयोग इस पुनीत कार्य में मिला, उनका मैं आभारी हूँ। श्री श्री माँ की कृपा से ही सबके सहयोग से यह कार्य सफल हो सका। सभी को माँ का आशीष प्राप्त हो।

श्री गुरु के पुनीत चरणों में कोटि-कोटि वन्दन!

श्री चरण-चंचरीक

ब्र० आनन्द

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पूर्णब्रह्मज्ञ सद्गुरु १०८ श्री श्री शोभा माता जी के जीवन की एक झलक

"बेटी! तुम्हारी यह पुत्री भविष्य में विवेकानन्द होगी"—यह बात अपनी नातिन को उपलक्ष्य करके नाना श्री योगेन्द्र मोहन पालित जी ने अपनी बेटी से कही। छोटी बालिका अपने संगी-साथियों के साथ बानियाँचंग ग्राम स्थित मामा के घर में खेल रही थी। अकस्मात् कहीं से वह दौड़ती हुई आयी और एक लम्बा सर्प अपने हाथ में झुलाते हुए अपनी माँ से बोली—"माँ! जाँघिये की डोरी मैं खो देती हूँ, इसलिए तुम मुझे डाँटती हो। यह देखो कितनी बड़ी डोरी लायी हूँ।" उनकी माँ डोरी देखकर घबरा गयीं और चित्कार करती हुई बोल उठीं—"अरे! यह साँप है।" किन्तु साँप-साँप यह भयपूर्ण चित्कार सुनते हुए भी बालिका ने साँप को नहीं छोड़ा, वरन् उसे हाथ में झुलाती रही और साँप भी मानो डसने का भाव भूल गया हो। तब "छोड़ दो—छोड़ दो"—सभी की चित्कार सुनकर बालिका ने साँप को छोड़ दिया। साँप भी उनका स्पर्श पाकर मुक्ति के आनन्द में मंथर गति से रेंगता हुआ चला गया। सभी ने देखा कि यह एक विषधर सर्प है! किन्तु लघु बालिका निर्विकार थी—मानो डोरी और साँप समान हों। साँप भी जैसे उसके वशीभूत हो गया हो। नातिन के आश्चर्यपूर्ण इस व्यवहार को देखकर ही नानाजी ने अपनी पुत्री से उक्त बात कही थी। परवर्ती काल में नाना जी की यह भविष्यवाणी अक्षरशः सत्य सिद्ध हुई। वह लघु बालिका ही भविष्य में निम्बार्क सम्प्रदाय की ५६वीं सद्गुरु जगज्जननी अनन्तश्री विभूषिता पूर्णब्रह्मज्ञा १०८ श्री शोभा माता जी हुई।

शुद्धात्मा का आविर्भाव श्रीसम्पन्न व्यक्ति के घर में होता है। इसीलिए भक्तदम्पति श्रीदादु स्व० सुकुमार राहा एवं श्री दीदी माँ स्व० सुरुचि देवी की गोद को आलोकित करके हमारी श्री श्री माँ का आविर्भाव हुआ। २६ फरवरी सन् १९२१ में स्वातिनक्षत्रयुक्तकृष्णापंचमी तिथि, शनिवार को ब्राह्म मुहूर्त में जन्म होने से मानो माँ ने ब्रह्मचेतना लेकर जन्म ग्रहण किया हो। उसी रात श्री माँ की ताई जी ने स्वप्न देखा—माँ काली की फोटो से माँ काली एक छोटी शिशु कन्या के रूप में इस धूलि-धूसरित धरणी पर उतर आयी हैं। श्री दादु ने शिशु को गोद में ले लिया है। जन्म के समय शिशु के चारों ओर चाँद की उज्ज्वल स्निग्ध-ज्योत्सना का झीना-सा मंडल था। यह आलोक केवल माँ की लघु देह को ही वेष्टित किये हुये था। कृष्णपक्ष की उस पंचमी तिथि की रात अन्यत्र कहीं भी आलोक नहीं था।

CC-0. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

श्री माँ की उम्र जब दो माह की थी, तब एक दिन माँ के तीसरे मामा उन्हें प्यार से गोद में लेकर बाहर गये, कुछ ही देर में उन्होंने शिशु को धीरे-धीरे भारी होते हुये अनुभव किया। अंत में खूब भारी लगने पर वे उसे गोद से उतारने के लिए बाध्य हो गये। उनका गुरु-भार देखकर सभी विस्मित हो उठे!

शक्ति-उपासक निष्ठावान भक्त श्री दादु ने अपनी गतजन्म की आराध्या कात्यायनी देवी को इस जन्म में कन्या रूप में प्राप्त किया। गत जन्म में श्री दादु-दीदी माँ (श्री माँ के माता-पिता) ब्रजदम्पति थे। ब्रज की अधिष्ठात्री देवी कात्यायनी को कन्या रूप में पाना उनकी आराधना का मधुर संकल्प था। उनकी सेवा से संतुष्ट होकर कात्यायनी देवी ने यह वर दिया—"त्रिपुरा जिले के कुण्डा ग्राम में मुझे कन्या के रूप में पाओगे।" वर्तमान जन्म में उसी वर ने मूर्त रूप लिया—श्री श्री माँ के रूप में। आशैशव श्रीदादु काली माता के परम भक्त थे।

श्री निम्बार्क सम्प्रदाय के ५५वें सद्गुरु ब्रजविदेही महन्त श्री श्री १०८ स्वामी सन्तदास बाबा जी महाराज, श्री श्री माँ के परमाराध्य गुरु थे। छः सात वर्ष की उम्र में श्री माँ ने अपने मामा के घर में उनका प्रथम दर्शन किया। प्रथम दर्शन में ही उन्हें देवाधिदेव महादेव के रूप में अपने गुरु की अनुभूति हुई, मानो देवता वे ही हैं। श्री माँ ने उनका द्वितीय दर्शन कुमिल्ला में प्राप्त किया। उनसे 'नाम-मंत्र' लेकर उन्हें श्री गुरु के रूप में स्वीकार किया।

श्री गुरु की शिष्य-पारखी दूरदृष्टि अद्भुत थी। इसका परिचय इसी से मिलता है कि अनेक दीक्षार्थी समागत थे। उनमें से सर्वप्रथम श्री माँ को ही नाम देकर विशेष रूप से चिह्नित किया। इतना ही नहीं उनके माता-पिता के ऊपर भी उनकी विशेष कृपा-दृष्टि थी। क्योंकि जब नाम एवं दीक्षा का कार्य समाप्त हो चुका था, दीक्षा का सामान माला-कण्ठी आदि भी शेष हो चुके थे। अतिविलम्ब के कारण उपस्थित जनसमूह को उनकी दीक्षा होने की कोई आशा न थी। ऐसी स्थिति में भी श्री गुरु बाबा सन्तदास जी के आदेशानुसार दो माला और कण्ठी खाली थैली में अलौकिक भाव से मिल गयी। गोपी चन्दन भी उनके निर्देशानुसार प्राप्त हो गया। इस प्रकार असमय में भी उन्होंने श्री दादु एवं दीदी माँ को दीक्षा देकर अनुगृहीत किया।*

नाम (मंत्र) प्राप्ति के लगभग ४ मास बाद ही श्री माँ के बाल्य-जीवन में चरम आघात का क्षण आया, जीवन के परम आश्रय श्रद्धेय श्री गुरु जी का हुआ महाप्रयाण! माँ के कुसुमवत् कोमल जीवन में औदासीन्य छा गया। लगभग एक मास बाद श्री

---

* द्रष्टव्य—सजीव एवं मर्मस्पर्शी वर्णन पुस्तक 'बालिका ब्रह्मज्ञा श्री श्री शोभा माँ' के 'स्मृति' लेख में।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

माँ के दिव्य जीवन में श्री गुरु की अपार्थिव लीला शुरू हुई। सभी ने श्री माँ के आध्यात्मिक-जीवन के क्रमिक विकास की ओर लक्ष्य किया। कभी किशोरी माँ ठाकुरघर में जाकर पूजा करती थीं और हो जाती थीं समाधिस्था। अनेक दिव्य भाव उनके भीतर प्रकाशित हो उठते थे। भोग देने के बाद नाना प्रकार के भोग-ग्रहण के चिह्न सभी को विस्मित कर देते थे। आध्यात्मिकता का बाह्य-प्रकाश अनेक रूपों में दृष्टिगत होता था। श्री गुरु कृपा से आध्यात्मिकता की समस्त भूमियों को द्रुतगति से सुगमतापूर्वक अतिक्रम करती हुई किशोरी माँ पूर्ण ब्रह्मज्ञता को प्राप्त हुईं। कितनी ही जटिल समस्याओं का समाधान सहजता से कर देती थीं। शास्त्रीय व लौकिक अनेक प्रश्नों की मीमांसा ने सबको कर दिया था स्तम्भित व आनन्दित। उनकी दिव्य ज्ञान-दृष्टि से अगम्य कुछ भी न था। उनके प्रति आकृष्ट होकर देश-देशान्तरों से अनेक भक्तों, पंडितों का समागम उनके पवित्र गृह में होता था। महामहोपाध्याय पं० गोपीनाथ कविराज हुए थे परमभक्त। बँगलादेश (वरकान्ता) में अपने सहयोगी मित्रों के साथ श्री माँ के प्रथम दर्शन हेतु गये और शास्त्रीय विषयों पर गूढ़ चर्चा की। साथ ही 'पूर्ण ब्रह्मज्ञ बालिका शोभा माँ' के रूप में जगत को परिचय कराया। तत्पश्चात् पत्राचार के माध्यम से श्री माँ से शास्त्रीय विषयों का अनुभवपरक समाधान पाने हेतु चिर आकांक्षी बने रहे। चार महीने के बाद वे काशी के एक संन्यासी शंकरानन्द स्वामी को साथ लेकर पुनः वरकान्ता गये एवं श्री माँ से काशी आगमन हेतु अनुरोध किया।

श्री माँ अपने माता-पिता, छोटी बहन, गुरुबहन ऊषा एवं ब्रह्मचारी जी के साथ कोलकाता आयीं। यहाँ उन्होंने एक सप्ताह तक श्री अक्षय दत्तगुप्त महाशय के घर वास किया। तदुपरान्त सभी को लेकर वे ५ जनवरी, सन् १९३९ को पं० गोपीनाथ कविराज जी के घर पर काशी आ गयीं। यहाँ श्री माँ के साथ अनेक भक्त, पंडितजनों ने धर्मालोचना की। माँ की अमृतवाणी सुनकर अपने संदेह को दूर करने एवं आध्यात्मिक उन्नति के मार्ग में सुगम गति लाभ करने हेतु माँ से अनेक प्रश्नों की जिज्ञासा की जाती थी। धीरे-धीरे श्री माँ की ख्याति दिग्-दिगन्त व्याप्त होने लगी। किन्तु श्रीयुत् गोपीनाथ कविराज जी की अत्यधिक अस्वस्थता के कारण श्री माँ काशी में मात्र सात-आठ दिन ही रुक पायीं, पुनः वे कोलकाता लौट गयीं।

कोलकाता में वास करते समय श्री माँ एक दिन कालीघाट स्थित दुकान पर अपने भक्तों के साथ गयीं। वहाँ अपूर्व सुन्दर श्री राधाकृष्ण के युगल विग्रह की ओर श्री माँ की दृष्टि आकृष्ट हुई। उन्होंने सबके निकट उसके सौन्दर्य की खूब प्रशंसा की। श्री माँ की बात सुनकर उनके परमभक्त, योगिराज विशुद्धानन्द परमहंसदेव के शिष्य डॉ० सुरेशचन्द्र देव उस युगलमूर्ति को खरीद लाये। ये डॉ० देव ही श्री माँ के प्रथम दर्शन हेतु श्री गोपीनाथ कविराज के साथ वरकान्ता गये थे।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कोलकाता में ही श्री मनमोहन घोष महाशय के घर पर सन् १९३९ में अतिमनोज्ञ श्री राधाकृष्ण युगल के उक्त विग्रह की प्राणप्रतिष्ठा एवं अभिषेकादि कार्य अनेक पंडितों के द्वारा सम्पन्न हुए। उस आनन्दपूर्ण समारोह में श्री श्री आनन्दमयी माँ की अकस्मात् उपस्थिति से और आनन्द छा गया। अनेक वैष्णव भक्तों ने मिलकर खूब नामकीर्तन किया। जयध्वनि, शंखध्वनि, ऊलूध्वनि से संपूर्ण वातावरण धर्ममय हो गया। यही मंगलमयी युगलमूर्ति संत आश्रम वाराणसी के संत मंदिर में विराजित है।

श्री माँ के कोलकाता निवास के समय अक्षयदत्त गुप्त महाशय के घर पर अनेक भक्त एवं विज्ञ पंडित प्रायः आते थे। उनके दर्शन एवं तत्त्वचर्चा से मंत्रमुग्ध हो जाते थे। एक दिन मणिन्द्र किशोर चक्रवर्ती जी ने माँ से पूछा—आपने क्या भगवान को देखा है? उनके और जगत के साथ आपका क्या सम्बन्ध है?

श्री माँ ने निःसंकोच दृढ़तापूर्वक उत्तर दिया—"**भगवान को मैंने निश्चय ही देखा है। उनके साथ मेरा अभेद सम्बन्ध है एवं भगवान के साथ जगत का जो सम्बन्ध है, मेरे साथ भी वही सम्बन्ध है।**"....

"**जगत में एकमात्र वे ही हैं। वे अनेक हुए हैं अपने लिये ही। वे अनेक भी एक के अन्तर्गत हैं। एक के मध्य में अनेक और अनेक के मध्य में एक ही विराजित हैं।**" इस प्रकार सभी को अधिकार भेद के अनुसार उपदेश देकर श्री माँ कोलकाता से वरकान्ता चली गयीं।

सन् १९४३ में श्री माँ के पिताश्री सुकुमार राहा ने देहत्याग किया। इसके कुछ समय पूर्व उन्होंने एक पक्का मकान बनवाया था, जिसका नाम श्री माँ ने रखा था 'कृपाकुंज' और उसमें लगभग एक वर्ष तक रहीं। तत्पश्चात् श्री माँ बड़े भाई श्री सुविमल राहा महाशय के कोलकाता बालीगंज स्थित आवास में आ गयीं। कोलकाता से श्री माँ समय-समय पर दक्षिण-भारत आदि के अनेकानेक तीर्थों में भ्रमण हेतु भक्त मण्डली के साथ प्रायः जाया करती थीं। उनकी यात्रा का उद्देश्य मात्र मनोरंजन नहीं था, प्रत्युत कुछ अलौकिक ही था। हिमालय के चार धामों की यात्रा श्री माँ ने कई बार की, साथ ही अनेक पदयात्राएँ भी कीं। सम्पूर्ण भारतवर्ष के अनेक तीर्थों का श्री माँ ने अनेकों बार भ्रमण किया, जिसका वर्णन सहज नहीं है। श्री माँ अपनी तीर्थयात्रा के रोचक वृत्तान्त भक्तों को सुनाकर प्रायः आनन्दित करती रहती थीं। वे प्रभु एवं गुरु कृपा से प्राप्त अति दुर्लभ क्षण थे, जिन्हें स्मृति-कोश में ही सँजोकर रखा जा सकता है।

इसी तीर्थयात्रा के पावन लोकमंगलकारी संकल्प के मध्य श्री श्री माँ का हरिद्वार-पूर्णकुम्भ के अवसर पर हरिद्वार जाना हुआ। वहाँ ऋषिकेश आश्रम में उन्होंने १०८ स्वामी संतदास बाबा जी महाराज के दीक्षित संन्यासी शिष्य श्री कृष्णदास जी महाराज

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

से बँगला १३५७ साल, वैशाख मास, अक्षय तृतीया की शुभ तिथि को संन्यास ग्रहण किया। श्री कृष्णदास जी वासुदेव मठ के प्रतिष्ठाता एवं श्री माँ के ज्येष्ठ गुरुभ्राता थे। श्री माँ को संन्यास देकर वे कृतकृत्य हो गये, इस भाव को उन्होंने अनेक प्रकार से श्री माँ के समक्ष व्यक्त किया। जैसे निमाई के गुरु केशव भारती उन्हें संन्यास मंत्र की दीक्षा देकर भारत विख्यात हो गये, इसी तरह ब्रह्ममयी माँ आपकी कृपा से मैं सम्मान का अधिकारी हो गया हूँ। इस प्रकार त्रितापनाशिनी कल्याणमयी श्री श्री माँ का संन्यास पुण्य-क्षेत्र में पुण्य-क्षण में संन्यासियों के नामकीर्तन, शंख-घंटे की पूत ध्वनि के मध्य, महासमारोह के साथ उल्लासमय वातावरण में सम्पन्न हुआ।

संन्यास ग्रहण के पश्चात् १ जनवरी सन् १९५० में १०८ श्रद्धेय रामदास काठियाबाबा जी के तिरोभाव उत्सव के दिन काशीधाम, लक्सा में संत आश्रम की नींव श्री माँ ने अपने हाथों से रखी। काशी में महिलाओं के लिए आश्रम उनके श्रीगुरु की इच्छा का रुपायन है। सन् १९५१ में संत-आश्रम के नव निर्मित एक मंजिले भवन में दुर्गा पूजा के शुभ अवसर पर भक्त एवं शिष्यगणों के साथ लगभग एक मास तक श्री माँ ने अवस्थान किया। सितम्बर सन् १९५२ में श्री माँ स्थायीभाव से रहने के लिए अपनी शिष्याओं—ईला देवी, गायत्री देवी, संध्या देवी, कृष्णा देवी, मिनती देवी आदि के साथ कोलकाता से आ गयीं।

श्री माँ जहाँ भी भक्तों के साथ जाती थीं, उनके साथ श्री ठाकुरजी का विग्रह भी साथ ही ले जाया जाता था। उनकी सेवा-पूजा-भोग आदि भी नियमित होते थे। इसी क्रम में चाहे गोपालजी हों या किशनलाल जी या श्री राधा-बिहारीजी सभी को साथ लेकर श्री माँ ने बड़ी-बड़ी यात्राएँ की थीं। संत-आश्रम के एक मंजिले भवन के कक्ष में ही श्री श्री ठाकुरजी को विराजित करके पूजा-अर्चनादि कार्य सम्पन्न होते थे। बाद में संत आश्रम का कलेवर बढ़ता गया और ठाकुरजी दूसरी मंजिल में, वर्तमानकालीन श्री माँ के कमरे में विराजित किये गये। वहीं पूजा-आरती, भोग आदि सम्पन्न होते थे। आश्रम की पवित्र भूमि पर पहले से ही तुलसीवन, फूल और बड़े-बड़े कई बेल के पेड़ थे। ग्रीष्मकाल में एक बेल के पेड़ से बिन्दु रूप में मधु झड़ता था; श्री माँ ने उसका नाम 'मातृच्छाया' रखा था। आश्रम के पौधों से भी माँ को बड़ा अनुराग था, समय से जलसेचनादि सेवा एवं जाड़े के दिनों में तुलसी वन का वस्त्रों द्वारा आच्छादन आदि सेवाओं के लिए भी माँ सदैव सचेष्ट रहती थीं। क्रम-क्रम से आश्रम का स्वरूप विस्तृत होता गया, जो आज दर्शनीय है।

आश्रम की स्थापना के पीछे श्री माँ के पावन उद्देश्य हैं उन्हीं के शब्दों में—

१. "आत्मिक कल्याण—यदि अपने को उन्नत कर सको, तो देश का और दस का उपकार कर सकते हो।"

CC-0. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

२. "मनुष्य जिसको भूल गया है, पुनः उसका स्मरण करा देना।"

३. "...सभी का एक देश, एक माँ, एक इष्ट हो। भाषा एक, भाव एक, लक्ष्य भी एक ही हो।"

४. "आत्मिक शक्ति सम्पन्न जीव को तैयार करके जगत को उपहार देना।"

आश्रम में निवास के समय अतिथियों के लिए श्री माँ के द्वारा बनायी गयी नियमावली है, जिसका पालन अनिवार्य है।

आश्रम के शान्त सुरम्य परिवेश के मध्य श्री श्री माँ ने सन् १९५८ में अक्षय तृतीया के पुण्य दिन सन्त-मंदिर की नींव रखी। वैशिष्ट्यपूर्ण मंदिर का शिखर श्री श्री माँ की सुन्दर परिकल्पना है। शिखर के शीर्ष भाग में कमल पर विराजित, स्वर्णाक्षर में लिखित ज्योतिर्मय 'ॐ' कार है। उसके एक देश में श्री हनुमान अंकित ध्वज शोभायमान है। मंदिर-शिखर का अधोदेश अलंकृत है चतुर्भुज नारायण के चतुर्हस्त में शोभित—शंख-चक्र-गदापद्म की पूर्ण प्रतिकृति से। सन्त नगर के सन्त-मंदिर का भव्य-शिखर दूर से ही दृष्टि पथ में आकर हृदय को अनिर्वचनीय आनन्द से भर देता है। मंदिर के मध्यस्थल में श्री राधा-बिहारीजी की जाग्रत युगल मनोहर मूर्ति विराजित है। युगल-विग्रह के दक्षिण भाग में श्री १०८ रामदास काठियाबाबाजी महाराज की दंडायमान मर्मर मूर्ति सुशोभित है। ये महापुरुष श्री माँ के दादा गुरुजी महाराज हैं।

युगल-मूर्ति के वाम पार्श्व में आसीन हैं—श्री श्री माँ के परम श्रद्धेय ब्रजविदेही श्री श्री १०८ सन्तदास बाबाजी महाराज की उज्ज्वल मनोहारी जीवन्त मूर्ति। मंदिर में ही एक सिंहासन पर सालिग्राम जी विराजित हैं। श्री विश्वनाथ-अन्नपूर्णा जी, गणेश जी, हनुमान-गरुड़ देव जी, नारायण जी, लक्ष्मी जी, गोपाल जी आदि की अनेक मनोहर मूर्तियाँ सुशोभित हैं। मंदिर के पृष्ठ भाग में श्री राधा-कृष्ण की युगल जाग्रत-जोड़ी विराजित है। श्री श्री निम्बार्क भगवान एवं श्री गुरुमाता की छवि विद्यमान है। श्री काली माँ की १०० वर्ष प्राचीन छवि सुशोभित है, जिसे श्री माँ के पिताजी को बाल्यकाल में एक साधु जी ने प्रदान किया था। छवि अद्यावधि पर्यन्त प्राणवन्त एवं सुरक्षित है, यह है श्री माँ के द्वारा उपदिष्ट सेवा-पूजा का माहात्म्य।

संत-मंदिर के बहिर्भाग में दोनों ओर श्री निम्बार्क सम्प्रदाय की श्री गुरुपरम्परा का नाम संगमरमर पर अंकित है। जिनकी पूजा-आरती प्रतिदिन होती है। श्री गुरुपम्परा के प्रत्येक नाम का स्वयं श्री माँ श्रद्धापूर्वक उच्चारण करके जय देती थीं अपने भक्तों के साथ, जो आज भी दी जाती है। नाम एवं दीक्षामंत्र प्रार्थी को देकर ऋषिकुल में नूतन जन्मदात्री हैं हमारी सद्गुरु श्री श्री शोभा माँ! अगणित जन्मों की सुकृति का फल है ऐसे पूर्ण ब्रह्मज्ञ सद्गुरु की प्राप्ति! जिनका आश्रय पाकर मनुष्य अधिक

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

से अधिक तीन जन्मों में मुक्ति-लाभ करता है। उन्होंने हजारों शिष्यों को ब्रह्ममंत्र देकर कल्याण किया है।

सन्त-मंदिर में ब्राह्ममुहूर्त से लेकर रात्रि पर्यन्त, आरती-भोग आदि के सेवा कार्य श्री माँ के द्वारा निर्धारित समय के अनुसार अद्यावधि पर्यन्त संपादित होते हैं। समय से प्रत्येक कार्य को स्वयं करना एवं शिष्यों, भक्तों से कराना यह श्री माँ की अनुकरणीय जीवन-शैली है।

श्री माँ के द्वारा प्रतिष्ठित पवित्र आश्रम प्राङ्गण में समय-समय पर उत्सवों-महोत्सवों का आयोजन होता रहता है। जिसमें देश-विदेश से श्री माँ के भक्त-शिष्य, सन्त आकर विविध अनुष्ठानों में सम्मिलित हो शान्ति एवं आनन्द पाते हैं।

संत-आश्रम के सामने संत-आशीष नाम से आश्रम का ही एक भवन है। इसकी स्थापना श्री माँ ने सन् १९६४ में विजयादशमी के दिन की थी।

आश्रम के पवित्र परिवेश में बाल-गोपालों के संस्कारयुक्त शिक्षण के लिए श्री माँ ने सन् १९७२ में **'संत शिशु विद्यालय'** की स्थापना की। विद्यालय में शिक्षण के साथ ही बच्चों के मनोरंजन हेतु शिक्षणेतर कार्य भी कराये जाते हैं। सुन्दर-स्थानों पर उन्हें घुमाने के लिए ले जाया जाता है। प्रोत्साहन के लिए पुरस्कार एवं छात्रवृत्ति की व्यवस्था है। विद्यालय का वार्षिकोत्सव भी सोल्लास मनाया जाता है, जिसकी दर्शक एवं अभिभावकगण भूरि-भूरि प्रशंसा करते हैं। विद्यालय के बच्चों के प्रति श्री माँ ने उपदेश दिया था—**"छात्र-छात्राओं के मध्य में वे ही (प्रभु) हैं।"**

१ जनवरी सन् १९६७ में १०८ श्री रामदास काठियाबाबा जी के तिरोभाव उत्सव के दिन कल्याणी, नदिया, पश्चिम बंगाल में श्री माँ ने संत-आश्रम की स्थापना की। आश्रम प्राङ्गण में ही श्री राधा-माधव का सुरम्य मंदिर है, इसमें मंदिर के दैनन्दिन पूजादि कार्य यथासमय होते रहते हैं। मंदिर के बहिर्भाग में दोनों ओर संगमरमर पर निम्बार्क-सम्प्रदाय की श्री गुरुपरम्परा का नाम अंकित है। जिनकी आरती, पूजा एवं प्रत्येक नाम की जयध्वनि प्रतिदिन होती है। इस आश्रम में **'गुरु पूर्णिमा'** महोत्सव प्रतिवर्ष मनाया जाता है, जिसमें अगणित भक्त, शिष्य, सन्त आकर पुष्पांजलि प्रदान, नामकीर्तनादि समस्त अनुष्ठानों में सम्मिलित होकर आनन्द एवं शांति पाते हैं। इसके साथ ही १०८ श्री रामदास काठियाबाबाजी का तिरोभाव उत्सव, १०८ श्री सन्तदास बाबा जी महाराज का जन्मोत्सव, तिरोभाव उत्सव, श्री माँ का जन्मोत्सव एवं तिरोभाव उत्सव आदि भी समय-समय पर अनुष्ठित होते रहते हैं, जिसमें आश्रम की जीवन्तता, आनन्द-मुखरता दर्शनीय रहती है।

श्री माँ ने सन् १९६८ में गुरुपूर्णिमा के दिन, सिंथिस्थित **'संत-आशीष'** की प्रतिष्ठा की। कोलकाता एवं आस-पास के भक्तों को श्री माँ का सत्संग श्री माँ के

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

यहाँ निवास करने से सुगम हो जाता था। यहाँ भी ठाकुरजी की सेवा, मिलन-मंदिर का कीर्तन, प्रसाद वितरण आदि यथासमय चलते रहते हैं।

वाराणसी एवं कल्याणी स्थित दोनों ही आश्रम श्री श्री माँ के अपूर्व सान्निध्य एवं सत्संग के केन्द्र रहे हैं। वर्ष में दो बार श्री माँ कल्याणी-आश्रम अपनी संतानों को सान्निध्य देने एवं उनका सान्निध्य पाने हेतु जाती थीं। विज्ञपंडित, शिष्य, भक्त सभी श्री माँ से लौकिक एवं तात्विक प्रश्नों का सहज समाधान पाकर उनकी छत्रछाया में निर्भयता पूर्वक जीवन जीते रहे हैं। श्री माँ के विशाल उदार हृदय के कारण अपने शैशव के आनन्द की अनुभूति उनके द्वारा प्राप्त कृपा का फल है। दोनों ही आश्रम पावन तीर्थधाम हैं, जहाँ सहज ही चित्तशुद्धि हो जाया करती है। इन पावन तीर्थों की अधिष्ठात्री हैं हमारी परम अंतरंगा गुरु, बंधु, पिता-माता सदृश हमारी श्री श्री माँ। जहाँ भी वे विराजित हो जाती थीं, वहीं दर्शनार्थियों का ताँता लगा रहता था। प्रभु प्रसाद का अनिर्वचनीय आनन्द भी श्री माँ की अपूर्व देन है। अनेक बार शिष्याओं के साथ-साथ स्वयं भोग बनाना, भोग लगने के बाद उसे समस्त शिष्यों-शिष्याओं, भक्तों, सन्तजनों को वितरित करके परम आनन्दित होना ही श्री माँ की अंतरंग तृप्ति का कारण था। उस सन्तानवत्सला परमविरागिनी मैया का परमधन था—सन्तानों की समभाव से तुष्टि, प्रसन्नता। उनकी कोई अपनी इच्छा न थी—भक्त, शिष्य-शिष्याओं की तुच्छ-सेवा से ही वे पुलकित हो जाती थीं। सन्तानों के आगमन की प्रतीक्षा में रहना, उनके गमन के समय सन्तानों के पीछे-पीछे कोमल डग रखते हुए उन्हें ओझल होने तक विदाई देना श्री श्री माँ का सहज-स्नेह था।

श्री श्री माँ का श्री गुरुजी के प्रति श्रद्धा-विश्वास भी अटूट रहा। वे उनके ऊपर पूर्ण निर्भरशील थीं। अपने 'स्मृति' लेख में उन्होंने गुरु के प्रति अपनी अचला भक्ति उड़ेल दी है। उन्होंने लिखा है—"मेरी छोटी-बड़ी सभी प्रार्थनाएँ बाबा ने पूर्ण की हैं। मेरे ऊपर जैसे कृपा की है, अपने शरणागत आश्रितजन के ऊपर भी यही कृपा करो, यही तुम्हारे चरणों में प्रार्थना है।" उनकी परमाभक्ति के प्रसाद स्वरूप उन्हें श्री गुरुदेव का तृतीय बार दर्शन मिला था, जिससे उन्होंने श्री माँ को कभी वंचित नहीं किया। श्री माँ ने लिखा है—"वे आज भी हैं, जैसे मैं हूँ और तुम हो।" धन्य है माँ का श्री गुरु के प्रति समर्पणभाव! जिसमें अहं का लेश नहीं रहा—"बाबा हैं, चिन्ता क्या? मैंने तुम लोगों को उनके चरणों में समर्पित कर दिया है। निर्भय रहो—इत्यादि।" उन्होंने अपने नाम से कोई संस्था नहीं चलायी। संत-नगर, संत-आश्रम, संत-मंदिर, संत-आशीष, संतशिशु विद्यालय आदि उनके समर्पण भाव के जीवन्त प्रतीक हैं। आश्रम से निकलने वाली पत्रिका का नाम भी श्री माँ ने 'संत-आशीष' ही रखा है।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

श्री माँ ने अपने श्रद्धेय गुरुदेव को यदि देवाधिदेव महादेव के रूप में देखा था, तो उनके भक्तों ने उन्हें शंकर-तनया नर्मदा देवी के रूप में देखा। जो पिता की गोद से निःसृत होकर लीला वैचित्र्यपूर्ण अपूर्व गति से जीवन-पथ पर अग्रसर होती हुई, उभय तीर पर आश्रित आर्त, जिज्ञासु, मुमुक्षु सभी की जिन्होंने हार्दिक बुभुक्षा मिटायी। अगणित तप्त-चित्त हो गये शीतल! एक ही स्वरूप में वे हमारी अतिकोमला स्नेहमयी जननी हैं और परमकल्याणकारी गुरुजी भी। उन्होंने कोमल-कठोर उभय रूपों में ही अपनी अगणित सन्तानों को शिक्षा दी थी।

संत-आश्रम प्रकाशन के कार्य में भी अपनी महत्वपूर्ण भूमिका का निर्वहन करता है। आश्रम की पत्रिका तो समय-समय पर प्रकाशित होती ही है। इसके साथ ही ज्ञानवर्धन हेतु अनेक पुस्तकें बँगला, हिन्दी, अंग्रेजी में भी प्रकाशित की जाती हैं।

श्री श्री माँ की सद्गुरु रूप में लीला का विस्तार हुआ १६-१७ वर्ष की लघु किशोर वय से और उसका संवरण हुआ ८४ वर्ष की दीर्घायु में, ३१ अक्टूबर सन् २००४ को संत-आश्रम, वाराणसी में।

महापुरुषों का आविर्भाव-तिरोभाव दोनों ही उनकी लीला है। जन्म-मरण जयी हैं हमारी मातृगुरु। वे अप्रकट होकर भी सर्वत्र समभाव से विराजमान हैं। आज भी भक्तों, शिष्यगणों के ऊपर उनकी कृपावारि वर्षित है। श्री माँ के शब्दों में—

"गुरु किसी विशेष देह में आबद्ध नहीं हैं। वे सर्वव्यापी हैं—आकाश के सर्वव्यापित्व की तुलना भी उनकी तुलना में अति नगण्य है। उनकी तुलना वे ही हैं।"

श्री श्री माँ के महाप्रयाण के पश्चात् २६ फरवरी, सन् २००७ में श्री श्री माँ के शुभ जन्मोत्सव के अवसर पर, श्री माँ की **"श्री मूर्ति प्रतिष्ठा महोत्सव"** का आयोजन संत आश्रम, वाराणसी में किया गया।

संत मंदिर में ही श्री श्री माँ की संगमरमर की मनोज्ञ-मूर्ति स्थापित की गयी। यह मूर्ति सदैव उस चिन्मय-मूर्ति की याद दिलाती रहेगी और पथप्रदर्शक बनी रहेगी चिरकाल तक।

'सागर की बूँद में, सागर नहीं समा सकता।
संक्षिप्त-से वर्णन में, विराट् नहीं समा सकता॥'

अनंत लीलामयी, अंतर्यामिनी, सन्तानवत्सला, गुरुगतप्राणा, सद्गुरु रूपिणी श्री श्री माँ के चरण कमलों में कोटि-कोटि वन्दन!

कृपाकांक्षिणी शिष्या
ब्र०डॉ० निर्मला जैन

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ॐ माँ

श्री श्री शोभा माँ को लिखित
महामहोपाध्याय गोपीनाथ कविराज का प्रथम पत्र
श्री श्री दुर्गा

कोलकाता
२७.५.१९३८

माँ शोभा,

हम आपके यहाँ से विदा लेकर चन्द्रनाथ गये थे। वहाँ से कल रात कोलकाता पहुँच गया। आगामी दिन यहाँ से पुरीधाम जाऊँगा। पिछले महाकुम्भ के उपलक्ष्य में हरिद्वार में किसी शुभ मुहूर्त पर शिशिर बाबू के साथ आपके सम्बन्ध में विचार-विमर्श हुआ था। उसी के फलस्वरूप आपको देखने की इच्छा हुई। उसी इच्छा के कारण वरकान्ता ग्राम में गया। आपके साथ भेंट हुई। कुछ दिन अनेक विषयों पर चर्चा हुई।

आप सबके स्नेह, आदर और यत्न से अभिभूत हुआ। हृदय में अभूतपूर्व आनन्द का अनुभव किया। कुछ काल अनवच्छिन्नभाव से इस आनन्द का उपभोग करके दुःख संतप्त हृदय से आप सबके निकट से विदाई ग्रहण की। संसार में मिलन होने पर विच्छेद होगा ही। आविर्भाव होने पर उसका तिरोभाव भी होता है—इसीलिए यहाँ कुछ भी स्थायी नहीं है। यहाँ का सुख-दुःख सभी विनाशशील है। इसलिए आपको पाकर जिस प्रकार आनन्द हुआ था, आपको छोड़कर आने पर ठीक उसी के अनुरूप वेदना हो रही है। जानता हूँ यह सुख जिस प्रकार स्थायी नहीं होता उसी प्रकार यह व्यथा भी नहीं रहेगी—किन्तु इन उभय अवस्थाओं में रहते हुए भी उभय से अतीत पूर्ण सत्य में प्रतिष्ठित न हो सकने पर सुख-दुःख से अतीत प्रकृत रहस्य की उपलब्धि नहीं की जा सकती। आपने पूर्ण-ब्रह्म में प्रतिष्ठा लाभ की है—इसीलिए आपने पूर्ण ज्ञान और शक्ति में निर्विकार एवं निश्चल स्थिति प्राप्त की है। आपकी कोई इच्छा नहीं है—फिर भी आप इच्छामयी हैं। हमारे जैसे अपूर्ण जीवों के पूर्णत्व सम्पादन हेतु जब आपके प्राण रुदन करेंगे तब हमारी आशा-आकांक्षा के साफल्य-मण्डित होने का अवसर मिलेगा। मेरे पास बीच-बीच में पत्र लिखती रहियेगा। अन्यान्य विवरण बाद में लिखूँगा। इस पत्र में अधिक कुछ नहीं लिख सका, कारण अभी समयाभाव है। पुरी के पते पर उत्तर दीजियेगा। पता यह है—

C/o Sj. Sudhir Choudhary, Ram Chandi Shahu, Puri, B.N. Rly.

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आशा करता हूँ मेरी बात आप विस्मृत नहीं करेंगी। जिससे प्रकृत स्थान पर पहुँच सकूँ, उसके लिए सहायता प्राप्त करने की आशा करता हूँ—भरोसा है कि मैं वंचित नहीं रहूँगा।

उनकी कृपा ही सार है—अन्य सब निष्फल है। प्राणों में उसी कृपा की आकांक्षा करके पड़ा हुआ हूँ। चेष्टा और साधना जो कुछ चल रही है, सभी तो बाह्य है। जन्म-जन्मान्तर से लेकर जो अभाव (अभावनीय व्यापार) घटित होता आ रहा है, उसकी महिमा अवर्णनीय है। न जाने कौन-सा मुहूर्त होगा जब आकाश से एक बिन्दू, मेघ का जल गिरेगा, उसी आशा से चातक ऊर्ध्व मुख करके ताक रहा है। मैं नहीं जानता कि वह जल बिन्दु कब पतित होगा—कब पिपासातुर चातक में सरसता आयेगी।

शोभा माँ—आप ब्रह्म विद्यारूपा हैं। देहरूप एक ही आधार में जननी और कन्यारूप में लीलामयी मूर्ति धारण करके लीला कर रही हैं। किसके लिए आप इस बार आयी हैं यह मैं नहीं जानता।

क्या मैं जान सकता हूँ कि आपके इस शुभ आविर्भाव के साथ मेरे पूर्ण मंगल लाभ का कोई सम्बन्ध है या नहीं? खाली बातों से यह कठिन हृदय नहीं भींगेगा (द्रवित होगा।)

आशीर्वाद कीजिये, जिससे श्री गुरुचरणों में अचला भक्ति रहे—जिससे उन्हीं की कृपा से आपको पहचान सकूँ एवं आपकी ही कृपा से उनका अनुभव कर सकूँ एवं दोनों ही एक हैं, यह समझ सकूँ।

इस पत्र के साथ एक पत्र दिया है—सुकुमार बाबू को दे दीजियेगा। मेरा स्नेह भक्ति ग्रहण कीजिये। आपकी सर्दी अब कैसी है? ऊषा माँ के घर का पता बताइयेगा। इति—

आपका गुणमुग्ध सस्नेह
श्री गोपीनाथ कविराज

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

विषय-सूची

क्र०	विषय	पृष्ठ सं०
१.	गुरु-प्रसंग	३-१५
२.	साधना-प्रसंग	१९-९८
३.	शान्ति-पथ	१०१-११८
४.	विविध-प्रसंग	१२१-१६२

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

१. गुरु-प्रसंग

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

श्री श्री राधा बिहारी जी

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ॐ श्री श्री श्री गुरवे नमः

१

ॐ हरिः

सन्त आश्रम, वाराणसी
दि० १९.११.७३

नारायणेषु,

प्रिय.....

तुम्हारे पत्र को पाकर खुश हुई। तुम लोग कुशल रहो। अच्छे बनकर सुन्दर जीवन गठित करने के लिए प्रयास करो। गुरु के उपदेशानुसार अपने जीवन को गठित करना ही गुरु की उत्कृष्ट सेवा है यह जानो। गुरुदत्त मन्त्र का सुस्पष्ट रूप में मनन-ध्यान, सर्व जीवों में भगवत् दर्शन लाभ की चेष्टा ही जानो प्रकृत कर्म। गुरुदत्त मन्त्र का पुनः पुनः रटना ही है मंत्र का अभ्यास। यही अभ्यास जब एकात्मता एवं निविड़ता लाभ करेगा तभी मंत्र का प्रकृत जप होगा। जप ठीक से होने पर ही यथार्थ आनन्द के अधिकारी हो सकते हो। तुम लोगों के इस आनन्द के अधिकार को पा लेने पर ही मेरा आनन्द जानो।

स्नेह-आशीष लो। अत्र मंगल।

राधेश्याम।

आशीर्वादिका—माँ

२

ॐ हरिः

सन्त आश्रम, वाराणसी
दि० २५.११.७३

नारायणेषु,

प्रिय.....

तुम्हारे पत्र को पाकर खुश हुई। तुम लोग कुशल तो हो? तुम लोगों की माँ सकुशल हैं। एक बात हर समय याद रखो, तुम लोगों के अच्छे बनकर चलने पर ही तुम लोगों की माँ का अच्छा रहना संभव होगा। गुरु के प्रति जिसकी जितनी अपनत्व-बुद्धि होगी वह उतना अन्याय कम करता है। कारण, वह जानता है कि उसका कर्मफल गुरु को भोग करना पड़ेगा। 'गुरु' शब्द का अर्थ ही है गुरुभार को वहन करना। तुम लोग सहज, सरल, सुन्दर निर्मल होकर उनके पैरों के निर्माल्य होने के उपयुक्त बनो, यही हमारी चेष्टा और इच्छा है। ब्रह्मज्ञ गुरु-परम्परा की धारा तुम लोगों ने पायी है। तुम सभी को अच्छा बनना ही पड़ेगा, इसमें कोई सन्देह

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नहीं है। फिर भी जो जितना अच्छा होकर चलेगा, वह उतना ही आनन्द का अधिकारी होगा यह जानो।

मेरा स्नेह-आशीष समझो। अत्र मंगल।

राधेश्याम।

आशीर्वादिका—माँ

३

ॐ हरिः

सन्त आश्रम, वाराणसी

दि० १८.१.७६

नारायणेषु,

प्रिय.....

तुम लोगों के पत्र पाती रहती हूँ। तुम लोग भगवान् का नाम स्मरण करके उनकी ओर अग्रसर होने की चेष्टा करो। याद रखो, सभी रूपों में वे हैं। वे केवल विशेष देह में ही आबद्ध नहीं हैं। फिर भी हाँ, उन्होंने जिस रूप में जिसके ऊपर कृपा की है, उस रूप में उसके लिए विशेष आदरणीय तो हैं ही। फिर भी गुरु को केवल विशेष देह में ही आबद्ध समझने पर गुरुतत्त्व सम्यक् रूप में प्रकाशित नहीं होता। गुरु सर्वभूतों में सर्वरूपों में विद्यमान हैं ऐसा समझकर उनके सर्वरूपों को ही प्रेम व श्रद्धा करने की चेष्टा करो। फिर देखोगे कि दुनिया में शत्रु-मित्र कहलाने के लिए पृथक् कोई नहीं है। सभी उनके ही विभिन्न रूप हैं। भोग काटने के लिए वे नाना रूपों में तुम्हारे संग लीला कर रहे हैं।

मेरा स्नेह-आशीष जानो। अत्र मंगल।

राधेश्याम।

आशीर्वादिका—माँ

४

ॐ हरिः

सन्त आश्रम, वाराणसी

दि० १.८.७६

नारायणेषु,

प्रिय.....

तुम लोगों की माँ मंगलपूर्वक बनारस आश्रम में आकर पहुँच गयी हैं, रास्ते में कोई असुविधा नहीं हुई। इतने दिन तुम लोगों के पास रहने के बाद अब यहाँ आकर तुम लोगों के लिए खूब कष्ट हो रहा है। कलकत्ता-कल्याणी जाने

CC-0. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

 Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

का उद्देश्य ही है तुम सभी को निकट में पाना। फिर भी याद रखो, केवल स्थूल देह को निकट पा लेने मात्र से गुरु जी को निकट पा लेना नहीं होता। गुरु जी को यथार्थ रूप में जान सकने से ही उनको निकट में पा लेना है। गुरु जी के आदेश-उपदेश ठीक से पालन कर सको, इसके लिए सर्वदा चेष्टा करते रहो। गुरु के आदेश-पालन के द्वारा ही गुरु-संग किया जाता है। तुम सभी भगवत् नाम लेकर भगवान की ओर अग्रसर होते रहो, मैं यही चाहती हूँ। और यदि यह कार्य तुम लोग सुन्दर भाव से कर सको, तभी यह जान लो कि यही मेरा सबसे मन पसन्द कार्य है। इस कार्य के द्वारा कर्म का बन्धन न होकर वह मुक्ति का कारण होता है एवं मेरा भी साहाय्य होता है।

मेरा स्नेह-आशीष जानो। अत्र मंगल।

राधेश्याम।

आशीर्वादिका—माँ

५

ॐ हरिः

सन्त आश्रम, वाराणसी

दि० ३१.८.७७

नारायणेषु,

प्रिय.....

तुम सभी का पत्र पाकर अतीव आनन्दिता हुई। बीच में यह शरीर अस्वस्थ हुआ था, इस समय भी सम्पूर्ण स्वस्थ हुआ है ऐसा नहीं है, फिर भी पूर्व से अधिक स्वस्थ है। मैं अच्छी हूँ। इस शरीर की अस्वस्थता की खबर पाकर तुममें से कोई-कोई देखने आये हो, संभवतः अनेक लोग नहीं आ सके; किन्तु अपनी माँ के लिए तुम सभी की इस चिन्ता एवं उद्वेग ने शारीरिक अस्वस्थता के कष्ट की अपेक्षा मेरे मन को आनन्दित किया है। कारण गुरु के लिए जो चिन्ता है, वह इष्ट को पाने के पथ को प्रशस्त कर देती है। तुम लोगों का ध्यान-चिन्तन, चलना-फिरना सब इष्ट की प्राप्ति के पथ की ओर अग्रसर करता रहे—मैं भी यही चाहती हूँ। अतः यह अस्वस्थता भी मेरे आनन्द की कारण ही है। तुम लोग सुन्दर के चिन्तन से सुन्दर निर्मल होकर उनके चरणों का फूल होने की योग्यता लाभ करो, मैं यही इच्छा करती हूँ।

तुम सभी की इच्छा से इस शरीर की चिकित्सा-सेवा शुश्रुषा सभी ठीक चल रहे हैं। शरीर रहने पर लड़के-लड़कियों को सुन्दर-निर्मल करने के लिए कुछ तो भोगना ही पड़ेगा। किन्तु वह हमारे दुःख का कारण न होकर आनन्द का

CC-0. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ही कारण होता है। कारण, इस भोग के द्वारा तुम लोगों का भोग कम-ज्यादा क्षीण होता है। इस शरीर की स्वस्थता की कामना के लिए तो तुम्हीं लोग हो, मुझे तो कुछ चिन्ता नहीं है।

तुम लोग मेरा स्नेहाशीष लो। अत्र मंगल।

राधेश्याम।

आशीर्वादिका—माँ

६

ॐ हरिः

सन्त आश्रम, वाराणसी

दि० १०.२.८०

नारायणेषु,

प्रिय.....

तुम लोगों के पत्र पाकर सुखी हुई। इसी बीच एकाएक गत २३.१.८० तारीख को हरिद्वार जाना हुआ। पुनः गत २.२.८० तारीख को वाराणसी वापस आना हुआ। हरिद्वार रहने के समय तुम लोगों की माँ अच्छी ही थीं एवं गुरु जी की कृपा से किसी प्रकार की असुविधा नहीं हुई। वहाँ हम लोगों को ठण्डा भी अधिक नहीं लगा। मेरे लिए तो बनारस की तरह ही शीत लगा।

माँ गङ्गा की स्नेहमय गोद के ऊपर ही 'गुरुधाम' नाम का एक वास मिल गया था एवं उनकी स्नेहछाया में सभी खूब आनन्द से थे। सर्व कार्यों में गुरु के ऊपर ही निर्भर रहना चाहिए—वे दयामय कृपालु हैं, इसे हम न भूलें। आघात मिलने पर भी उसे हम प्रयोजनवश, उनका स्नेहयुक्त शासन ही स्मरण करें।

पत्रोत्तर में तुम लोगों के मंगल की इच्छा करती हूँ। आशा करती हूँ कि इस बीच तुम लोगों को उत्सव का पत्र मिल गया होगा। अब पत्र आने पर तुम लोगों में से कौन-कौन आ रहे हो, यह जानने के लिए उत्कण्ठित रहती हूँ।

मेरा स्नेहाशीष लो। अत्र मंगल।

राधेश्याम।

आशीर्वादिका—माँ

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

 Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

७

ॐ हरिः

सन्त आश्रम, वाराणसी

नारायणेषु,

प्रिय.....

तुम्हारे पत्र को पाकर सुखी हुई। मेरा जो सुर है, तुम लोगों का भी वही सुर होना चाहिए। वास्तविक जगत में गुरु जी ही सबके मूल एवं उत्स हैं, यह जानो। उनका मधुर स्पर्श, मधुर संग, प्रति मुहूर्त अनुभव कर रही हूँ, यह न होने पर एक मुहूर्त भी बच नहीं पाती। तुम लोग भी उनके मधुर स्पर्श एवं संग के लिए लालायित हो जाओ, इसीलिए तुम लोगों के लिए बीच-बीच में यह भाव व्यक्त किया जाता है। चिन्ता तुम लोगों की भी नहीं है—किन्तु उनके साथ जिससे भाव उत्पन्न हो इसके लिए ही भाव की अभिव्यक्ति है। तुम लोगों को भी सकल-भाव भावमय के चरणों में ही समर्पित करने की चेष्टा करनी चाहिए। बाबा का कल्याणमय हस्त तुम लोगों को घेरकर ही है, इसलिए अपनी चेष्टा के द्वारा उसका अनुभव करने की चेष्टा करो। **जिस कुल में तुम लोगों ने जन्मग्रहण किया है, वह ऋषि कुल है। इसलिए हर समय लक्ष्य रखो कि तुम लोगों के किसी कार्य के द्वारा ऋषि कुल की अमर्यादा न हो।** प्रतिनियत नाम का स्मरण करके चलो।

मेरा स्नेहाशीष जानो। अत्र मंगल।

राधेश्याम।

आशीर्वादिका—माँ

८

ॐ हरिः

सन्त आश्रम, वाराणसी

दि० १४.३.६३

नारायणेषु,

प्रिय.....

तुम्हारा पत्र पाकर सुखी हुई।... गुरुदेव के सर्वव्यापी होते हुए भी स्थूलतः उनका स्थूल संग करने की चेष्टा करना ही उचित है। **शारीरिक, मानसिक, आर्थिक—सर्वप्रकार से गुरुसेवा करना उचित है।** बाबा जी महाराज के जीवन चरित को पढ़कर देखो, वे प्रति छुट्टी में ही गुरु संग करने के लिए वृन्दावन चले जाते थे। गुरु सर्वव्यापी हैं, यह उनसे अधिक और कोई जानता है, यह मैं नहीं जानती। गुरु सर्वव्यापी हैं—यह जैसे शाश्वत सत्य है, गुरु का स्थूल संग करना भी प्रयोजनीय

CC-0. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

है, यह भी शाश्वत सत्य जानो। पैसा खर्च करके, नाना प्रकार के शारीरिक कष्ट करके आकर उनका संग लाभ करना—इससे बढ़कर आनन्द एवं सार्थकता और क्या है। अर्थ एवं शरीर सभी कुछ तो उनका ही है दान। उनकी दी वस्तु उनको अर्घ्य देनी होगी इसमें आश्चर्य क्या है? नाना लोगों की नाना बातों से विचलित मत होना। अभीष्ट पथ पर चलने की चेष्टा करो।.....

मेरा स्नेहाशीष लो। अत्र मंगल।

राधेश्याम।

आशीर्वादिका—माँ

९

ॐ हरिः

सन्त आश्रम, वाराणसी।

नारायणेषु,

प्रिय....

तुम्हारे पत्र को पाकर सुखी हुई।... केवल दैहिक रोगमुक्ति के लिए ही कोई सद्गुरु तुमको दीक्षा देंगे, ऐसा मैं नहीं समझती। उनका कर्म ही है पारमार्थिक कल्याण करना। अनेक समय उनकी कृपा से अनेक रोग दूर हो जाते हैं यह बात अलग है, लेकिन केवल रोग दूर करने के लिए ही दीक्षा नहीं देते हैं, भगवत् पथ पर अग्रसर होने के लिए ऊँचे-नीचे अनेक मार्गों से चलना पड़ता है—फिर भी कौन-सा साधक के पक्ष में कल्याणजनक है यह साधारण मनुष्य नहीं समझ सकता। जो भी हो सभी कार्यों में भगवान् के ऊपर निर्भरशील होने की चेष्टा करो। तुम्हारे पक्ष में जो कल्याणजनक है, वे उसका ही विधान करेंगे—यही विश्वास मन में रखना। वे परम कल्याणमय एवं परम करुणामय हैं—यही जानो।

...मेरा आशीष लो। अत्र मंगल।

राधेश्याम।

आशीर्वादिका—माँ

१०

ॐ हरिः

सन्त आश्रम, वाराणसी

नारायणेषु,

प्रिय.....

आपका पत्र पाकर सुखी हुई।... गुरु भक्त हममें से कोई भी नहीं है। किन्तु गुरु कृपा प्राप्त हम हैं—इस विषय में कोई सन्देह नहीं है। इस विषय

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

 Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

में हम जयी हैं—गुरु हम लोगों को ग्रहण किये हैं—भक्त, अभक्त बनाने का दायित्व उनका है। जिस दायित्व का भार मेरे ऊपर नहीं है, उसको लेकर चिन्ता करने से लाभ नहीं है—जिससे लाभवान् हो सकूँ, उस गुरुपद का चिन्तन करता रहूँ। बाबा के आदेश का पालन करते रहना ही हम लोगों का कार्य है, फलाफल का सम्पूर्ण भार उनके ऊपर है। कोई चिन्ता न करके गुरु के आदेश का पालन ही जीवन का आवश्यक कर्त्तव्य जानकर उसका पालन करने के लिए जीवन में प्रण कीजिये। बाबा का आशीर्वाद ही पाथेय जानें। हमारे बाबा (गुरुजी) हैं, कोई भय नहीं है। आपकी जब भी इच्छा हो, जितने की भी इच्छा हो, सन्त आश्रम में अर्थ भेज सकते हैं। मैं जब बाबा को कुछ देने की अनुमति नहीं लेती हूँ। आप भी मेरी अनुमति क्यों लेते हैं।

अत्र मंगल।

राधेश्याम।

आशीर्वादिका—माँ

११

ॐ हरिः

सन्त आश्रम, वाराणसी

नारायणेषु,

प्रिय.....

तुम्हारा पत्र पाकर सुखी हुई।... किसी भी अवस्था में भय मत करना। यह समझो कि मंगलमय गुरु शक्ति हर समय तुम लोगों की रक्षा कर रही है। याद रखो, अस्वस्थ अवस्था में मन को चिन्ता मुक्त करके एकाग्र करने की चेष्टा करो। कारण, उस समय अन्यान्य कामों का झमेला कम रहता है। मन को हर समय उनकी कृपा के लिए प्रस्तुत रखो। मन को हर समय इस तरह प्रस्तुत रखो जिससे कि किसी समय उनका सन्देश आने पर उसको पहचान सको। जिससे पीछे कोई पछतावा न रहे।

...स्नेहाशीष लो। अत्र मंगल।

राधेश्याम।

आशीर्वादिका—माँ

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

 Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

१२

ॐ हरिः

सन्त आश्रम, वाराणसी

नारायणेषु,

प्रिय.....

तुम्हारा पत्र पाकर सुखी हुई।... ठीक-ठीक इसी प्रकार यदि गुरु का आदेश मानकर चल सको, तब जीवन में अनेक दुर्भोगों से बच सकते हो। उनके आदेश को मानकर चलना ही यथार्थ सेवक का लक्षण जानो। यदि उनका आदेश मानकर चल सको, तब देखोगे कि वे ही तुम्हारा बोझा वहन कर रहे हैं। हर समय ही निर्भर करके चलने की चेष्टा करो।... अपना स्नेहाशीष ज्ञापित करती हूँ।

अत्र मंगल।

राधेश्याम।

आशीर्वादिका—माँ

१३

ॐ हरिः

सन्त आश्रम, वाराणसी

१४.३.६७

नारायणेषु,

प्रिय.....

तुम्हारा पत्र पाकर सुखी हुई।... गुरु प्रदत्त नाम निष्ठा के साथ जपते रहो। गुरु ही सबसे अधिक अपने हैं यह जानो। उनसे अधिक अपना इस पृथिवी पर अन्य कोई नहीं है। गुरु के प्रति जितनी अपनत्व बुद्धि जगेगी, गुरुतत्त्व उतना ही प्रकाशित होगा। जिस संग के द्वारा गुरु के प्रति श्रद्धा, विश्वास, भक्ति बढ़े, वही सत्संग है; और जिस संग के द्वारा उनके प्रति निष्ठा कम हो जाय, वही असत्संग है। इसलिए हर समय सत्संग करने की चेष्टा करो। मानसिक सत्-चिन्तन के द्वारा भी सत्संग होता है। प्रत्येक कार्य, प्रत्येक विचार जिससे उनकी ओर अभिमुख हो, इस ओर लक्ष्य रखो।... मेरा स्नेहाशीष लो।

अत्र मंगल।

राधेश्याम।

आशीर्वादिका—माँ

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

 Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

१४

ॐ हरिः

सन्त आश्रम, वाराणसी

नारायणेषु,

प्रिय.....

तुम्हारा पत्र पाकर सुखी हुई।... तुम मानव-सेवा करने की इच्छा कर रहे हो, यह तो खूब आनन्द की बात है। तुम अपने साध्यानुयायी इसको रूप देने की चेष्टा करो। तुम अपने साध्यानुयायी प्रतिदिन एक या दो भिखारी को कुछ न कुछ देने की चेष्टा करो। इसके अलावा बीच-बीच में साध्यानुसार सत्कार्य में कुछ दान करो। गुरु एवं आश्रम सेवा मानव जीवन के अंग जानो। यह साधन पथ की प्रधान सम्पद है। अर्थ के द्वारा सेवा ही एकमात्र सेवा नहीं है—मन के द्वारा सेवा ही यथार्थ सेवा जानो। जिससे मन प्राण उनसे युक्त रहें इस ओर लक्ष्य रखो। ध्यान, जप तुम अपने साध्यानुयायी करते रहो। जीव और कितना साधन भजन कर सकता है? उसका साधन तो गुरु जी ही करते हैं। फिर भी यथाशक्ति मनुष्य को चेष्टा करते रहना चाहिए। चेष्टा सेतु के ऊपर ही उनका आशीष वर्षित होता है। जिससे ध्यान स्पष्ट हो और मंत्र की ध्वनि सुस्पष्ट सुन सको—इस ओर लक्ष्य रखो। जप के समय तुम्हारा जो भाव आये उसको हटाने की चेष्टा मत करो, वरन् सबको बोलकर रखो कि उस समय कोई तुम्हें बाधा न डाले।

...मेरा स्नेहाशीष लो। अत्र मंगल।

राधेश्याम।

आशीर्वादिका—माँ

१५

ॐ हरिः

सन्त आश्रम, वाराणसी

३०.९.९४

नारायणेषु,

प्रिय.....

तुम्हारा पत्र पाकर सुखी हुई। तुम्हारा पत्र कल ही पाया है। गुरुदेव के सम्बन्ध में सारी बातें अवगत हुईं। गुरु जी तो गुरु जी ही हैं। तुमने लिखा है कि विगत ५० वर्ष से तुमने उनका कोई निर्देश नहीं पाया—मेरे मतानुसार तुम जो कुछ करते आ रहे हो, सभी अलक्षित भाव से उनका ही निर्देश है। तुमने लिखा है, तुमने उनका कोई संयोग नहीं पाया—तुमने जो सारे जीवन महापुरुष का संग

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

किया है, देव-देवी का दर्शन पाया है, यह क्या उनका ही संयोग नहीं है? गुरु, नाम, नामी, सभी एक हैं—यही सत्य है। इन ५० वर्षों में उनके नाना रूपों का नाना दर्शन क्या नहीं पाया है? मैं तो कहती हूँ कि गुरु के साथ जो आत्मिक सम्पर्क है, उसे तो तुम सारे जीवन से ही पाते आ रहे हो। ...तुमने लिखा है, 'तुम माँ की कृपा धन्य सन्तान हो'—इस विषय में कोई सन्देह नहीं है। फिर भी तुम गुरु की भी कृपाधन्य सन्तान हो इसलिए माँ की भी कृपाधन्य हो—यह तुमको मानना ही पड़ेगा।... मैं तो देख रही हूँ, वे ही तुम्हें शतरूपों में वेष्टन किये हुए हैं एवं कृपा करते रहे हैं। बहु तीर्थ दर्शन, स्वप्न में बहु देवदेवी दर्शन, ब्रह्ममंत्र लाभ—सभी तो उनकी कृपा का ही परिचय है। इसलिए तुम तो दुर्भागी नहीं हो—तुम महा सौभाग्यवान् हो, क्योंकि गुरुकृपा अजस्त्र धारा में तुम्हारे निकट पहुँच रही है।... गुरु तो किसी विशेष देह में आबद्ध नहीं हैं—नाना रूपों में नाना प्रकार से उनकी ही कृपा पा रहे हो। जो कुछ इस जीवन में लाभ किया है सब उनकी ही कृपा है यह जान लो। इसलिए गत जन्म में कौन तुम्हारे गुरु थे, क्या तुम्हारा नाम था—इससे तो कोई प्रयोजन नहीं है! अपने को 'गुरुकृपाधन्य'... जानो। गुरु तो बहुरूपों में तुम्हें संग देते आ रहे हैं—इसलिए गुरु संग नहीं हुआ, यह बात ठीक नहीं है। मैंने तो तुम्हें लिखा है—गतजन्म में तुम्हारा आधार अच्छा था। इसलिए ९ वर्ष की अवस्था में गुरुकृपा का लाभ किया है। अब भी गुरुकृपाजड़ित होकर ही हो।

तुम्हारा प्रश्न—प्रारब्ध कौन मनुष्य भोग करता है?

उत्तर —भगवान् स्वयं ही नाना रूपों में सृष्ट हुए हैं। इसलिए प्रारब्ध का भोग कहो या खेल बोलो—वे ही भोग कर रहे हैं। हम लोगों का 'अहं' ही कष्ट का कारण है। 'मेरा', 'मैं' उनमें लीन हो जाने पर देखोगे केवल वे ही हैं। और 'मेरा' 'मैं' नहीं—उनके 'तुम' होकर तुम्हीं हो।

तुम मेरी चिट्ठी को पढ़कर व्यथित मत होना। गुरुकृपा नहीं मिली ऐसा कहने से इतनी बात लिखी है। माँ के अधिकार से ही सब बातें लिखी हैं। इसलिए दु:खित मत होना। कारण, गुरुकृपा से भरा ही है तुम्हारा जीवन। साधु महापुरुष कहो और देवदेवी कहो, सभी तो गुरु के ही रूप हैं। तुमने जो इतना साधू संग किया है, देवदेवी की कृपा पायी है, वह भी बहुरूपों में गुरु की ही कृपा है, इसे मत भूलो। जीवन में जो कुछ पाया है यह जैसे गुरुकृपा है—जो कुछ नहीं मिला है वह भी गुरुकृपा है। आपाततः दृष्टि से जो नहीं मिला है वह भी भविष्यत् में मंगल के लिए उनकी कृपा का ही परिचय है। कृपामय हमारे वास्तविक प्रयोजन को समझकर जो कुछ देने योग्य है उसे देते हैं—जो देने योग्य नहीं है उसे नहीं देते।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

 Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वे अदृश्य रूप में क्यों खेल कर रहे हैं, उसका प्रयोजन वे ही जानते हैं। वे कभी भी कोई कार्य अप्रयोजन से नहीं करते यह बात मन एवं प्राण से विश्वास करो। जो कुछ करते हैं, जीव के कल्याण के लिए ही करते हैं। इसलिए उनका अदृश्य रूप में खेल भी तुम कृपा ही मान लो। मुझे तो ऐसा लगता है, वे ही तुम्हारे ऊपर बहुरूप में कृपा कर रहे हैं यही समझा रहे हैं। कृपामय किस तरह कृपा करते हैं साधारण बुद्धि के द्वारा नहीं समझा जा सकता—समझने की कोशिश मत करना। इसलिए यही समझने की चेष्टा करो—गुरु बड़े कृपामय हैं। मैं तो देखती हूँ, मेरे बेटे का सारा जीवन ही गुरुकृपा सान्निध्य से भरा है।

(आज कुछ और लिखा नहीं। पत्र में सब बातें हर समय विस्तार रूप से समझाई नहीं जा सकतीं) मेरा स्नेहाशीष लो। अत्र मंगल।

राधेश्याम।

आशीर्वादिका—माँ

१६

ॐ हरिः

सन्त आश्रम, वाराणसी
२६.९.९३

नारायणेषु,

प्रिय.....

तुम लोगों के पत्र पाकर खुशी हुई। भगवत् कृपा से तुम लोग सब भगवत्मुखी होकर उनकी ओर अग्रसर होते रहो, यही इच्छा करती हूँ। श्री भगवान् तथा गुरु जी ने हम लोगों के आगे बढ़ने के लिए कितनी प्रकार से कृपा करके व्यवस्था की हुई है। उनकी कृपा का अंत नहीं है। किन्तु हम लोग अपनी अनन्त कर्मराशि के कारण ही उनकी ओर अग्रसर नहीं हो पाते। यह देखो श्री श्री दुर्गा माँ आगमनी उत्सव आ रहा है—यह सात्विक के अन्दर से रजः का खेल है—नाना प्रकार के कोलाहलपूर्ण आनन्द उत्साह के माध्यम से उनके ही स्मरण-मनन की व्यवस्था किये हुए हैं—सात्विक आनन्द के माध्यम से कर्मराशि को शेष करके उनकी ओर अग्रसर होने का प्रशस्त पथ है। किन्तु उनकी इतनी करुणा होते हुए भी हम लोग पथ भूलकर विपथ में चले जाते हैं—इसका ही नाम है प्रारब्ध कर्मफल। हम लोगों का अहं हर प्रकार से उनकी ओर अग्रसर होने में विघ्नकारी है—इस अहं का विसर्जन देकर सर्वतोभाव से उनका दास या दासी होना पड़ेगा—यही तो हमारी साधना होगी।...तुम लोगों में से कब कौन आकर माँ की गोद भरेगा, इसी प्रतीक्षा में हूँ। जो नहीं आ सके, उनके कल्याण के लिए भी माँ का मन आशीर्वाद वहन

CC-0. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

करके समस्त आकाश एवं वायुमण्डल में फैल जायेगा, जिसकी रेणु जाकर उनके बेटे-बेटियों के मन एवं सर्वाङ्ग को व्याप्त करेगी—यही तो आज तुम्हारी माँ का आशीर्वाद है। सर्वावस्थाओं में सकुशल रहने की चेष्टा करो। अत्र मंगल।

राधेश्याम।

आशीर्वादिका—माँ

१७

ॐ हरिः

सन्त आश्रम, वाराणसी

नारायणेषु,

प्रिय.....

तुम्हारा पत्र पाकर सुखी हुई।... मैं सोचती हूँ कि तुम प्रथम गुरु के निकट से जो मंत्र पाये हो, उसी को निष्ठापूर्वक जपते रहो। बार-बार गुरु को बदलने से कोई काम नहीं होता। इन समस्त दूसरों की बातों को योगविघ्न जानो। सत्संग उसी को कहते हैं जो सङ्ग गुरु के प्रति भक्ति विश्वास बढ़ाता है। जिस संग द्वारा गुरु के प्रति अविश्वास उत्पन्न हो, वह संग न करना ही अच्छा है। हर समय गुरु के प्रति भक्ति विश्वास लेकर पथ पर चलो। मन ही मन नाम जपते रहो। नाम के द्वारा ही यथार्थ मंगल होता है, यह जानो।... मेरा स्नेहाशीष लो। अत्र मंगल।

राधेश्याम।

आशीर्वादिका—माँ

१८

ॐ हरिः

सन्त आश्रम, वाराणसी

नारायणेषु,

प्रिय.....

तुम्हारे पत्र को पाकर सुखी हुई।... साधन जीवन में गुरु वाक्य का पालन करना चाहिए एवं गुरु के प्रदर्शित पथ का ही अवलम्बन करना चाहिए। मन स्थिर करके चलना होगा। मन चंचल करने से कुछ भी नहीं होता। जहाँ भी जाओ, गुरु रूपी भगवान् की बात सुनकर चलना होगा। कितना ही बड़ा घात-प्रतिघात क्यों न आये, सोचो कि गुरु तुम्हारी परीक्षा कर रहे हैं। किसी भी अवस्था में विचलित मत होना। गुरु जी जो साधन एवं इष्ट दिये हैं, उसी को मानकर चलना होगा। याद रखो साधक का इष्ट-अनिष्ट गुरु जी ही अच्छी तरह समझते हैं। गुरु का आदेश अच्छा लगे या न लगे निर्विचार पूर्वक मानकर चलना होगा। गुरु के ऊपर विचार

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नहीं चलता। वे जब जिस कार्य का भार देते हैं उसको निष्ठापूर्वक करते रहने की चेष्टा करो। ठाकुर जी की सेवा-पूजा भी उनके निर्देशित नियम से ही करनी चाहिए। हर समय याद रखो—'मनमुखी गंवार, भगवत्मुखी प्यार।' अपना विचार-अविचार, अच्छा-बुरा सब विसर्जन देकर गुरुमुखी होने के लिए यत्नशील बनो।... मेरा स्नेहाशीष जानो। अत्र मंगल।

राधेश्याम।

आशीर्वादिका—माँ

१९

ॐ हरिः

सन्त आश्रम, वाराणसी

नारायणेषु,

प्रिय.....

तुम्हारा पत्र पाकर सुखी हुई।... तुम दुःख मत करो। तुम अपनी सामर्थ्यानुसार तो गुरु सेवा करने की चेष्टा कर रहे हो। याद रखो, केवल अर्थ के द्वारा ही गुरु सेवा नहीं होती—मानसिक सेवा भी बहुत बड़ी वस्तु है। तुम हर समय गुरु की मानसिक सेवा और संग करने की चेष्टा करो। गुरु की प्रसन्नता ही एकमात्र काम्य जानो। यह अर्थ द्वारा लाभ नहीं की जा सकती। सेवा के माध्यम से ही गुरु की प्रसन्नता लाभ की जाती है। तुम सांसारिक कार्यों में निर्लिप्त रहने की चेष्टा करो। याद रखो, तुम्हारा जो प्राप्य है वह वे तुम्हें देंगे ही। ...मेरा स्नेहाशीष लो।

अत्र मंगल।

राधेश्याम।

आशीर्वादिका—माँ

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

'श्री श्री माँ की वाणी'

'नाम-स्तुति-वन्दना करने के समय भी जब हम लोगों के बीच चलता है—और एक स्त्रोत, वह है व्यर्थ की बातों का स्त्रोत; तो व्यर्थ की बातों के समय हमारे अन्दर और एक स्त्रोत क्यों नहीं चल सकता? जो है नाम का स्त्रोत।'

❀

'अनुभूति के भीतर से उनको जानना ही यथार्थ जानना है—बुद्धि के माध्यम से उनको सचमुच नहीं जाना जा सकता। इसीलिए उससे मन तृप्त नहीं होता।'

❀

'हम लोगों का प्रधान बल है—गुरुबल। यह गुरुबल ही हमारे पीछे है। उस बल से हम लोग उनके पास पहुँच सकते हैं—इस विषय में कोई सन्देह नहीं है।'

❀

'जहाँ आनन्द है, वही मैं हूँ।'

❀

'मैं तुम्हारे लिए ही हूँ।'

❀

'सब कार्य प्रभु सेवा है।'

❀

'मैं सबमें हूँ।'

❀ ❀ ❀

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

❀ ❀ ❀ ❀ ❀

२. साधना प्रसंग

❀ ❀ ❀ ❀ ❀

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

श्री श्री १०८ शोभा माता जी

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

२०

ॐ हरिः

सन्त आश्रम, वाराणसी

नारायणेषु,

प्रिय.....

तुम्हारा पत्र पाकर सुखी हुई।... जितना संभव हो तुम जप करने की चेष्टा करो। बाकी तुम्हारा जप गुरु जी ही करेंगे। तुम लोग संसारी जीव हो और कितना करोगे? तुम्हारा यह गुरु-भार लिया है, इसीलिए तो वे गुरु हुए हैं। फिर भी **सांसारिक कार्य कोई भी क्यों न करो, भगवान् का कार्य कर रहे हो, यह बुद्धि लेकर ही करने की चेष्टा करो। ऐसा होने पर देखोगे कि कर्म बन्धन की सृष्टि न करके मुक्ति की ओर ही ले जायेगा।** फिर भी सुबह एवं रात में जब भी समय पाओ, तब कम से कम ५ मिनट आसन पर बैठने की चेष्टा करो। दोनों समय कम से कम १०८ बार जप करने की चेष्टा करो। अधिक होने से तो कोई बात ही नहीं है।

मेरा स्नेहाशीष लो। अत्र मंगल।

राधेश्याम।

आशीर्वादिका—माँ

२१

ॐ हरिः

सन्त आश्रम, वाराणसी

नारायणेषु,

प्रिय.....

तुम्हारे पत्र को पाकर सुखी हुई। तुम्हारे शरीर के विषय में जाना। रात को नींद न आने पर नाम लेते रहो। नाम जपते-जपते देखोगे नींद आ रही है। श्री गुरु का ध्यान करना। नाम और ध्यान करते-करते मन शान्त हो जाता है, मन शान्त होने से ही नींद आ जाती है। **अब तो उम्र हो गई है, अब व्यर्थ बात, व्यर्थ चिन्ता न करके गुरु का ध्यान, गुरु का उपदेश एवं गुरु का आचार-व्यवहार स्मरण करने की चेष्टा करो।** उनकी कोई पुस्तक प्रत्येक दिन पढ़ो अथवा स्वयं न पढ़ सकने पर दूसरे से पढ़वाकर सुनने की चेष्टा करो। गुरु वाक्य ही मंत्र है ऐसा जानो। इस जीवन में और कुछ भी साथ नहीं जायेगा, एकमात्र गुरु ही साथी होंगे। इसलिए उनको ही जीवन की लाठी (अवलंबन) समझकर पथ पर चलो।

मेरा स्नेहाशीष जानो। अत्र मंगल।

राधेश्याम।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

आशीर्वादिका—माँ

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

२२

ॐ हरिः

सन्त आश्रम, वाराणसी
दि० २.७.५४

नारायणेषु,

प्रिय.....

तुम्हारे पत्र को पाकर खूब सुखी हुई। किन्तु तुम्हारी अस्वस्थता की खबर से अत्यधिक दुःखित हुई। अब कैसे हो?

१. मंत्र जप करते-करते नाना प्रकार की ध्वनि हो सकती है। किसकी कैसे होगी, ठीक नहीं है। मैंने लिखा था जप की ध्वनि अर्थात् जप ठीक तरह हो रहा है यह तब समझा जायेगा, जब जप का प्रत्येक शब्द कान में सुस्पष्ट रूप से सुना जाय। तुलसी माला से जप ही प्रशस्त है। अधिक जप होने पर कोई आपत्ति नहीं है। साधारणतः अन्ततः कम से कम हजार जप करने की चेष्टा करो। यदि न कर सको तो दोष नहीं होगा। जप करते-करते नाना प्रकार की अनुभूति होती है। तुम्हारी यह अनुभूति प्राणायाम की क्रिया है। भीतर अपने आप जो प्राणायाम हो रहा है, इसके द्वारा वही समझा जाता है। तुम जप करते रहो। अपने आप जो होने वाला है हो जायेगा। तुम केवल द्रष्टा की तरह देखते रहो। देखो अहङ्कार न आये। जो देख रहे हो वह कुछ भी नहीं है, अभी बहुत है।

२. तुम्हारा दर्शन चमत्कारपूर्ण है एवं खाने के लिए न दे सकने का दुःख होने से ही वे इस तरह ग्रहण करके कृपा प्रकाश किये हैं। साथ में बलराम देव की मूर्ति देखते हो। गीतापाठ के समय भी नाना मूर्ति देखी जाती है यह अच्छा ही है। जानबूझकर सब स्पष्टभाव में नहीं बताऊँगी, इससे अहङ्कार आ सकता है। जितना जप करोगे, ये सब भाव वृद्ध होंगे। सिहरन (कंपन) इत्यादि कुलकुण्डलिनी शक्ति का प्रकाश है। सिर के ऊपर शब्द या दबाव अनुभव होना सहस्रार-चक्र का खेल है। मस्तक के ऊपर शिशुओं के माथे पर जो जगह टिक्-टिक् करती है वहाँ सहस्र दल पद्म है। उसको सहस्रार कहते हैं।

मेरा स्नेहाशीष लो। अत्र मंगल। तुम लोगों के मंगल की इच्छा करती हूँ।

इति—

आशीर्वादिका—शोभा

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

 Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

२३

ॐ हरिः

सन्त आश्रम, वाराणसी
दि० ९.५.६०

नारायणेषु,

प्रिय.....

तुम्हारा पत्र मिला। तुम्हारा पत्र पाने से बहुत अच्छा लगता है।... नीलमणि अच्छे हैं यह जानने से बहुत अच्छा लग रहा है। उनकी सेवा में जितने मग्न होओगे, उतने ही आनन्दसागर में डुबकी लगा सकोगे। आनन्दसागर में डुबकी लगाने से ही आनन्द की खान पा जाओगे, जिसके मालिक हमारे नीलमणि हैं। नीलमणि तो विश्वव्यापी हैं, सर्वत्र ओतप्रोत हैं; सबसे जुड़े हुए हैं। **नामरूपी शलाका के द्वारा ज्ञान चक्षु को ही उन्मीलित करने की चेष्टा करो।** चेष्टा से मेरा आशीर्वाद प्राप्त होगा।

यहाँ धीरे-धीरे फिर गर्मी पड़ रही है। आश्रम में सभी अच्छे हैं। तुम लोग अपनी खबर देना। अच्छे रहो। मैं अच्छी ही हूँ।

स्नेह-आशीष लो।

इति—

आशीर्वादिका—माँ

२४

ॐ हरिः

सन्त आश्रम, वाराणसी
रास पूर्णिमा ७३

नारायणेषु,

प्रिय.....

तुम्हारा पत्र मिला। आज का दिन तुम्हारे नूतन यात्रापथ को सूचित कर रहा है। नूतन यात्रापथ तुम्हें नूतन जीवन का दान करके सार्थक-सुन्दर-निर्मल कर दे, यही परम पिता के निकट प्रार्थना है। **जीवन-मार्ग में कितने ही बाधा-विघ्न क्यों न आयें, नाम जपते हुए विपदजयी होने की चेष्टा करो।** यह पथ असिधारा है। इसीलिए कहते हैं चलने के मार्ग में विराम मत लो। क्लान्त होने पर माँ की गोद में विश्राम लेना। नाम के द्वारा ही गन्तव्य मार्ग सुन्दर सुगम होता है। **एक-एक करके नाम लेना और स्वयं को होमाग्नि में उत्सर्ग कर रहे हो ऐसा सोचना। प्रतिदिन इस तरह मानस-होम करना।** सब कुछ अपनी इच्छानुसार नहीं

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

होगा। जो होगा उसे मनोनुकूल करने की चेष्टा करना। जितना आलस्य वर्जन करोगे, जितना आश्रम में श्रमदान कर सकोगे, उतना ही आश्रम से अपनापन पा सकोगे। देना जानने से ही पाया जाता है यह जानो। आश्रम के प्रत्येक सामान को अपना समझकर प्यार करो—फिर भी तुम उनके मालिक नहीं हो, उनके चाकर मात्र हो—यह मनोभाव रखो। इससे मोह नहीं आयेगा। चाकर-बुद्धि से चल सकने पर ही अहमिका आकर पथरोध नहीं करेगी। **'अहं' को साधन का सबसे बड़ा अन्तराय समझो।** 'अहं' का सर्वप्रथम विनाश करना होगा। एकमात्र नामरूप—अस्त्रोपचार से उसको विनष्ट किया जा सकता है। नाम ही मानव को अन्धकार से आलोक की ओर ले जाता है। नाम तुम्हारे अन्तर में है, तुम्हें और भय क्या? निर्भय होकर नाम लेते हुए पथ पर चलो। आज के दिन अपनी माँ का स्नेह-आशीष लो।

अत्र मंगल।

राधेश्याम।

आशीर्वादिका—माँ

२५

ॐ हरिः

सन्त आश्रम, वाराणसी

दि० १.१.६४

नारायणेषु,

प्रिय.....

तुम्हारा पत्र पाकर सुखी हुई।... तुम्हारा आना नहीं हुआ, मन खराब मत करो। हर समय सुयोग-सुविधा एक जैसी नहीं होती। **मन ही असली वस्तु है। इसको हर समय मेरे पास रखने की चेष्टा करो, बस।** यही सबसे बड़ी साधना है। स्थूल प्राप्ति का विच्छेद है, किन्तु मन से प्राप्ति का विच्छेद नहीं है। तुम लोग बाबा (गुरुजी) की सेवा-पूजा के माध्यम से अभीष्ट पथ पर अग्रसर होने के लिए चेष्टा करते रहो। यही तो परम प्राप्ति है।

मेरा स्नेह-आशीष लो। अत्र मंगल।

राधेश्याम।

आशीर्वादिका—माँ

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

 Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

२६

ॐ हरिः

सन्त आश्रम, वाराणसी
दि० २३.३.६७

नारायणेषु,

प्रिय.....

तुम्हारे पत्र को पाकर सुखी हुई।... दो सुन्दर घटनाएँ जानकर आनन्दिता हुई। यह तुम्हारे प्रति उनकी विशेष कृपा जानो। जितना स्वयं को उनके चरणों में उत्सर्ग कर सकोगे, उतनी ही उनकी कृपा की उपलब्धि कर सकोगे। स्वयं को उनके चरणों में समर्पित कर दो। याद रखो, हम लोग वृक्ष के फूल को तोड़कर जो चढ़ाते हैं, यह फूल से पूजा प्रशस्त नहीं है, अपने को फूल करके उसी रूप में ढालकर जो पूजा की जाती है, वही पूजा प्रशस्त है। मंत्र के प्रत्येक शब्द का अर्थ यही है—अपने को उनके चरणों में उत्सर्ग करना। उनके चरणों में स्वयं की आहुति देने की चेष्टा करो।... जो नाम पाया है या जो वाणी पाओ, उसको मस्तक पर रखकर भगवत् पथ पर अग्रसर होने की चेष्टा करो। स्वयं की चेष्टा रहने पर भगवत् आशीर्वाद की उपलब्धि कर सकोगे।... भगवत् नाम लेकर पथ पर चलो। यही शान्ति एवं आनन्द पाने का पथ जानो। सबसे मिलकर आनन्द से रहने की चेष्टा करो।

मेरा स्नेहाशीष लो। अत्र मंगल।

राधेश्याम।

आशीर्वादिका—माँ

२७

ॐ हरिः

सन्त आश्रम, वाराणसी
बँगला नव वर्ष, १३७७

नारायणेषु,

प्रिय.....

जानी हुई बात ही फिर से बोल रही हूँ। जीवन के गन्तव्य पथ पर एक-एक करके अनेक व्यक्ति अनेक वर्ष व्यतीत करके आगे बढ़ रहे हैं, किन्तु प्रकृत पथ में भगवान् के निकट कौन कितना आगे बढ़ रहा है, उसका हिसाब किया है क्या? आयु की अभिज्ञता है, किन्तु अनुभव का अभिज्ञान हो रहा है क्या? उनके लिए नूतन वर्ष में नूतन रूप में भजन आरम्भ करो। नूतन वर्ष में निम्नलिखित कुछ बातों को पालन करने का व्रत लो।

CC-0. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

(१) परनिन्दा-परचर्चा मत करो।
(२) आत्मानुशीलन के लिए व्रती हो जाओ।
(३) परदोष मत देखो।
(४) आत्मप्रशंसा मत सुनो।
(५) काम-क्रोध-हिंसा-द्वेष वर्जनीय।

गीता की इस वाणी को जीवन में रूप देने की चेष्टा करो—

यत् करोषि यदश्नासि यज्जुहोसि ददासि यत्।
यत्तपस्यसि कौन्तेय! तत् कुरुष्व मदर्पणम्॥ (गीता, ९.२७)

सात्विक आहार, सत्-चिन्तन, सत्संग करने की चेष्टा करो। याद रखो, इस दुनिया का कुछ भी तुम्हारे साथ नहीं जायेगा। एकमात्र भगवत् नाम ही नामी रूप में तुम्हारे संगी होंगे। वर्ष के प्रथम दिन तुम लोग मेरे बाबा के आशीर्वाद में स्नात होकर इन वाणियों को जीवन में रूपायित करने की चेष्टा करो—यही प्रार्थना है।

नूतन वर्ष में अपना स्नेहाशीष देती हूँ। अत्र मंगल।

राधेश्याम।

आशीर्वादिका—माँ

२८

ॐ हरिः

सन्त आश्रम, वाराणसी
दि० ११.११.७१

नारायणेषु,
प्रिय.....

तुम लोगों के पत्र को पाकर सुखी हुई। जीवन में उनके ऊपर निर्भरशील हो सकने पर ही प्रकृत शान्ति का अधिकारी हुआ जा सकता है। 'मेरा' कहकर जितना पकड़ोगे उतना ही दुःख पाओगे। 'उनका' समझकर जितना छोड़ोगे उतना ही आनन्द को पाने का पथ प्रशस्त होगा। जितना संभव हो सके उतना परनिन्दा-परचर्चा से अपने को विरत रखो। वरन् अपना दोष कहाँ है, यह देखकर संशोधन करने की चेष्टा करो। स्वयं यदि अच्छे बनोगे, तभी अन्य को अच्छा किया जा सकता है यह जानो। प्रतिदिन नियमित भाव से उनको स्मरण करने की चेष्टा करो। किसी भी कार्य के पहले उनको स्मरण कर लो। उनके स्मरण मनन से उनका आशीर्वाद लाभ किया जाता है यह जानो। तुम लोग उनके कृपा लाभ के अधिकारी होओ, यही प्रार्थना करती हूँ।

मेरा स्नेहाशीष लो। अत्र मंगल।

राधेश्याम।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.
आशीर्वादिका—माँ

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

२९

ॐ हरिः

सन्त आश्रम, वाराणसी
दि० २०.११.७१

नारायणेषु,

प्रिय.....

तुम लोगों के सुन्दर मधुर पत्र को पाकर आनन्दित हुई। तुम लोग सुन्दर-निर्मल होओ, मैं तो यही चाहती हूँ। सत्य एवं सुंदरतम को पाने के लिए सर्वप्रथम शरणागति चाहिए। अर्थात् स्वयं को सम्पूर्ण भाव से उनका दास या दासी समझो। हम लोग प्रतिदिन स्तोत्र के माध्यम से प्रार्थना करते हैं—'शरणागत किंकर भीतमने'। यह जिससे केवल तोता पक्षी की तरह मुखस्थ बोली न होकर मन-प्राण से वैसा ही हो सकूँ, उसके लिए विशेष चेष्टा करो। अहं जब तक है, तब तक चेष्टा भी है। अहं न रहने पर ही चेष्टा का नाश हो जाता है। प्रतिदिन नियमित भाव से जितना जिससे संभव हो सके उनका ध्यान-जप करने की चेष्टा करो। हाथ से कार्य करो, पैर से पथ पर चलो; मन में उनका स्मरण-मनन—ऐसा होने पर उनको पाने का पथ सहज होगा। उन्होंने हाथ बढ़ाया हुआ है, तुम लोग उनका हाथ पकड़ लो।

मेरा स्नेहाशीष लो। अत्र मंगल।

राधेश्याम।

आशीर्वादिका—माँ

३०

ॐ हरिः

सन्त आश्रम, वाराणसी
दि० १.१२.७१

नारायणेषु,

प्रिय.....

तुम लोगों के पत्र को पाकर सुखी हुई। मातृमन तुम लोगों की खबर को पाने के लिए सर्वदा ही उत्कंठित रहता है। गीता के नवम अध्याय में ३४ नं० श्लोक में भगवान ने कहा है,

मन्मना भव मद्भक्तो मद्याजी मां नमस्कुरु।
मामेवैष्यसि युक्त्वैवमात्मानं मत्परायणः॥

अर्थ—तुम मद् गतचित्त एवं मद्भक्त होकर मेरी उपासना में रत हो जाओ एवं मुझे नमस्कार (सम्पूर्ण रूप में आत्मसमर्पण) करो। इस प्रकार मेरे शरणागत

CC-0. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

होकर मन को मुझमें युक्त करने से मुझको ही प्राप्त होओगे। (गीता० ९.३४) इसीलिए हम लोगों का क्या करणीय है, यह उन्होंने गीता वाक्य में ही कितना सुन्दर कहा है और यह कोई कठिन बात नहीं है, शिशु जैसे माँ के ऊपर निर्भरशील होता है, वैसे ही तुम लोग भगवान् के ऊपर सम्पूर्ण निर्भरशील बनो, यही इच्छा करती हूँ। उनके ऊपर छोड़ सकने से वे तुम्हारा सम्पूर्ण भार ले लेंगे। ऐसे भी तुम्हारा—मेरा भार उनके ही ऊपर है—तब तुम उसका अनुभव कर सकोगे। अनुभव में आनन्द मिलेगा।

मेरा स्नेहाशीष लो। अत्र मंगल।

राधेश्याम।

आशीर्वादिका—माँ

३१

ॐ हरिः

सन्त आश्रम, वाराणसी

दि० ३१.१२.७१

नारायणेषु,

प्रिय.....

तुम लोगों के पत्र को पाकर खुश हुई।... तुम लोग अच्छे रहो, यही इच्छा करती हूँ। सत्य एवं न्याय के पथ पर चलने की चेष्टा करो। जीवन के गन्तव्य पथ पर नाना प्रलोभन आ ही सकते हैं। अपने मन के जोर से प्रलोभन से आत्मरक्षा करने की चेष्टा करो। नाम जप जितना करोगे उतना ही मन का जोर बढ़ेगा। जप से पहले ध्यान जिससे सुन्दर हो सके, उस ओर लक्ष्य रखना। ध्यान में मन के निविष्ट न होने पर साधन-जीवन आरम्भ ही नहीं होता यह जानो। भ्रूद्वय के बीच में मन को निविष्ट करके नाम-रूप रज्जू के द्वारा मन को बाँधने के लिए यत्नशील हो जाओ। याद रखो, तुम लोगों की यदि चेष्टा रहेगी तो मेरे गुरुदेव का आशीर्वाद तुम लोग पाओगे ही। तुम लोगों ने ऋषिकुल में जन्मग्रहण किया है, तुम लोग ऐसा कोई कर्म मत करना, जिसके द्वारा ऋषिकुल का असम्मान हो। सुन्दर, संयत, संहत (आपस में मिला-जुला) जीवन ही काम्य जानो।

पत्रोत्तर में तुम लोगों के मंगल की इच्छा करती हूँ। मेरा स्नेहाशीष लो। अच्छे रहो। अच्छे बनो। अत्र मंगल।

राधेश्याम।

आशीर्वादिका—माँ

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

३२

ॐ हरिः

सन्त आश्रम, वाराणसी
दि० १५.२.७२

नारायणेषु,

प्रिय.....

तुम लोगों के पत्र पाकर सुखी हुई। मैं मंगलपूर्वक आश्रम में आकर पहुँच गई हूँ। रास्ते में कोई असुविधा नहीं हुई। बाबा की कृपा से मेरी व्यथा प्रायः कम हो गई है—मैं आरोग्य लाभ कर रही हूँ। तुम लोग चिन्ता करके कष्ट मत पाना। तुम लोगों को निकट पाकर बड़ा अच्छा लगा।

जीवन के गन्तव्य पथ पर प्रत्येक पद क्षेप उनकी ओर अग्रसर होता रहे, ऐसी चेष्टा करो। भगवान् को पाने के लिए संसार-आश्रम छोड़कर वन में—जंगल में चले जाना पड़ेगा, ऐसी बात नहीं है। **जो जहाँ है, वह वहीं उसे पा सकता है, यदि मन प्राण को निविष्ट करके उनको पुकार सको।** कारण, वे तो सर्वत्र हैं। ऐसा कोई स्थान नहीं है जहाँ वे नहीं हैं। सर्व भूतों में—सर्व जीवों में वे ही हैं यह जानकर सर्वतोभाव से उनकी सेवा करो। उनसे अधिक अपना अन्य कोई नहीं है। तुम्हारे पति, पुत्र, पत्नी कन्या सभी रूपों में वे ही हैं। **संसार को 'मेरा' न समझकर 'माँ' का समझो, तभी संसार बन्धन का कारण न होकर मुक्ति की ओर ले जायेगा।** उनको अर्थात् भगवान को हमें पाना ही है, यह बात हर समय स्मरण रखकर पथ पर चलो। स्नेहाशीष जानो। अत्र मंगल।

राधेश्याम।

आशीर्वादिका—माँ

३३

ॐ हरिः

सन्त आश्रम, वाराणसी
दि० १.५.७२

नारायणेषु,

प्रिय.....

तुम लोगों के पत्र को पाकर सुखी हुई। गुरु जी की कृपा से तुम लोग अच्छे रहो, यही चाहती हूँ। अच्छे रहने का अर्थ केवल शारीरिक अच्छा रहना नहीं है, शरीर-मन दोनों ही जिससे अच्छे रहें, उस ओर लक्ष्य रखना होगा। शरीर अच्छा रखने के लिए डॉक्टर के शरणापन्न होना पड़ता है, किन्तु मन अच्छा रहे इसके लिए

CC-0 Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भगवान का आशीर्वाद चाहिए। सुख-दुःख, जय-पराजय को समान भाव से ग्रहण न कर पाने से यह अच्छा रहना संभव नहीं है। कामना-वासना का त्याग न करने से प्रकृत कल्याण नहीं होता—इसके लिए पर-निन्दा, परचर्चा त्याग करना चाहिए, किसी विषय में व्यर्थ कौतुहल प्रकाश न करना। जीवन का व्रत हो सुन्दर-निर्मल बनकर चलना। मेरा चलना देखकर अन्य लोग भी अच्छे बनकर चलें। जीवन में यदि एक व्यक्ति को भी सत्पथ पर ला सको, तब महत् कार्य किया यह समझो। तुम लोग यदि महत् कार्य करोगे, तब महान (भगवान) का आशीर्वाद लाभ करोगे ही। वृथा कार्य में, आलस्य में समय नष्ट मत करो—यही तुम लोगों से अनुरोध है। तुम लोगों की माँ अच्छी हैं। स्नेहाशीष लो। अत्र मंगल।

राधेश्याम।

आशीर्वादिका—माँ

३४

ॐ हरिः

सन्त आश्रम, वाराणसी
११.५.७२

नारायणेषु,

प्रिय.....

तुम लोगों का पत्र मिला। तुम लोग सत्पथ पर रहकर आनंदमय से प्रेम करते हुए उनकी ओर आगे बढ़ते रहो, मैं तो यही चाहती हूँ। हर समय याद रखो, प्रेम करने में कोई दोष नहीं है। दोष वहीं है, जब अपने स्वार्थ के लिए प्रेम करते हैं। स्वार्थ शून्य अर्थात् निष्काम सभी कुछ अच्छा है। प्रति अणु-परमाणु से प्रेम करने की चेष्टा करो। याद रखो, भगवान केवल मठ-मंदिर या देवालय में ही आबद्ध नहीं हैं, वे सर्वत्र-सर्वजीव में विद्यमान हैं। फिर भी वहाँ, विशेष स्थान पर उनका जो विशेष प्रकाश है, वह भी मिथ्या नहीं है। अपने प्रेम का प्रसार करके तुम स्वयं भी प्रसारित हो जाओ—उनकी ओर आगे बढ़ते रहो—यही तो हम लोगों का व्रत है। उनको भूलकर अपने में मग्न मत रहो। तुम लोगों के सुन्दर-निर्मल फूल बनकर प्रस्फुटित होने में ही मेरा श्रम सार्थक है, मेरा आनन्द—मेरी पूर्णता है। मेरा 'मैं' भी वे ही हैं, यह मत भूलो। दोनों में कोई पार्थक्य नहीं है। स्नेहाशीष जानो।

अत्र मंगल।

राधेश्याम।

आशीर्वादिका—माँ

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

३५

ॐ हरिः

सन्त आश्रम, वाराणसी
२१.५.७२

नारायणेषु,

प्रिय.....

तुम लोगों का पत्र मिला। तुम लोगों का पत्र मिलने से मुझे अच्छा लगता है। और भी अच्छा लगता है यह जानकर कि तुम लोग सत्पथ पर हो—बुरा जो कुछ भी है उसे त्याग करके अच्छा होने के लिए चेष्टा कर रहे हो। अच्छा बनना लेकिन असम्भव नहीं है, कारण हमारी चेष्टा रहने पर हम लोग भगवान का आशीर्वाद अवश्य ही पायेंगे। अपने सारे दिन के कर्म का विचार रात्रि में बिछौने पर सोकर करो। अपना दोष खुद ही जितना जाना जाता है या समझा जाता है, बाहर से उसे कोई नहीं समझ सकता। अपने दोष का विचार करके स्वयं ही स्वयं को अच्छा करने की चेष्टा करो। **जितना संभव हो दूसरे के गुण देखो, और अपने दोष देखो। सद्ग्रन्थ प्रत्येक दिन कुछ न कुछ पढ़ने की चेष्टा करो, उससे सत्संग का कार्य होगा।** मेरी बातों को केवल बातों तक ही सीमित न रखकर उन्हें रूप देने की चेष्टा करो, तुम लोगों के निकट यही प्रार्थना है। मेरा स्नेहाशीष लो। अत्र मंगल।

राधेश्याम।

आशीर्वादिका—माँ

३६

ॐ हरिः

सन्त आश्रम, वाराणसी
२०.८.७२

नारायणेषु,

प्रिय.....

तुम लोगों का पत्र पाकर खुश हुई। बाबा की कृपा से तुम लोग अच्छे रहो यही इच्छा करती हूँ। इष्ट मंत्र को ही जीवन पथ का पाथेय जानो। कलिकाल में जीव स्वल्पायु है, इसलिए सभी लक्ष्य रखो ताकि जीवन का समय व्यर्थ न जाय। **समय का अपचय जीवन की बहुत बड़ी क्षति है। जीवन को भगवत्मुखी करना होगा।** मन को नाममय करना होगा। नाम इस तरह जपते रहो जिससे देह का प्रति अणु-परणामु नाममय हो जाये। नाम के लिए हनुमान जी का आदर्श मन में रखना होगा। नाम करते-करते देखोगे कि तुम्हें नाम करना नहीं पड़ रहा है—नाम स्वयं

CC-0. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ही होगा। नाम को प्रिय से भी प्रियतम बना लो। विषयी लोग विषय को जैसे प्रेम करते हैं वैसे ही तुम लोग नाम से प्रेम करो। प्रतिदिन ही तुम लोगों के द्वारा कुछ न कुछ सत्कार्य जिससे हो, उस ओर लक्ष्य रखो। सत्पथ पर आगे बढ़ते रहो, तुम लोगों से यही मेरी प्रार्थना है। जीवन को सहज, सरल, नाममय करना होगा।

यहाँ पर झूलन-उत्सव आरंभ हो गया है। सभी उनकी प्रेमतरंग में झूलने की चेष्टा करो। चेष्टा से मेरे गुरु जी का आशीर्वाद मिलेगा। स्नेहाशीष लो।

अत्र मंगल।

राधेश्याम।

आशीर्वादिका—माँ

३७

ॐ हरिः

सन्त आश्रम, वाराणसी

१०.९.७२

नारायणेषु,

प्रिय.....

तुम लोगों के पत्र पाकर आनन्द लाभ किया। तुम लोगों में से प्रत्येक, इष्ट नाम का स्मरण करते हुए उनकी ओर आगे बढ़ने की चेष्टा करो। बात कम करो, काम अधिक करो। अर्थात् सांसारिक जितने सब दायित्व तुम्हारे ऊपर हैं, उन सबको ठीक तरह से ही करते रहो। काम तो हाथ से करो, मन ही मन नाम जपो। प्रत्येक कार्य करते समय सोचो कि मैं भगवान के प्रीत्यर्थ उनका ही कार्य कर रहा हूँ। वह कार्य संसार का दैनन्दिन कार्य हो या ऑफिस, कल-कारखाना, पढ़ने-लिखने का ही कार्य क्यों न हो। प्रतिदिन भोर में उनका नाम-स्मरण करके कार्य में व्रती होओगे, शेष करोगे रात में जब निद्रा के लिए बिछौने पर सोने के लिए जाओगे, तब सर्वकर्मफल उनको अर्पण करके; मन में स्मरण रखोगे, तुम यंत्र मात्र हो, यन्त्री वे ही हैं। हर समय भावना को सत्, सुन्दर, आनन्दमय रखने की चेष्टा करो। ऐसी कोई आलोचना मत करो, जिससे मन की पवित्रता नष्ट हो। याद रखो, भगवान को पाने के लिए वन-जंगल-आश्रम में नहीं जाना होगा, यदि समस्त कर्म उनके ही कर्म समझकर कर्म कर सको।

मैं सकुशल हूँ। तुम लोग सकुशल रहना। अच्छे होने की चेष्टा करो, मेरी यही प्रार्थना है। मेरा स्नेहाशीष जानो। अत्र मंगल।

राधेश्याम।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.आशीर्वादिका—माँ

 Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

३८

ॐ हरिः

सन्त आश्रम, वाराणसी
१७.९.७२

नारायणेषु,

प्रिय.....

तुम लोगों के सुन्दर-निर्मल-मधुर पत्रों को पाकर बहुत अच्छा लगा। मुझे कैसा लगता है जानते हो—मुझमें कितने ही दोष क्यों न हों, तुम लोग सुन्दर-निर्मल होओ। प्रत्येक माता-पिता ही अपने लड़के-लड़कियों को सुन्दर-निर्मल देखना चाहते हैं। मेरे अन्दर कोई गुण नहीं है, फिर भी मैंने महत् की कृपा पायी है। मेरे बाबा अर्थात् गुरु जी हैं—यही मेरी सबसे बड़ी सम्पद् है। पितृ-धन पर पुत्र-पुत्रियों का ही अधिकार होता है, मैं नगण्य हूँ फिर भी उसी अधिकार से अधिकारी हूँ। परंपरारूप में सौभाग्यवश तुम लोगों ने भी उसी सम्पद् का लाभ किया है। अब अलसभाव में समय न बिताकर इस सम्पद् को फल-फूल से सुशोभित करते हुए उनके चरणों में अर्घ्य देने की चेष्टा करो। **भोग ही जीवन नहीं है—त्याग ही जीवन है। त्याग करो अलसता, आत्मप्रशंसा, परनिन्दा इत्यादि; भोग करो उनकी नामसुधा, उनका स्मरण-मनन इत्यादि।** उनको पाना कठिन नहीं है, यदि उनके लिए वास्तविक आकुलता जगे। इसलिए सत्संग, सद्ग्रन्थ-पाठ इत्यादि द्वारा उनको पाने की आकुलता बढ़ाओ—यही तुम लोगों से प्रार्थना है। मेरी बातों को केवल बातों में ही पर्यवसित मत कर देना, जीवन में रूप देने की चेष्टा करो। तुम लोगों के मंगल की इच्छा करती हूँ। मंगल की ओर अग्रसर होने की साधना करो। स्नेहाशीष जानो। अत्र मंगल।

राधेश्याम।

आशीर्वादिका—**माँ**

३९

ॐ हरिः

सन्त आश्रम, वाराणसी
२६.११.७२

नारायणेषु,

प्रिय.....

तुम लोगों के पत्र को पाकर सुखी हुई। पत्र के माध्यम से हम लोगों के परस्पर भावों का आदान-प्रदान होता है—इसलिए पत्र हम लोगों के लिए इतना

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आनन्दमय है। किन्तु इस भाव के माध्यम से हम लोग यदि भावग्राही जनार्दन के पास न पहुँचें, तब पत्र, पत्र न होकर विलाप हो उठता है। हम लोग जो कुछ करें, जो कुछ सोचें, सभी कुछ हम लोगों को उनके निकट ले जाय, इस ओर लक्ष्य रखना होगा। कोई कर्म विफल नहीं होता, यदि वह कर्म उनका ही कर्म समझकर किया जाय। इसलिए देखो, कर्म में कोई दोष नहीं है—दोष हमारी विचारधारा में है। चिन्ता (चिन्तन) का केन्द्र बनाना होगा चिन्तामणि को। भगवान् को तुम लोग छीके के ऊपर उठाकर मत रख दो। उनको ले आओ अपने अणु-परमाणु के चिन्तन के अन्दर। वे बिल्कुल अपने हैं—उनसे अधिक अपना हमारा अन्य कोई नहीं है—यही बात मैं बार-बार अपने पत्र के माध्यम से तुम लोगों को याद कराना चाहती हूँ। तुम लोग भी यह बात मन में रखकर चलो—तभी मेरा पत्र लिखना सार्थक होगा। तुम लोगों के मंगल की इच्छा करती हूँ।

मेरा स्नेहाशीष लो। अत्र मंगल।

राधेश्याम।

आशीर्वादिका—माँ

४०

ॐ हरिः

सन्त आश्रम, वाराणसी

३.१२.७२

नारायणेषु,

प्रिय.....

तुम लोगों के पत्र को पाकर खुशी हुई। तुम लोगों में से अनेकों के पत्र में अनेक बार कुछ दर्शन या स्वप्न की बात रहती है। संभवतः अनेक इस सम्बन्ध में कुछ भी नहीं लिखते, फिर भी सबसे कहती हूँ—याद रखो यह बाह्य है। हम लोगों को और आगे बढ़ना होगा। सामान्य कुछ दर्शन या स्वप्न से तुम लोग अभिभूत मत हो जाना। उनको पाकर कितना विराट आनन्द है, उसका कण मात्र भी इन सब स्वप्न या दर्शन में तुम लोग कल्पना नहीं कर सकते। अवश्य इसका महत्व कुछ कम है, ऐसी बात नहीं है। यह सब दर्शन या स्वप्न, भजन में आग्रह की वृद्धि करता है—उनको पाने के लिए सामयिक आकांक्षा बढ़ाता है। फिर भी कहूँगी, जो परम-प्राप्ति तुम लोगों को देना चाहती हूँ, उसकी तुलना में यह कुछ नहीं है। मेरे गुरुदेव अमृत का पात्र हाथ में लेकर प्रतीक्षा कर रहे हैं—तुम लोग उसको ग्रहण करने के लिए अपने को प्रस्तुत करो। गुरुजी (भगवान) मेरे परम दयालू हैं—उनके दया की बात कहकर समाप्त नहीं की जा सकती। उन्होंने तुम लोगों का भार लिया है। तुम

CC-0. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

लोग केवल अपना अहं छोड़कर एकबार उनके ऊपर निर्भरशील हो जाओ—देखोगे कि उन्होंने तुम लोगों को दोनों हाथ बढ़ाकर गोद में उठा लिया है। यह कितना आनंद है इसे भाषा द्वारा नहीं समझाया जा सकता। इसीलिए तो तुम लोगों से बोलती हूँ, तुम लोग इस आनन्द-लाभ के लिए प्रयासी हो जाओ यही इच्छा करती हूँ। स्नेहाशीष लो।

अत्र मंगल।

राधेश्याम।

आशीर्वादिका—माँ

४१

ॐ हरिः

सन्त आश्रम, वाराणसी

३.१२.७२

नारायणेषु,

प्रिय.....

तुम लोगों का पत्र पाकर सुखी हुई। जीवन पथ पर भगवत् नाम को पाथेय बनाकर जीवन-तरी को चलाते रहो। सुख-दुःख, जय-पराजय से भरी हुई है यह पृथिवी। मनुष्य के अन्दर भी सत्त्व-रज-तम गुण की समष्टि है—इन सबको तुल्य समझकर सर्व अवस्थाओं में मन को सुन्दर-आनन्दमय रखकर पथ पर चलने का अभ्यास करो। जीवन को सुन्दर-आनन्दमय करना होगा। यह हम लोगों का व्रत हो, जिससे हम लोग सुन्दर-निर्मल बनकर उनके चरणों की पुष्पांजलि बन सकें।

संसार को यदि उनका समझा जाय, तब देखोगे, संसार भी सुन्दर आनन्दमय हो जायेगा। सब कुछ प्रभुमय है—यह दृष्टि ही आनन्दमय है और उनको छोड़कर दृष्टि ही दुःखमय है। चिन्ताधारा को यदि कुछ भगवत् मुखी किया जाय, तभी देखोगे जीवन में सुन्दर का प्रकाश जलने लगेगा।

यहाँ पर हम लोग सब अच्छे हैं। तुम लोग अच्छे रहो। मेरा स्नेहाशीष लो। अत्र मंगल।

राधेश्याम।

आशीर्वादिका—माँ

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

४२

ॐ हरिः

सन्त आश्रम, वाराणसी
१०.१२.७२

नारायणेषु,

प्रिय.....

तुम लोगों के पत्र पाकर सुखी हुई। अपना कर्म जीवन सुन्दर-निर्मल-आनन्दमय करने की चेष्टा करो। एक बात हर समय स्मरण रखो अर्थात् सोचने की चेष्टा करो—तुमने जिस दिन जन्म लिया था, उस दिन तुम रोये थे और सभी हँसे थे। तुम इस दुनियाँ में ऐसा कर्म करते रहो कि जिस दिन तुम इस पृथिवी से विदा लोगे, उस दिन तुम हँसते-हँसते जाओ और सभी तुम्हारे लिये रोयें। यह जगत् कर्ममय है, कर्म हम लोगों को करना ही पड़ेगा। फिर भी यह ध्यान रखना होगा कि कर्म हमारे बन्धन का कारण न होकर मुक्ति का पथ प्रशस्त करे। सभी से प्रेम करो—सभी से प्रेम करने पर ही सबका प्रेम मिलता है। स्वयं भी अच्छे होने की चेष्टा करो, अन्य को भी अच्छा करने की चेष्टा करो।

मेरा स्नेह-आशीष जानो। अत्र मंगल।

राधेश्याम।

आशीर्वादिका—माँ

४३

ॐ हरिः

सन्त आश्रम, वाराणसी
१७.१२.७२

नारायणेषु,

प्रिय.....

तुम लोगों के पत्र पाकर सुखी हुई। तुम लोगों को मैं भी नियमित पत्र देती जा रही हूँ। किन्तु तुम लोग मेरे पत्र की बातों को रूप देने की चेष्टा करो। ऐसा न होने पर पत्र, पत्र न होकर विलाप ही बन जायेगा।

हम लोग सब कार्यों का समय पाते हैं, केवल उनके कार्य के लिए समय नहीं होता, यह तो काम की बात नहीं है। सब काम के पहले हम लोग उनका काम करें, इस ओर ध्यान रखें। प्रतिदिन खूब भोर में उठने की चेष्टा करो। तब प्रकृति शान्त होती है—संसार की कोलाहल ध्वनि भी जाग्रत नहीं होती। इस समय को निविष्ट मन से उनकी पूजा-ध्यान में बिताने की चेष्टा करो। अधिक समय न

CC-0. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कर सको तो कम से कम सुबह एक या डेढ़ घण्टा, संध्या को एक या आध घण्टा उनके नाम में बिताओ। सुबह जप के अन्त में कर्म-प्रेरणा लेकर संसार के (आश्रम के) कार्य के लिए व्रती हो जाओ। संध्या के समय समस्त कर्म उनको अर्पित करके कर्म से निवृत्त हो जाओ—इतनी मात्र ही तुम लोगों की साधना है। इससे अधिक प्रयोजन भी नहीं है। यह तो कठिन नहीं है। कम से कम इतनी चेष्टा करो—यही इच्छा करती हूँ।

मेरा स्नेह-आशीष लो। अत्र मंगल।

राधेश्याम।

आशीर्वादिका—माँ

४४

ॐ हरिः

सन्त आश्रम, वाराणसी
२८.१.७३

नारायणेषु,

प्रिय.....

तुम लोगों के पत्र पाकर सुखी हुई। आशा करती हूँ तुम लोग अच्छे हो। तुम लोगों की माँ अच्छी हैं। गत २२.१.७३ तारीख को सकुशल आश्रम में आकर पहुँच गयी हैं। एकमात्र भगवत् नाम-ध्यान-स्मरण से ही यथार्थ रूप में अच्छा रहा जा सकता है। जीवन-मार्ग में नाना प्रकार की समस्या आ ही सकती है। विशेषकर आजकल मानव जन्म ही समस्या-संकुल है। इस समस्यापूर्ण जीवन में एकमात्र भगवत् नाम ही पाथेय जानो। सर्वावस्थाओं में सत्पथ पर रहने की चेष्टा करनी चाहिए। मन जिससे शान्त एवं आनन्दमय रहे, इस ओर लक्ष्य रखो।

तुम सभी ने उत्सव का पत्र पाया तो है न? यदि किसी को न मिला हो, तो अवगत कराना। तुम लोगों को उत्सव में पाकर अच्छा लगेगा।

मेरा स्नेह-आशीष जानो। अत्र मंगल।

राधेश्याम।

आशीर्वादिका—माँ

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

४५

ॐ हरिः

सन्त आश्रम, वाराणसी
२५.३.७३

नारायणेषु,

प्रिय.....

तुम लोगों का पत्र मिला। तुम लोगों की माँ अच्छी हैं। तुम लोग अच्छे रहो। सुन्दर बनकर उनके चरणों के पुष्प होने योग्य होओ—मैं यही चाहती हूँ। जीवन-मार्ग में अनेक प्रकार के सुख-दुःख, मान-अपमान, जय-पराजय, हिंसा-विद्वेष होते हैं या रह सकते हैं। सबको समदृष्टि से देखने का अभ्यास करो। अभ्यास ही क्रमशः स्वभाव में बदल जायेगा। जीवन में भगवत् प्राप्ति ही हम लोगों का मूल उद्देश्य हो। और सबको चलने के मार्ग में कण्टक जानो। प्रत्येक को प्रेम करने की चेष्टा करो। किन्तु ध्यान रखो, किसी के प्रति तुमको मोह न हो। जीव को प्रेम करने का मतलब है, विभिन्न रूपों में विष्णु को ही प्रेम कर रहे हो। कारण एकमात्र विष्णु ही व्यापक भाव से विस्तृत हैं—यह समझो। जीव रूप में भी विष्णु ही हैं।

मेरा स्नेह-आशीष जानो। अत्र मंगल।

राधेश्याम।

आशीर्वादिका—माँ

४६

ॐ हरिः

सन्त आश्रम, वाराणसी
१.४.७३

नारायणेषु,

प्रिय.....

तुम लोगों के पत्र को पाकर खूब आनन्दित हुई। याद रखो, धीरे-धीरे यह वर्ष भी समाप्त हो रहा है। इस प्रकार हमारे पूरे जीवन से एक-एक करके वर्ष कम होते जा रहे हैं। उनके पास जाने का दिन एक दिन सबका ही आयेगा। जप-ध्यान-नाम में यदि अपने मन-प्राण को निमग्न न कर सको, तब उनके पास जाकर क्या हिसाब दोगे? केवल उम्र में बड़ा होना पर्याप्त नहीं है। हम लोग भगवत्-प्राप्ति से, उनकी अनुभूति से बड़े हो सकें, इस ओर ख्याल रखकर दिन अतिवाहित करने की चेष्टा करो। वृथा समय नष्ट मत करो—यही तुम लोगों के निकट मेरा

CC-0. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अनुरोध है, अपनी चेष्टा को जाग्रत करो—निर्मल चेष्टा होने पर सहज ही उनकी कृपा लाभ करोगे।

मेरा स्नेहाशीष लो। अत्र मंगल।

राधेश्याम।

आशीर्वादिका—माँ

४७

ॐ हरिः

सन्त आश्रम, वाराणसी
२९.५.७३

नारायणेषु,

प्रिय.....

तुम लोगों के पत्र पाकर सुखी हुई। तुम सभी मन को शान्त रखकर पथ पर चलो। व्यर्थ बात जितनी कम बोली जाय, उतना ही अच्छा। भीतर ही भीतर यदि जप किया जाय, तब मन सहज ही अंतर्मुखी हो जाता है। परस्पर को प्रेम करते हुए पथ पर चलना होगा। फिर भी ध्यान रखना होगा, परस्पर का प्रेम सुन्दर प्रेम हो। प्रेम और मोह एक नहीं हैं। काम-मोह इत्यादि से मन को दूर रखना होगा। हँसी-मजाक करो, किन्तु वह भी निर्मल होना चाहिए। आलोचना ऐसी होनी चाहिए कि आलोचना-आलाप में उनको जानने के लिए आग्रह बढ़े। तुम लोग मेरा स्नेह-आशीष लो। अत्र मंगल।

राधेश्याम।

आशीर्वादिका—माँ

४८

ॐ हरिः

सन्त आश्रम, वाराणसी
५.८.७३

नारायणेषु,

प्रिय.....

तुम लोगों का पत्र पाकर खुशी हुई। तुम लोगों का सुन्दर मधुर पत्र मेरे अत्यधिक आनन्द का कारण होता है और भी आनन्द का कारण होगा यदि मैं देखूँ कि तुम लोग आनन्दमय को जानने, पाने के लिए चेष्टा कर रहे हो। हर समय याद रखो कि हम लोग दो समय आसन बिछाकर बैठकर पेट भरकर प्रसाद पाते हैं। इसके अलावा शरीर स्वस्थ रखने के लिए कुछ न कुछ कई बार आहार

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

करते रहते हैं—इसी तरह दोनों समय सुबह संध्या आसन पर बैठकर मन-भरकर जप करो, इसके अलावा सारे दिन कुछ न कुछ जितना संभव हो जप करते रहो। इससे मन की पुष्टि होगी—भगवान् को पाने का पथ सहज-सरल होगा।

तुम लोग अच्छे रहो। मेरा स्नेह-आशीष लो। तुम लोगों की माँ अच्छी हैं। अत्र मंगल।

राधेश्याम।

आशीर्वादिका—माँ

४९

ॐ हरिः

सन्त आश्रम, वाराणसी
१६.९.७३

नारायणेषु,

प्रिय.....

तुम लोगों का पत्र पाकर खुश हुई। तुम लोगों का पत्र पाकर मुझे जैसे अच्छा लगता है, पत्रोत्तर देने में भी वैसे ही अच्छा लगता है। और अधिक अच्छा लगेगा यदि मैं देखूँगी कि तुम लोग पत्र की वाणी को जीवन में रूपायित करने की चेष्टा करो। तुम लोग उस परम पिता के निकट से आये हो, जाना भी होगा तुम लोगों को उन्हीं परम पिता के निकट। किसी अवस्था में इस सत्य को भूल मत जाओ। हम लोग असल वस्तु को भूलकर नकली खिलौना लेकर यहाँ मत्त हैं। उससे संभवतः एक क्षणिक सुख पा सकते हैं, किन्तु वास्तविक आनन्द नहीं पा सकते। आनन्द है आनन्दमय के नाम-गान-स्तुति में। गुरु और तीर्थ के प्रति जब अनुराग होगा, तभी साधन-जीवन में प्रथम पदक्षेप जानो।

स्नेह-आशीष लो। अत्र मंगल।

राधेश्याम।

आशीर्वादिका—माँ

५०

ॐ हरिः

सन्त आश्रम, वाराणसी
२३.९.७३

नारायणेषु,

प्रिय.....

तुम लोगों के पत्र को पाकर सुखी हुई। अब तो जितने दिन बीतेंगे, खुशी की मात्रा बढ़ती रहेगी। वास्तव में माँ भी प्रत्येक बेटे-बेटी के मिलन की प्रतीक्षा

 Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

में रहेगी। माँ महामाया का आगमन निकट ही है। उनका आवाहन करने के लिए, वरण करने के लिए स्वयं की प्रस्तुति चाहिए। माँ महामाया परम वैष्णवी हैं। उनको वरण करने के लिए वैष्णवोचित गुण चाहिए अर्थात् नम्र, विनयी, शुद्ध, सरल, सुन्दर, निर्मल होकर उनको हृदय-मंदिर में आसन बिछाकर बैठाना होगा। हम लोगों का हृदय-आसन यदि सरल-कोमल न हो, तब उनको बैठने में कष्ट होगा। इसलिए अपने (हृदय) को सुन्दर आसन रूप में प्रस्तुत करने की चेष्टा करो। चिन्ता क्या है? चेष्टा के पीछे मेरे बाबा जी महाराज का आशीर्वाद मिलेगा।

स्नेह-आशीष लो। अत्र मंगल।

राधेश्याम।

आशीर्वादिका—माँ

५१

ॐ हरिः

सन्त आश्रम, वाराणसी
४.११.७३

नारायणेषु,

प्रिय.....

तुम लोगों का पत्र मिला। आशा करती हूँ, बाबा की कृपा से तुम लोग अच्छे होंगे। जीवन पथ पर सुख-दुःख, मान-अपमान, संघात सबको तुल्य समझकर भगवान को प्राप्त करने के लिए हम लोगों को अपने मन की प्रस्तुति को लेकर आगे बढ़ना होगा। मन जब तक शान्त-सुन्दर नहीं होगा, प्रकृत शान्ति के अधिकारी हम लोग नहीं हो सकते। यथासंभव हिंसा, द्वेष, सन्देह से मन को मुक्त रखना होगा। प्रेम से प्रत्येक अणु-परमाणु को भर देना होगा। मनोनुकूल सभी को सभी प्रेम कर सकते हैं। अमनोनुकूल सभी से प्रेम करना होगा। केवल प्रेय को प्रेम नहीं करना है। श्रेय को भी प्रेम करना होगा।

तुम लोग अच्छे रहो। तुम लोगों के लिए मेरा स्नेहाशीर्वाद। अत्र मंगल।

राधेश्याम।

आशीर्वादिका—माँ

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

५२

ॐ हरिः

सन्त आश्रम, वाराणसी
११.११.७३

नारायणेषु,
प्रिय.....

तुम लोगों का पत्र पाकर खुश हुई। पुत्र-पुत्रियों का पत्र माँ के आनन्द का ही कारण होता है। फिर भी हम लोगों को केवल इस स्थूल आनन्द में संतुष्ट नहीं रहना है। परमानन्द लाभ के लिए यत्नशील होना है। आजकल यह दुनिया अत्यधिक झंझटों से भरी है। इस परिधि से हम लोग मुक्त होकर सुन्दर-निर्मल मन से विचरण कर सकें, इसके लिए चिर-शाश्वत सुन्दर की उपासना हेतु मनःसंयोग करने के लिए यत्नशील हों। मुझे केवल एक बात तुम लोगों को याद दिलाने की इच्छा होती है, स्त्रोत में अपने आपको बहा मत देना अर्थात् अंधानुकरण मत करना। अच्छे रहो।

मेरा स्नेहाशीष लो। अत्र मंगल।

राधेश्याम।

आशीर्वादिका—माँ

५३

ॐ हरिः

सन्त आश्रम, वाराणसी
३.२.७४

नारायणेषु,
प्रिय.....

तुम लोगों के पत्र को पाकर सुखी हुई। गत डेढ़ महीने अनेक स्थानों पर घूमने के कारण तुम लोगों को नियमित पत्र न दे सकी। तुम लोगों की माँ अच्छी हैं। आशा करती हूँ, बाबा की कृपा से तुम लोग भी अच्छे होगे। भगवत् नाम लेकर पथ पर चलना ही यथार्थ सकुशल रहना है। जिससे जितना संभव हो जीवन को नाममय बनाकर उन्नत करने की चेष्टा करो। नाम का अभ्यास जितना करोगे, उतना ही जीवन आनन्दमय होगा। भगवान को पुकारने से सांसारिक दुःख-कष्ट नहीं आयेगा ऐसा नहीं है—नाम के बल से दुःख सहनशील होता है, यह जानकर अनवरत नाम लेते रहने की चेष्टा करो, यही इच्छा करती हूँ।

मेरा स्नेह-आशीष जानो। अत्र मंगल।

राधेश्याम।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.
आशीर्वादिका—माँ

 Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

५४

ॐ हरिः

सन्त आश्रम, वाराणसी

१०.९.७४

नारायणेषु,

प्रिय.....

तुम लोगों का पत्र पाकर सुखी हुई। पत्र तो तुम लोगों को प्रायः प्रति सप्ताह ही लिखती जा रही हूँ। पत्रालाप तभी सार्थक होता है, यदि वह आलाप भगवत् मुखी हो। अन्यथा पत्र विलाप बन जायेगा। तुम लोग चंचल अस्थिर मन को नामरूपी जलसेचन के द्वारा शान्त आनन्दमय बनाकर आनन्दमय को पाने के लिए चेष्टा करो। जितना संभव हो सारे दिन का चिन्तन-मनन भगवान् को केन्द्र करके ही चले, इस ओर लक्ष्य रखो। एक बात याद रखो, सारे दिन जो विचार करोगे, सुबह-शाम पूजा के आसन पर बैठने से वही विचार आकर तुम्हारे मन पर अधिकार कर लेगा। इसलिए सारे दिन के विचार की ओर विशेष लक्ष्य रखो, वह विचार किसी न किसी प्रकार से भगवत्-चिन्तन ही हो। ऐसा होने से भजन करने पर मन भगवद्मुखी होगा। भगवत् कृपा से ही सकुशल-सानन्द रहा जा सकता है।

मेरा स्नेह-आशीष लो। अत्र मंगल।

राधेश्याम।

आशीर्वादिका—माँ

५५

ॐ हरिः

सन्त आश्रम, वाराणसी

२०.९.७४

नारायणेषु,

प्रिय.....

तुम लोगों का पत्र मिलने से मुझे बहुत अच्छा लगता है। मैं तुम लोगों को जो पत्रोत्तर देती हूँ उसका प्रधान उद्देश्य है, भगवत् वाणी को तुम लोगों के घर-घर पहुँचा देना। मैं उनकी बात तुम लोगों के निकट पहुँचाना चाहती हूँ। यदि तुम लोग उनकी बात एकत्रित करके उनकी ओर आगे बढ़ने के लिए पदक्षेप बढ़ाओ, तभी मेरा पत्र लिखना सार्थक है। भगवान् को पाने के लिए पिपासा जगाओ— पिपासा होने से ही प्यास दूर करने के लिए चेष्टा जागेगी। उनको पाने के आनन्द से बढ़कर और कोई भी आनन्द, आनन्द नहीं है। बंधन का खेल बहुत खेला है—

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अब एकबार मुक्ति के पथ पर आगे बढ़ने के लिए 'नाम' को लेकर खेल करो। इस समय निरानन्द ही जीवन का सब कुछ नहीं है यह जानकर **नाम जपो, नाम भजो, नाम गाओ, नाम को ही ध्येय बनाओ।** आनन्द से आये हो, आनन्द में ही जाना होगा, यह मत भूलो। मेरा स्नेह-आशीष जानो। अत्र मंगल।

राधेश्याम।

आशीर्वादिका—माँ

५६

ॐ हरिः

सन्त आश्रम, वाराणसी
४.१२.७४

नारायणेषु,

प्रिय.....

तुम लोगों का पत्र पाकर सुखी हुई। आजकल डाक से खूब कम पत्र आता है। इससे समझती हूँ, तुम लोगों को मेरा पत्र नहीं मिल पा रहा है, मैं भी तुम लोगों का सब पत्र नहीं पा रही हूँ। पत्र मुझे मिले या न मिले, तुम लोग जो भी—जहाँ भी हो, बाबा की कृपा से अच्छे रहो, यही चाहती हूँ। **केवल शारीरिक अच्छा रहना ही पर्याप्त नहीं है, मन की दृष्टि से भी जिससे सुन्दर-निर्मल हो सको, इस ओर चेष्टा रखो। वे मंगलमय हैं, यही विश्वास सर्व अवस्थाओं में दृढ़ भाव से रखो।** किसी अवस्था में उनके प्रति विश्वास मत खो देना। उनको अपने से भी अधिक प्रेम करने की चेष्टा करो। वे अपने से भी अधिक अपने हैं, इसको अनुभव करने की चेष्टा करो।

मेरा स्नेह-आशीष जानो। अत्र मंगल।

राधेश्याम।

आशीर्वादिका—माँ

५७

ॐ हरिः

सन्त आश्रम, वाराणसी
१७.१२.७४

नारायणेषु,

प्रिय.....

तुम लोगों के पत्र को पाकर सुखी हुई। भगवत् कृपा से भगवत् नाम-ध्यान में तुम लोग आनन्द से रहो, यही इच्छा करती हूँ। वर्तमान समय जीव के

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

 Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

लिये बड़ा दुःसमय है। इस दुःसमय को अतिक्रम करने के लिए एकमात्र मंत्र है भगवत् नाम। जीवन मार्ग में सुख-दुःख नहीं आयेगा, ऐसा नहीं है—यह तो चक्रवत् आयेगा ही, किन्तु हम लोग उससे विचलित न होकर उनके ही ऊपर निर्भरशील हों, इसके लिए प्रार्थना करनी पड़ेगी।

यहाँ पर घर का कार्य बाबा की कृपा से एवं तुम लोगों के गुरुभ्राता यतीन घोष के माध्यम से आगे बढ़ता जा रहा है। फिर भी हम लोग जिस गति से आगे बढ़ना चाहते हैं, मिस्त्री के तदनुसार न चल पाने से काम पिछड़ रहा है। जो होता है, वह बाबा की इच्छा है—यह मानकर हम लोग खूब आनन्द से हैं।

तुम लोग अच्छे रहो, यही इच्छा करती हूँ। स्नेह-आशीष लो।

अत्र मंगल।

राधेश्याम।

आशीर्वादिका—माँ

५८

ॐ माँ

सन्त आश्रम, वाराणसी

१२.१.७५

नारायणेषु,

प्रिय.....

तुम लोगों का पत्र पाकर खुशी हुई। तुम लोग सकुशल तो हो? हर समय याद रखो हम लोगों को सकुशल रहना ही पड़ेगा। शरीर हम लोगों का अच्छा नहीं भी रह सकता है, किन्तु हम लोगों को मन अच्छा अर्थात् सुन्दर, निर्मल, पवित्र रखना होगा। मन को अच्छा रखने के लिए सुन्दर विचार, सद्ग्रन्थ पाठ, जप ध्यान नियमित भाव से करना होगा। जीवन मार्ग में छः रिपुओं के नाना प्रकार के विकार आते हैं। जिसका साधन-बल होता है, वह उससे उतना ही विचलित नहीं होता। सारा दिन तुम लोगों को ध्यान-जप करने के लिए नहीं बोलती—फिर भी सुबह-संध्या दो समय अन्ततः एक-एक घंटा करने के लिए चेष्टा करो। २४ घंटे में से कम से कम दो घण्टे मुझे दो। हाथ से काम, मन में नाम—यह बात २४ घण्टे ही मन में रखने की चेष्टा करो।

मेरा स्नेह-आशीष लो। अत्र मंगल।

राधेश्याम।

आशीर्वादिका—माँ

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

५९

ॐ हरिः

सन्त आश्रम, वाराणसी
२०.१.७५

नारायणेषु,

प्रिय.....

...नाम जपते-जपते नाम करने की इच्छा भीतर से आती है। सर्वप्रथम संभवतः अच्छा न लगे, इसलिए नियमित नाम जपना नहीं हो पाता। किन्तु करते-करते अच्छा लगने लगता है।

प्रथम अवस्था में मनुष्य में 'अहं' होता है, इसलिए चेष्टा भी करनी उचित है। साधना की उच्च भूमि पर उठने से ही एकमात्र 'अहं' नहीं रहता, तब चेष्टा भी नहीं होती। हम लोग जब सभी के लिए अर्थात् खाने-पहनने, अच्छे रहने इत्यादि के लिए चेष्टा करते हैं, तब नाम जपने के लिए भी चेष्टा करनी होगी। सब-कुछ मैं करता हूँ, नाम के समय वे करेंगे, हम लोगों का यह भाव ठीक नहीं है। जब-तब नाम जपना अच्छा है, फिर भी निर्दिष्ट समय पर यदि कुछ नाम जपा जाय, तब शांति और आनन्द मिलता है। स्थूलतः इसके कारण शरीर-मन भी कुछ विश्राम पाता है।

सारे दिन कर्म से क्लान्त होने के बाद एवं कर्मस्रोत में जाने के पूर्व यदि कुछ भगवत् नाम जपकर—कर्मस्रोत में अवगाहन करने के लिए लोग यदि उतरें, तब उनकी कर्मशक्ति भी वृद्धि पाती है; कुछ निर्भर करने की शक्ति पाकर निश्चिन्तता का आराम उपभोग किया जा सकता है। अतः सुबह-शाम नियमित भाव से १० मिनट नाम करके देखो, शरीर-मन की दृष्टि से उपकार होगा।...

मेरा स्नेह-आशीष लो। अत्र मंगल।

राधेश्याम।

आशीर्वादिका—माँ

६०

ॐ हरिः

सन्त आश्रम, वाराणसी

नारायणेषु,

प्रिय.....

तुम्हारा पत्र पाकर सुखी हुई। साधन करने के समय दोनों भ्रू का जहाँ पर संयोग हुआ है वहाँ मन-संयोग करने की चेष्टा करो। भ्रू द्वय के संयोग स्थल

CC-0. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पर मन स्थिर करके नाम की ध्वनि यहीं हो रही है सुनने की चेष्टा करो। इस सम्बन्ध में तुम्हारा जब जो प्रश्न आये, करते रहो। इसमें हँसने की कोई बात नहीं है। तुम कि...र ज्ञान की पिपासा देखकर हँसते हो? जैसे भी हो ज्ञान का प्राप्त होना ही बड़ी बात है। तृषा लगने पर ही जल मिलता है।

.....स्नेहाशीष लो। अत्र मंगल।

राधेश्याम।

आशीर्वादिका—माँ

६१

ॐ हरिः

सन्त आश्रम, वाराणसी

नारायणेषु,

प्रिय.....

तुम्हारा पत्र पाकर सुखी हुई।... यदि मन की खूँटी में जोर रहे तब देखोगे सांसारिक सब घात-प्रतिघात से आलोड़न उत्पन्न नहीं होगा। स्वयं को द्रष्टा के आसन पर बैठाकर सब कुछ देखते रहने की चेष्टा करो। याद रखो, संसार एक बहुत बड़ा थियेटर है। यहाँ द्रष्टा होने पर ही सुख-दुःख विचलित नहीं कर पाता।

.....मेरा स्नेहाशीष लो। अत्र मंगल।

राधेश्याम।

आशीर्वादिका—माँ

६२

ॐ हरिः

सन्त आश्रम, वाराणसी

नारायणेषु,

प्रिय.....

तुम्हारा पत्र पाकर सुखी हुई।... भगवान का जो नाम मिला है, उसका निष्ठा के साथ जप करते रहो। यह नाम जितना जपोगे, उतना ही संसार बन्धन कट जायेगा। अपने को संसार के साथ जड़ित मत करो। एक कमरे में बैठकर भगवान को पुकारने की चेष्टा करो। खाने के समय जिस दिन भगवान जो जुटायें खाते रहो, जो कुछ खाओ, मन ही मन भगवान को निवेदन करके उनका प्रसाद खा रहे हो, यह बुद्धि लेकर खाओ। खाने के अच्छे-बुरे की ओर दृष्टि मत डालना। परनिन्दा, परचर्चा एकदम मत करो। इसको भीषण पाप जानो। बात जितनी कम करो, उतना

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अच्छा। बात कम बोलकर भीतर ही भीतर नाम जपते रहो। तभी अन्त समय में अन्य कोई भावना नहीं रहेगी। वे स्वयं आकर उद्धार करके ले जायेंगे।... मेरा स्नेहाशीष लो। अत्र मंगल।

राधेश्याम।

आशीर्वादिका—माँ

६३

ॐ हरिः

सन्त आश्रम, वाराणसी
२४.९.९६

नारायणेषु,

प्रिय...

तुम्हारा पत्र पाकर सुखी हुई।... सत्य पथ पर चलो, सत्य विचार करो, सत्य बात बोलो, सत्य आचरण करो—तभी सच्चे साधु हो सकोगे। सच्चा साधु बनने की इच्छा होने पर किसी के प्रति विद्वेष भाव मत रखो। सभी के अंदर श्री गोपाल जी हैं यह समझकर सबकी सेवा करो। किसी के प्रति पक्षपातित्व मत करो। सभी के प्रति समभाव रखो। किसी का दोष मत देखो। सभी को भगवान का प्रतीक जानकर सभी से प्रेम करने की चेष्टा करो। किसी के व्यवहार से तुरंत अपमानित बोध मत करो। यदि कोई कुछ अप्रिय बात बोले या संशोधन के लिए कुछ कहे तो वह तुम्हारे मंगल के लिए कहा है यह सोचो। इस रूप में भगवान ही तुमको सावधान कर रहे हैं या अपमान देकर संशोधन कर रहे हैं, ऐसा सोचना। ऐसा विचार करना कठिन है, फिर भी असंभव नहीं है। सच्चा साधू होने पर याद रखो भगवान अग्नि परीक्षा करते हैं। जितने उनके निकटवर्ती होंगे उतनी ही अधिक वे परीक्षा करते हैं। यदि उनका दिया अपमान सह्य कर सको, तभी उनके निकटवर्ती हो सकते हो और उतना ही उनका प्रेम और कृपा पाओगे। वे किसी के माध्यम से ही अपमान देते हैं—यही उनकी परीक्षा है। उनकी कृपा प्रेम के माध्यम से नहीं आती—शासन के माध्यम से आती है। पड़ोसी के पुत्र को मनुष्य प्रेम दिखाता है—अपने पुत्र पर शासन करता है। यही बात हर समय याद रखो। मन को उनके रंग में रंगकर रखो। जितना संभव हो सद्ग्रन्थ पाठ करो—विशेष रूप से महापुरुषों की जीवनी। अपना इष्ट मंत्र तो जप करोगे ही। गीता को मंत्रमाला जानो।

मेरा स्नेहाशीष लो। अत्र मंगल।

राधेश्याम।

आशीर्वादिका—माँ

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

 Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

६४

ॐ हरिः

सन्त आश्रम, वाराणसी

नारायणेषु,

प्रिय.....

तुम्हारा पत्र पाकर सुखी हुई।... तुम्हारा मन जिस समय नाम करने में लगे उसी समय विशेष रूप से नाम करने की चेष्टा करो, उनके लिए जितना प्राण रुदन करे, उतना ही अच्छा। रोते-रोते ही उनको पाओगे। आकुलता ही उनको पाने का पथ है यह जानो। हर समय याद रखो, आकुलता आना अच्छा है, लेकिन अस्थिरता न आये। उनके लिए मन को आकुल कर लो। आकुलता के अंदर ही कुल के देवता का दर्शन पाओगे। संसार का जो कर्तव्य भार देकर भगवान ने तुम्हें भेजा है, वह जिससे अच्छी तरह कर सको, उसकी ओर लक्ष्य रखो। दुर्गा पूजा के समय तुम्हारी आकांक्षा की बात जानी। मृण्मयी माँ के अन्दर तुम्हारी चिन्मयी माँ विद्यमान हैं, इसी भाव से ग्रहण करने की चेष्टा करो। हर समय याद रखो, भगवान को पाने के सम्बन्ध में आकांक्षा रहना ही अच्छा है। अपनी माँ को पाने के लिए यह जो तुम्हारा प्राण रुदन करता है— यह उनका ही आशीर्वाद जानो। तुम्हारी माँ तुम्हारे अन्तर में ही है, ऐसा जानो। जितना नाम करोगे, उतनी ही उनकी उपलब्धि कर सकोगे।

मेरा स्नेहाशीष लो। अत्र मंगल।

राधेश्याम।

आशीर्वादिका—माँ

६५

ॐ हरिः

सन्त आश्रम, वाराणसी

१०.१०.६१

नारायणेषु,

प्रिय.....

तुम्हारा पत्र पाकर सुखी हुई।... अपने मन को हर समय भगवत् नाम के साथ संयुक्त रखने की चेष्टा करो। सद्गुरु कृपाश्रित व्यक्ति हर समय गमन मार्ग में ही रहता है। साधारणतः उन्नति की ओर ही आगे बढ़ता रहता है। दौड़ रहे हो या बैठे हुए हो, यह तुम्हें चिन्ता नहीं करना है। तुम्हें जो कार्य दिया गया है अर्थात् नाम एवं नीलमणि की सेवा ही ठीक तरह करने की चेष्टा करो। सुबह से सन्ध्या पर्यन्त अपनी दैनन्दिन कार्यतालिका तय रही, सोने के लिए जाते समय विचार

CC-0. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

करना एवं सारे दिन में कितना समय उनके नाम एवं चिन्तन में बिताया है यह भी विचार करना। हर समय लक्ष्य रखो मन के अन्दर, किसी समय असंतोष न आये। असंतोष ही दुःख का कारण है, यह जानो।

मेरा स्नेहाशीष लो। अत्र मंगल।

राधेश्याम।

आशीर्वादिका—माँ

६६

ॐ हरिः

सन्त आश्रम, वाराणसी

नारायणेषु,

प्रिय.....

तुम्हारा पत्र पाकर सुखी हुई।... तुमने स्वप्न में दर्शन पाया यह जानकर प्रसन्नता हुई। स्वप्न दर्शन उनकी कृपा का परिचय है। स्वप्न में नाना देवदेवी एवं महापुरुष के दर्शन को पाना उनकी कृपा का परिचय समझो। गुरु को ही सबसे अपने समझकर उनको ही दृढ़ रूप से पकड़े रहने की चेष्टा करो। अपनी अहमिका का सम्पूर्ण रूप से विसर्जन देकर उनको ही पकड़े रहने की चेष्टा करो। मनुष्य उनको भूलकर अपने को लेकर मस्त रहता है, इसीलिए कष्ट पाता है। सांसारिक आघात कल्याण का कारण है। आघात मिलने से ही मनुष्य उनको दृढ़तापूर्वक पकड़ता है। आघात के द्वारा ही मोहभंग होता है। किसी भी प्रकार के सुख-दुःख के संस्कार को लेकर उनके निकट जाया नहीं जाता। सम्पूर्ण संस्कार वर्जित होकर ही उनके निकट जाना होगा। इसलिए सुख-दुःख दोनों का ही वर्जन करके मन की समता अवस्था प्राप्त करनी पड़ेगी।...

मेरा स्नेहाशीष लो। अत्र मंगल।

राधेश्याम।

आशीर्वादिका—माँ

६७

ॐ हरिः

सन्त आश्रम, वाराणसी

नारायणेषु,

प्रिय.....

तुम्हारे पत्र को पाकर सुखी हुई।... माँ को जब तत्त्वतः जाना जायेगा तभी सब जानने का अवसान घटित होगा। सद्ग्रन्थ इत्यादि पाठ करने की चेष्टा करना,

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

 Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इससे देखोगे कि माँ को जानने की आकुलता बढ़ेगी। भोग ही भोग की स्पृहा बढ़ाता है। अतएव चेष्टा के द्वारा भोग की स्पृहा का दमन करना होगा। **विचार-विवेचना के द्वारा जो अच्छा समझो, वही हर समय करने के लिए चेष्टा करो। प्रवृत्ति यदि अन्य दिशा की ओर ले जाने की चेष्टा करे फिर भी उसका दमन करते रहो।** सन्तान को चालित करने का दायित्व माँ का ही होता है। वे कब किस कर्म के द्वारा किसका क्या मंगल सिद्ध करेंगे, वह साधारण विचार बुद्धि के द्वारा समझा नहीं जा सकता। माँ ही सब कुछ कर रही हैं—पहले यह बुद्धि के द्वारा समझने की चेष्टा करो। किन्तु कर्म हर समय 'सु' हो, इसके प्रति लक्ष्य रखो। हर समय 'सु' भगवत् द्वारा एवं 'कु' हमारे द्वारा हो रहा है, यह याद रखने की चेष्टा करो—इससे संशोधन सहज एवं सरल हो जाता है। तुम चेष्टा करो, ऐसा होने पर 'माँ' वास्तव में ही माँ है इसकी उपलब्धि कर सकोगे। मनुष्य की चेष्टा एवं भगवत् आशीर्वाद से यह सम्भव है।

मेरा स्नेहाशीष लो।... अत्र मंगल।

राधेश्याम।

आशीर्वादिका—माँ

६८

ॐ हरिः

सन्त आश्रम, वाराणसी

नारायणेषु,

प्रिय.....

आपका पत्र पाकर सुखी हुई।... समस्त बातें जानी। मुझे ऐसा लगता है कि जब बाबा का आश्रय मिला है, तब और किसी की बात से कुछ करने का प्रयोजन नहीं है। **सब प्रकार का मंगल बाबा के द्वारा प्रदत्त मंत्र के द्वारा ही लाभ करेंगे।** आप लोग विष्णु के उपासक हैं—सब देवता उन्हीं की स्तुति करते हैं। इसलिए पृथक् भाव से माँ चण्डी की कृपा पाने के लिए कुछ करने का प्रयोजन नहीं था एवं नहीं है। यदि आप लोगों के संस्कार को कुछ अन्य न प्रतीत हो, तो इस घट को गंगा में विसर्जित करके बाबा के दिये नाम का विशेष भाव से जप करते रहे। नाम संकीर्तनादि कीजिये इससे सुफल प्राप्त करेंगे। बाबा के आश्रित जो लोग हैं, उनके लिए अन्य कुछ भी प्रयोजन नहीं है, यह समझें। फिर भी किसी की इच्छा होने पर अवश्य वह कर सकता है। सभी की भगवत् बुद्धि से सेवा करते रहें एवं **प्रत्येक के अन्दर श्री गुरुदेव हैं यह समझकर मन ही मन प्रणाम करें। इसी से सभी मित्रवत् हो जायेंगे।...**

अत्र मंगल।

राधेश्याम।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection. आशीर्वादिका—माँ

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

६९

ॐ हरिः

सन्त आश्रम, वाराणसी

नारायणेषु,

प्रिय.....

मनुष्य का यह जीवन और कितने दिन का है ? सुख से बीते या दुःख से, शेष तो एक दिन होगा ही—और जिस दिन शेष होगा, उस दिन तो परमानन्द में लीन हो जाना है। इसलिए मन को किसी ओर दोलित मत करो। सभी अवस्थाओं में उनको जकड़कर पकड़े रहो। उनको छोड़कर 'मैं' की सत्ता ही न रहे। स्वयं को संपूर्णभाव से उनकी सेविका के रूप में गढ़ने की चेष्टा करो। दास की तरह अपनी सब अहंता विसर्जन देने की चेष्टा करो। उनके अतिरिक्त अपनी अन्य कोई पृथक् सत्ता न रहे। जैसे नदी समुद्र में मिलित होकर उसके रूप-गुण को प्राप्त कर लेती है, तद्वत् तुम भी सम्पूर्णभाव से परब्रह्म को लाभ करके परमतत्त्व से अवगत हो जाओ, यही इच्छा करती हूँ।...

.....मेरा स्नेहाशीष लो। अत्र मंगल।

राधेश्याम।

आशीर्वादिका—माँ

७०

ॐ हरिः

सन्त आश्रम, वाराणसी

नारायणेषु,

प्रिय.....

तुम्हारा पत्र पाकर सुखी हुई।... तुम्हारे इतने हताश होने का कारण क्या है ? तुम्हारे इतने हताश होने का कोई कारण नहीं है। तुम्हारा सम्पूर्ण भार तो तुम्हारे गुरुजी ही वहन कर रहे हैं। इसलिए मन जिससे प्रफुल्ल रहे, उसी ओर लक्ष्य रखो। निर्भरशील होकर पथ पर चलो। हाँ, नामरूप रज्जू के द्वारा मन को खींचकर लाना ही होगा। जब मन इधर-उधर भागने लगे, तब नामरूप रज्जू के द्वारा उसको बाँधकर रखने की चेष्टा करो एवं व्यर्थ की चिन्ता जिससे न आये, उस ओर लक्ष्य रखो। यह अभ्यास करो कि साधन के समय साधन-भजन का चिन्तन करो एवं संसार के समय संसार का चिन्तन करो। संसार की सभी वस्तुओं में वे हैं—यह विचार करने की चेष्टा करो। संसार तुम्हारा नहीं है—उनका है। अपने को कर्त्ता मानने से ही गोलमाल है। जय-पराजय की चिन्ता अपने अन्दर मत लाओ। सबमें

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

 Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उनके ऊपर निर्भर करने की चेष्टा करो। मनुष्य की अपनी चेष्टा से अपनी आत्मा को जीतना संभव नहीं है। रिपु को दमन करने के लिए भगवान के ऊपर ही निर्भरशील होना पड़ेगा। फिर भी चेष्टा को जाग्रत रखना पड़ेगा... किसी विषय में हताश मत होना। तुम लोगों के पीछे गुरुशक्ति अनवरत कार्य करती है। इसलिए प्रफुल्ल मन से तुम लोग अपना-अपना काम करते रहो।

मेरा स्नेहाशीष लो। अत्र मंगल।

राधेश्याम।

आशीर्वादिका—माँ

७१

ॐ हरिः

सन्त आश्रम, वाराणसी

नारायणेषु,

प्रिय.....

तुम्हारा पत्र पाकर सुखी हुई।... गुरुप्रदत्त मंत्र निष्ठा के साथ जप करते रहो। उससे ही यथार्थ कल्याण होगा। प्राणायाम यदि न कर सको तब गुरु से मन ही मन क्षमा प्रार्थना करके नाम की संख्या बढ़ाने की चेष्टा करो। नाम ठीक तरह होने से प्राणायाम अपने आप होने लगेगा। मूल मंत्र ही हर समय जप करना अच्छा है। फिर भी यदि उसमें क्लान्त बोध करो तब मन ही मन तारक ब्रह्म नाम अर्थात् 'हरे कृष्ण, हरे राम' नाम जप सकते हो। फिर भी जितनी अधिक संख्या में एवं जितने अधिक समय तक संभव हो मूल मंत्र का ही जप करने की चेष्टा करो। पहले क्लान्त लगेगा, फिर अभ्यास हो जाने पर और क्लान्त नहीं लगेगा। स्वयं को हर समय श्री गुरुदेव की दासी समझने की चेष्टा करो। सर्वाधिक अपने वे ही हैं। सब महापुरुषों को श्रीगुरुदेव की ही भिन्न-भिन्न मूर्ति जानो। इस देह के विषय में भी ऐसा सोचो कि तुम्हारे गुरु ही मातृरूप में तुम्हारे ऊपर कृपा करने आये हैं। कोई भी रूप श्री गुरु के अतिरिक्त नहीं है, ऐसा जानो।

.....मेरा स्नेहाशीष लो। अत्र मंगल।

राधेश्याम।

आशीर्वादिका—माँ

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

७२

ॐ हरिः

सन्त आश्रम, वाराणसी

नारायणेषु,

प्रिय.....

तुम लोगों का पत्र पाकर सुखी हुई। तुम लोगों को बार-बार अनेक बार मुझे एक ही बात कहनी या लिखनी है। तुम लोग किसी अवस्था में उनको मत भूलो।

तुम लोगों के आचरण एवं व्यवहार के द्वारा ही मनुष्य जान सकता है कि तुम लोगों में से किसने कितना गुरु संग किया है। गुरु संग के द्वारा मनुष्य विनयी, मिष्ट भाषी, नम्र इत्यादि होता है। केवल बाहरी पोशाक बदलने से साधु नहीं हुआ जाता। साधु उसको ही कहा जाता है, जिसका आचरण साधू की तरह हो—वह पैन्ट-शर्ट पहने या धोती पहने। सिर पर जटाभार रखने से ही साधू नहीं हुआ जाता। जिसका माथा भगवत् बुद्धि से सबके चरणों में नत होता है, वही साधू के रूप में गण्य होता है। हम लोग कई बार अनेक साधुओं को देखकर विचार करते हैं—हाँ साधूजी पंडित हैं, अच्छी वक्तृता की योग्यता रखते हैं, उपदेश दे सकते हैं, किन्तु व्यवहार से लगता है गुरुसङ्ग नहीं किया है। गुरुसंगहीन साधू में कितना ही पाण्डित्य या बुद्धि क्यों न रहे, साधू का मिष्टत्व नहीं रहता है। साधू का आचरण नम्र, सुन्दर, मधुमय होगा। पाण्डित्य की दीप्ति हो सकती है, औद्धत्य नहीं रहेगा। उसके व्यवहार से ही दूसरे का मस्तक उसके पैरों में नत होगा—यद्यपि वयस् का भार नहीं है, धन-दौलत का प्राचुर्य भी नहीं है। स्वयं को यदि वास्तविक रूप में सच्चे मनुष्य के रूप में गठित करो, तभी मेरे परिश्रम का लाघव होगा। अहं बुद्धि को कम करो—'अहमिका हम लोगों को नत होने नहीं देती, औद्धत्य को बढ़ाती है। जिसमें जितनी अहं बुद्धि कम होगी, वह उतना गुरुमुखी, गुरु का प्रिय हो सकता है। इस दुनिया में तुम एक धागा भी लेकर नहीं आये, जाते समय लेकर भी नहीं जा सकते। तब क्यों, 'मेरा, मेरा' कहकर अपने को उससे जोड़ते हो? जब एक धागे के मालिक भी तुम नहीं हो, तो अपने अहं के कारण इस दुनिया के मालिक अपने को क्यों समझते हो? अभ्यास करो—सभी बातों में 'मेरा' न कहकर 'गुरु जी का' तथा 'ठाकुर जी का' है इस तरह कहने का। बाह्य व्यवहार में जितना संभव हो 'मेरा' न कहकर 'माँ का' ऐसा कहने का अभ्यास करो। 'मेरा' बोलते-बोलते जैसे अभ्यास हो गया है, वैसे ही 'ठाकुर जी का' ऐसा कहते-कहते भी अभ्यास हो जायेगा। याद रखो, माल तुम्हारा है, किन्तु मालिक तुम नहीं हो। सभी बातों

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

का मालिक उनको जानकर, उसी भाव से सबके साथ आचरण, व्यवहार करने की चेष्टा करो। तुम्हारी माँ भी सब बातें कहने एवं लिखने के मूल में एक बात ही स्पष्ट करना चाहती हैं कि **तुम लोग वास्तविक रूप में साधू बनो—केवल बाह्य व्यवहार में नहीं, आन्तरिक आचरण में भी।** एक दिन जब उनके पास लौट जाऊँगी या जाओगे—अपने कर्मफल के हिसाब देकर जिससे उन्हें खुशी कर सकें। सुन्दर, निर्मल, साधू आचरण उनको आनन्द देता है। तुम लोगों के कर्म, आचरण की जवाबदेही भी तुम्हारी माँ को ही देनी होगी। जीवन वृक्ष को सुन्दर फूल से सुशोभित करने पर वृक्ष का काँटा फूल में न लगे। अर्थात् देखो, गुलाब के वृक्ष पर काँटा है, किन्तु फूल में नहीं है, इसी तरह अपने जीवन में जितना भी मालिन्य रूपी काँटा रहे, सबको धो पोंछकर हम लोग शेष पर्यन्त एक सुन्दर फूल होकर ही उनके चरणों में सुशोभित हों—यही हो हमारा व्रत, साधना। इसके लिए चाहिए—सारल्य और सभी के साथ मधुर व्यवहार। तुम्हारा बाह्य आचरण ही तुमको मनुष्य के निकट खींच लायेगा। **भीतर केवल मधुमय होने से नहीं चलेगा—अन्तर बाहर मधुमय होना पड़ेगा।** किसी को क्लेश देकर, आघात देकर कोई बात मत बोलो। प्रतिध्वनि की तरह किसी समय वह किसी न किसी भाव से प्रत्याघात करेगा। यदि किसी ने किसी समय तुम्हारे साथ कठिन व्यवहार किया है, उसे भूलकर मन ही मन दोनों हाथ बढ़ाकर उन प्रभु को आलिंगित करके अपना लेने की चेष्टा करो। तब देखोगे कि समयानुसार शत्रु भी तुम्हारा मित्र हो गया है। दुनिया में तुम्हारा शत्रु कोई भी नहीं है। **सभी जब भगवान तथा गुरुजी के प्रतिरूप हैं, तब कोई तुम्हारा शत्रु नहीं है यह जानकर सभी को प्राण भरकर प्रेम करो—तभी जीवन सार्थक होगा।**

स्नेहाशीष लो। अत्र मंगल।

राधेश्याम।

आशीर्वादिका—माँ

७३

ॐ हरिः

सन्त आश्रम, वाराणसी

१०.१२.६१

नारायणेषु,

प्रिय.....

तुम्हारा पत्र पाकर सुखी हुई।... सुन्दर ठाकुरघर बना है यह जानकर आनन्दित हुई। केवल ठाकुरघर सुन्दर होने से काम नहीं चलेगा। सुन्दर की आराधना से तुम्हारा मन भी जिससे सुन्दर हो इसके लिए ध्यान रहे। बीच रात में जप करना

CC-0. Kanni Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हम लोगों का नियम नहीं है। ब्रह्म मुहूर्त में अर्थात् भोर ४ बजे जप करने की चेष्टा करना। नियम का व्यतिक्रम करने से ही तुम भय पा गये हो। ब्रह्म मुहूर्त में जप करना ही प्रशस्त है। जप के समय नाना भय आ सकते हैं, विचलित मत होना—और ज्यादा जप करते रहना, तभी भय दूर हो जायेगा। इन समस्त भयों को योगविघ्न जानो—साधन पथ में कई बार ये सब आते हैं।...

मेरा स्नेहाशीष लो। अत्र मंगल।

राधेश्याम।

आशीर्वादिका—माँ

७४

ॐ हरिः

सन्त आश्रम, वाराणसी

२०.१२.६३

नारायणेषु,

प्रिय.....

तुम्हारा पत्र पाकर सुखी हुई।... बाबा की कृपा से तुम्हारा मानव जन्म सार्थक हो यही प्रार्थना करती हूँ। मिथ्या माया-मोह काटकर जिससे सत्य का आलोक तुम्हारे जीवन में रेखापात करे, इसके लिए ही साधना करते रहो। तुम्हारी चेष्टा, गुरु जी का आशीर्वाद—इसी से जीवन जययुक्त होगा। इस दुःखमय संसार में मनुष्य शान्ति या आनन्द नहीं पा सकता—जो पाता है, वह क्षणिक सुख मात्र है। क्षणिक सुख और आनन्द में बहुत पार्थक्य है। उनका नाम तुम्हारे चलने के पथ का पाथेय हो। उनका आशीर्वाद तुम्हारे जीवन की यष्टि (सहारा) बने। भय नहीं है, आगे बढ़ते रहो। फिसलन भरे पथ पर हाथ पकड़ने के लिए वे हैं। नाम के आलोक में पथ आलोकित हो उठेगा। निश्चिंत होकर अभीष्ट पथ पर आगे बढ़ते रहो—किसी भी प्रकार का मोह आकर संकल्पच्युत न कर सके, इस ओर लक्ष्य रखो। पथ में बाधाविघ्न रहेगा ही—इससे निरुत्साह मत होना। सभी के जीवन में उनकी वंशी का स्वर गूँजता है—वंशी का स्वर लक्ष्य करके चलते रहो। वे दूर नहीं हैं—अत्यन्त निकट, अत्यन्त अपने हैं। आज के दिन मेरा स्नेहाशीष लो। जीवन पात्र उनकी कृपा से भर लो—दृष्टि प्रसारित करो—देखोगे कि करुणामय की करुणा सम्पूर्ण आकाश एवं वायुमण्डल में व्याप्त है। उनकी इच्छा के लिए अपनी इच्छा का बलिदान देना होगा।...

अत्र मंगल।

राधेश्याम।

आशीर्वादिका—माँ

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

७५

ॐ हरिः

सन्त आश्रम, वाराणसी

नारायणेषु,

प्रिय.....

तुम्हारा पत्र पाकर सुखी हुई।... तुम लोगों की पूजा अच्छी तरह सुसम्पन्न हुई है, इस संवाद को जानकर आनन्दित हुई। तुम्हारे दर्शन की बात भी जानी। इस ओर जितना मन लगाओगे, उतनी ही ये समस्त अनुभूतियाँ और अधिक लाभकर पाओगे। मन को सम्पूर्ण रूप से उनकी ओर लगाने की चेष्टा करो। सांसारिक कर्तव्य सभी करते रहो। किन्तु निर्लिप्त भाव से—पद्मपत्र जैसे जल में रहते हुए भी जल के स्पर्श से अभिभूत नहीं होता या विकारग्रस्त नहीं होता। तद्वत्, तुम स्वयं यन्त्र मात्र हो, यन्त्री तुमको जिस भाव से चला रहे हैं—तुम उसी भाव से चल रहे हो। तुम हर समय यह बात याद रखो कि तुम्हारा जो कुछ है, सब तुम्हारी माँ का है। देह से लेकर, तुम्हारी स्त्री, पुत्र, परिवार, सब वस्तुओं के रक्षणावेक्षण का भार केवल तुम्हारे ऊपर है। जिस वस्तु का भार तुम्हारे ऊपर है, उसको सुन्दर रूप में सम्पन्न करने की चेष्टा करते रहो।

मेरा स्नेहाशीष लो। अत्र मंगल।

राधेश्याम।

आशीर्वादिका—माँ

७६

ॐ हरिः

सन्त आश्रम, वाराणसी

नारायणेषु,

प्रिय.....

तुम्हारा पत्र पाकर सुखी हुई।... साधन भजन के लिए नशे का प्रयोजन नहीं है। साधू लोग जो गाँजा खाते हैं, वह हिमालय के हिमाच्छादित पहाड़ पर शीत से शरीर को गर्म रखने के लिए ही इन सब चीजों को खाने का प्रयोजन समझते हैं। कई बार अनेक तरह के प्राणायामों के द्वारा भी शरीर ठण्डा-गरम होता है। इसके लिए भी इन सबकी जरूरत पड़ती है। सभी कुछ अधिकारी-भेद के ऊपर निर्भर करता है। साक्षात् रूप से इसका स्पष्टीकरण कर लो। शाक्त और वैष्णव साधना का प्रश्न भी अधिकारी-भेद के ऊपर ही निर्भर करता है।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जिस तरह से ध्यान के द्वारा तुम्हारा मन:संयोग अधिक हो, उसी तरह ध्यान करने की चेष्टा करो। वास्तव में विश्वव्यापी एक आनन्द का स्त्रोत है—इसको जानने के लिए ही साधना है—तुम उसी का एक आभास मात्र पाते हो। ध्यान जितना प्रगाढ़ होगा, आनन्दानुभूति भी उतनी ही अधिक होगी। तुमने तो माँ का हाथ पकड़ा ही हुआ है, तब फिर पिछड़ जाने का भय क्यों? माँ आगे ले जाना ही जानती हैं, पीछे ले जाना नहीं जानतीं। अस्थिर मन को एकत्र करते-करते एक बिन्दू में लाकर एकाग्र करना होगा। बिन्दू में ही सिन्धू का दर्शन मिल जायेगा। ...जिस कामना के द्वारा बन्धन होता है, वह सकाम है और जिस कामना के द्वारा मुक्ति की ओर अग्रसर हुआ जाता है, उसी को निष्काम कहा जाता है। साधारण रूप में इस अर्थ को समझने से ही साधक के कर्म का अर्थ समझ सकोगे। उनकी प्रीत्यर्थ जो कर्म है, वह बन्धन नहीं करता, मुक्ति का सन्धान कराता है। गीता को बार-बार पढ़ते रहो—धीरे-धीरे सहज, सरल हो जायेगा। सर्वप्रथम जो कुछ आरंभ किया जाता है, वह कठिन एवं दुर्बोध्य लगता है, बाद में वह धीरे-धीरे सहज-सरल हो जाता है। एक ही साथ ज्यादा समझने की चेष्टा मत करना—पढ़ते-पढ़ते समझ सकोगे। गुरु कृपा से सभी कुछ सहज, सरल हो जाता है। अपनी माँ से भय करने का कोई कारण नहीं है। मातृरूप में ही सबसे अधिक कोमला जानो—वरन् गुरुरूप में कुछ कठोरता है। तुम्हें सोचने की कोई जरूरत नहीं है—छोटा शिशु जैसे माँ के ऊपर सब कुछ छोड़कर निश्चिन्त रहता है, वैसे ही तुम भी निश्चिंत रहने की चेष्टा करो। तुम्हारे मन में जब भी जो प्रश्न आये, नि:संकोच रूप में करते रहो।

मेरा स्नेहाशीष लो। अत्र मंगल।

राधेश्याम।

आशीर्वादिका—माँ

७७

ॐ हरि:

सन्त आश्रम, वाराणसी

नारायणेषु,

प्रिय.....

तुम्हारा पत्र पाकर सुखी हुई।... किसी भी अवस्था में विचलित मत होना। सब ओर से विचार करके कोई एक स्थिर सिद्धांत लेने की चेष्टा करो। उनकी इच्छा के बिना वृक्ष का एक पत्ता भी नहीं हिलता। सुख-दु:ख दाता भगवान् हैं। कारण, अपने-अपने कर्म के अनुसार भगवान ने प्रत्येक का सुख-दु:ख निश्चित

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

 Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कर दिया है। सुख-दुःख दोनों के द्वारा ही भगवान भोग काट देते हैं। और इस भोग के कट जाने पर ही भगवान जीव को शुद्ध, सुन्दर, निर्मल कर देते हैं। इसलिए **कालस्त्रोत के अनुसार कोई भोग आ भी जाय, तो उससे विचलित मत होना**— भगवान् तुमको जब जहाँ रखना अच्छा समझेंगे, वहीं रखेंगे एवं आस-पास का वातावरण भी उसी तरह कर देंगे। केवल तुम शिशु की तरह उनके ऊपर अपने को छोड़ दो।

.....मेरा स्नेहाशीष लो। अत्र मंगल।

राधेश्याम।

आशीर्वादिका—माँ

७८

ॐ हरिः

सन्त आश्रम, वाराणसी

१८.११.९२

नारायणेषु,

प्रिय.....

तुम्हारा पत्र पाकर सुखी हुई।... तुमने यह बात ठीक ही समझी है, सब दुःखों का मूल 'अहं' है। आमार का 'आ' एवं तोमार का 'तो' हटा देने पर बचेगा 'मा' 'र' (माँ का)। **सब कुछ माँ का समझने पर अन्य कोई अशान्ति नहीं रहती। अर्थात् 'माँ' माने भगवान परब्रह्म।** फिर भी यह यदि ठीक-ठीक अनुभव किया जाय, तब देखोगे कि जीवन में कोई अशान्ति तुमको आलोड़ित नहीं कर सकती। तुमने जो भगवत् नाम पाया है, उसे यदि निष्ठापूर्वक जप सको, तब तुम अपने कल्पित राज्य में ही जाओगे।... अच्छा रहना भी अपने ही हाथ में है। कभी भी किसी बात को लेकर गुस्सा मत करो। मन को शान्त रखने की चेष्टा करो। तब शान्ति का अभाव नहीं होगा। **क्रोध ही अशान्ति का बहुत बड़ा कारण है— इसको जीत लेने से जीवन के अनेक क्षेत्रों में जयी हुआ जा सकता है।**

मेरा स्नेहाशीष लो।... अत्र मंगल।

राधेश्याम।

आशीर्वादिका—माँ

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

७९

ॐ हरिः

सन्त आश्रम, वाराणसी
२४.११.९२

नारायणेषु,

प्रिय.....

तुम्हारा पत्र पाकर सुखी हुई।... एक बात हर समय याद रखो, आश्रम में यदि आना है, तो ठाकुर जी को प्रेम करने के लिए ही आना। यह जान लो कि ठाकुर जी सबसे ज्यादा स्वार्थी हैं। वे चाहते हैं कि उनको जो प्रेम करे, वह स्वयं को सम्पूर्ण रूप से आत्मसमर्पण करके ही प्रेम करे। वे प्रेम के भागीदार को सह्य नहीं करते हैं। ठाकुरजी के प्रति प्रेम उत्पन्न होने पर ही आश्रम जीवन ग्रहण करना संभव है। उनके प्रति प्रेम उत्पन्न हो, इस ओर चेष्टा रखो। शुरू में ही हम उन्हें सम्पूर्ण रूप से प्रेम कर सकेंगे, ऐसा नहीं है, फिर भी हम लोग उन्हें प्रेम कर सकें, इस ओर हम लोगों को सर्वदा चेष्टा रखनी होगी। यदि भगवान को वास्तविक रूप में प्रेम किया जाय, तब सर्वभूतों में प्रेम अपने आप उत्पन्न होगा। आश्रम जीवन की साधना—किसी व्यक्ति विशेष के प्रति प्रेम नहीं है—सभी के प्रति प्रेम है।

मेरा स्नेहाशीष लो। अत्र मंगल।

राधेश्याम।

आशीर्वादिका—माँ

८०

ॐ हरिः

सन्त आश्रम, वाराणसी
११.१२.९३

नारायणेषु,

प्रिय.....

तुम लोगों का पत्र पाकर सुखी हुई। बीच-बीच में तुम लोगों का पत्र मिलने से अच्छा लगता है। भगवत् नाम लेकर उनकी ओर अग्रसर होने की चेष्टा करो।

...तुम्हारे पत्र से तुम्हारे प्रति भगवान् की कृपा जानकर बहुत अच्छा लगा। भगवान् ने ही कृपा करके तुमको गुरु मूर्तिरूप में दर्शन दिये हैं—यह तुम्हारे प्रति उनकी अहेतुक कृपा है ऐसा समझो। वे तो हर पल कृपा करते ही जा रहे हैं, किन्तु हम लोग उसका अनुभव नहीं कर पा रहे हैं। उन्हीं की कृपा से तुम उनको दृष्टिगोचर रूप में अनुभव कर सके हो। तुम्हारा यह दर्शन यथार्थ में उनकी कृपा

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

का दर्शन है। और तुम्हारे... इस रूप में रात्रि के समय अकेले-अकेले बाहर बैठे रहना भी उचित नहीं है। अपने शरीर की ओर ध्यान रखो—खाना-पानी ठीक तरह से करो। ...सबका सेवायत्न जो कर रही हो, वह भी भगवत् बुद्धि से करो। सोचो कि भगवान ही इन सब विभिन्न मूर्ति रूप में तुम्हारा सेवायत्न स्नेह प्रेम लेने आये हैं। जब अन्य किसी को परोस करके खिलाओगी तब अपने को माँ अन्नपूर्णा के रूप में अनुभव करो अर्थात् तुम स्वयं माँ अन्नपूर्णा हो—दूसरे लोग तुम्हारे निकट बालगोपाल भाव से प्रसाद पा रहे हैं। तुम्हारे अन्दर भी जो भगवान हैं, उनको कष्ट मत देना।... जितना नाम करोगी, उतना तुम्हारा ...मंगल होगा। अच्छे-अच्छे ग्रन्थ अर्थात् सद्ग्रन्थ पढ़ने की चेष्टा करो। ...वे हर समय साथ-साथ हैं, उसका तो सुन्दर मधुर प्रमाण उन्होंने तुम्हें दिया है। उनके प्रति विश्वास रखकर मन ही मन नाम जपते हुए आत्मीय-स्वजन, प्रिय-अप्रिय, शत्रु-मित्र सबसे प्रेम करते रहो—सभी के साथ मधुर व्यवहार करना। इसके द्वारा ही तुम मेरे लिए प्रिय से भी प्रियतम हो जाओगी। वे हर समय पास ही पास हैं, इस विषय में कोई सन्देह नहीं है। जीवन मार्ग में हर समय उनका स्मरण-मनन करते हुए पथ पर चलो। हर अवस्था में उनको बिल्कुल अपना समझना। उनकी कृपा की अनुभूति यदि न भी मिले, फिर भी जानो कि वे कृपा करते ही जा रहे हैं। कृपा की अनुभूति न होने में हमारे मन की निर्मलता का अभाव ही कारण जानो। उनके स्मरण-मनन-शरणागति के द्वारा ही यह अभाव कट जाता है।

...तुमको एवं तुम्हारे परिवार को अपना स्नेहाशीष ज्ञापित करती हूँ।

अत्र मंगल।

राधेश्याम।

आशीर्वादिका—माँ

८१

ॐ हरिः

सन्त आश्रम, वाराणसी

नारायणेषु,

प्रिय.....

तुम लोगों का पत्र पाकर खुशी हुई। हम लोगों में से अनेकों के मन में एक दोषारोप झलकता है—भगवान हम लोगों के ऊपर कृपा क्यों नहीं करते हैं? याद रखो, भगवान हम लोगों के ऊपर कृपा करने के लिए दोनों हाथ उठाये हुए हैं। किन्तु हम लोगों में कृपा ग्रहण करने योग्य अवनत मस्तक कहाँ है? हृदय का दरवाजा हम लोग अर्गलाबद्ध करके रखे हुए हैं—मन का द्वार उनके लिए खुला न रखने से

CC-0. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कृपा आयेगी कैसे? दरवाजा, जंगला बन्द करके रखने पर क्या बाहर का सौन्दर्य देखा जाता है, नहीं, उपलब्ध किया जा सकता है? कृपामय किन्तु हमारे ऊपर कृपा करते ही जा रहे हैं—हम लोगों के मन के दरवाजे एवं जंगले रुद्ध हैं, इस कारण कृपा की उपलब्धि नहीं कर पा रहे हैं। मन को सुन्दर, निर्मल, उदार करो—तभी देखोगे कि तुम उनकी कृपा से स्नात होकर उनकी गोद में ही हो जैसे एक छोटा शिशु अपनी माँ की गोद में रहता है—उसी तरह आराम एवं प्रेममय दृष्टि से तुम देखोगे कि दुनिया का सकल ऐश्वर्य तुम्हारे मन के द्वार पर बिखरा पड़ा है। तब तुम ही होगे दैवी ऐश्वर्य के मालिक, जिसको दोनों हाथों से सबको वितरित करते हुए भी तुम दिवालिया नहीं हो पाओगे। 'जितना दान करोगे, उतना बढ़ जायेगा'—इस बात की सार्थकता उपलब्ध कर सकोगे। कितना मजा है न, इस अपार ऐश्वर्य का मालिक होना। मन का प्रसार करो, सबसे प्रेम करो, किसी का दोष मत देखो—सबके अन्दर जो भगवान हैं, उनको जानने, देखने की चेष्टा करो तभी उनके ऐश्वर्य का स्वामित्व पाओगे। तुम लोग उनके ऐश्वर्य के मालिक बनो, मैं भी यही आशीर्वाद करती हूँ।

अत्र मंगल।

राधेश्याम।

आशीर्वादिका—माँ

८२

ॐ हरिः

सन्त आश्रम, वाराणसी

नारायणेषु,

प्रिय.....

तुम्हारा पत्र पाकर सुखी हुई।... तुम्हारे जीवन के ७० वर्ष कट गये, इसलिए तुम्हारा कुछ नहीं होगा—यह तुम्हारी भूल धारणा है। भगवत् कृपा से अनन्त जीवन की कर्मराशि एक मुहूर्त में कट सकती है। विशेष रूप से गुरुशक्ति तुम्हारे पीछे विद्यमान है। तुम सर्वदा इस ऋषि-धारा के द्वारा अनुप्राणित होने की चेष्टा करो। गुरु परम्परा शक्ति तुम लोगों के चारों ओर विद्यमान है, इसलिए तुम लोगों को और क्या चिन्ता? केवल जो साधन पाया है, उसे निष्ठापूर्वक करने की चेष्टा करो। 'नाम' की महिमा अपार है। फिर भी सत् चेष्टा तो करनी ही पड़ेगी। चेष्टा के पीछे भगवान का आशीर्वाद होता है।

.....स्नेहाशीष लो। अत्र मंगल।

राधेश्याम।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection. आशीर्वादिका—माँ

 Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

८३

ॐ हरिः

सन्त आश्रम, वाराणसी

४.३.९५

नारायणेषु,

प्रिय.....

तुम्हारा पत्र पाकर सुखी हुई।... बाबा (श्री सन्तदासजी) का स्मरण-मनन करते हुए अच्छे रहने की चेष्टा करो। वास्तव में अच्छे रहने का अर्थ ही है उनको स्मरण-मनन करते हुए पथ पर चलना। स्वयं अच्छे रहने की चेष्टा करो—ऐसा होने पर किसने क्या कहा, इसको लेकर मन खराब नहीं होगा। अपने को सभी अच्छा कहेंगे, यह आशा मत करो एवं इसके द्वारा भोग भी नहीं कटता। यदि परोक्ष में भी कोई तुम्हारा दोष दिखलाये तो वही तुम्हारा वास्तविक बन्धु है। दूसरे का दोष न देखने या दोष दीखने पर भी मन ही मन द्वेष न करने की आप्राण चेष्टा करो या व्रत ग्रहण करो। उत्सव के बाद नव वर्ष आरम्भ हुआ, इसमें कुछ बातों को व्रत रूप में पालन करने की चेष्टा करो।...

मेरा स्नेहाशीष लो। अत्र मंगल।

राधेश्याम।

आशीर्वादिका—माँ

८४

ॐ हरिः

सन्त आश्रम, वाराणसी

नारायणेषु,

प्रिय.....

तुम्हारा पत्र पाकर सुखी हुई। मैंने तो पहले ही बताया था कि तुम लोगों का आमंत्रण मैंने स्वीकार किया है। स्थूलतः उपस्थित न होने पर भी जहाँ पुत्र होता है, वहीं माँ होती है यह जानो। इसलिए भगवान के ऊपर निर्भर करके तुम लोग अपना कार्य करते रहो। जहाँ भगवत् नामकीर्तन होता है, वहीं पर वे होते हैं ऐसा जानो। ...तुम लोग जो गीता जयन्ती कर रहे हो, पार्थ सारथी ने ही उसकी डोर संभाल ली है—इसलिए चिंता क्या है? उनके ऊपर निर्भर करके ही कार्य करने की चेष्टा करो। किसी वस्तु को 'मेरी' न कहकर 'उनकी' समझकर उनके ऊपर निर्भर करने की चेष्टा करो। 'मेरी' कहकर संकीर्णता की गाँठ जितनी ही खींचोगे उतना ही दुःख है। 'उनका' कहकर उनके ऊपर जितना निर्भर कर सकोगे, उतनी

CC-0. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ही प्रशान्ति है। वर्तमान युग में उनके ऊपर निर्भर करके रहने के अलावा अन्य कोई गति नहीं है। उनके ऊपर निर्भरशील व्यक्ति ही शांति पायेगा। जब भी जो कुछ भी क्यों न करो, उनके ऊपर निर्भर करके, करते रहने की चेष्टा करो। कर्म करते रहो, किन्तु फल की आकांक्षा मत करो।

मेरा स्नेहाशीष लो। अत्र मंगल।

राधेश्याम।

आशीर्वादिका—माँ

८५

ॐ हरिः

सन्त आश्रम, वाराणसी

नारायणेषु,

प्रिय.....

तुम्हारा पत्र पाकर सुखी हुई।... माँ सर्वदा सब समय तुम्हारे साथ-साथ हैं—इसलिए तुम विदेश में हो यह समझकर मन को चंचल मत करना। माँ का देश विराट् है—पुत्र जहाँ है, माँ भी वहीं है। माँ और बेटे के सम्पर्क से गुरु और शिष्य का सम्पर्क बहुत विराट् है—सांसारिक माँ एवं पुत्र का सम्पर्क छिन्न हो जाता है, किन्तु गुरु एवं शिष्य का सम्पर्क कभी भी छिन्न नहीं होता, ऐसा समझो। तुम्हारे प्रति अणु-परमाणु, प्रति रक्त-बिन्दू के अन्दर माँ हैं। जितना नाम जपोगे, उतना ही प्रति रक्त-बिन्दू के अन्दर वह नाम प्रस्फुटित होगा। तुम्हारा देह-कोष, प्राण-कोष सब नाममय हो जायेगा।

.....मेरा स्नेहाशीष लो। अत्र मंगल।

राधेश्याम।

आशीर्वादिका—माँ

८६

ॐ हरिः

सन्त आश्रम, वाराणसी

नारायणेषु,

प्रिय.....

तुम्हारे पत्र को पाकर सुखी हुई।... तुम यदि ठीक से पुकार सको, तो मेरे कान में वह क्यों नहीं पहुँचेगा? पुकारने की तरह पुकारने से निश्चय ही वे सुनते हैं एवं यह विश्वास लेकर ही पुकारो कि वे तुम्हारी पुकार सुनते हैं और पुकार न सुनने का कोई कारण नहीं है, कारण अन्तर में अन्तस्थल में तो वे ही

CC-0. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हैं। उनको कभी भी दूर की वस्तु मत समझना—उनको ही सबसे अधिक अपना जानो।

मेरा स्नेहाशीष लो। अत्र मंगल।

राधेश्याम।

आशीर्वादिका—माँ

८७

ॐ हरिः

सन्त आश्रम, वाराणसी

नारायणेषु,

प्रिय.....

तुम्हारा पत्र पाकर सुखी हुई।... तुम्हारी दृष्टि से जो करने योग्य चेष्टा है, उसे अवश्य ही करते रहो, 'अहंता' रहने तक चेष्टा न करने से अलसता घेर लेती है। इस ओर खूब लक्ष्य रखो। साधक के जीवन में अनेक तूफान आते हैं। लेकिन उसे कुशल नाविक की तरह पतवार पकड़कर अर्थात् मन स्थिर करके रहना पड़ता है—इससे कितने ही आघात क्यों न लगें, वह विचलित न हो सके। धैर्यरूप रज्जू हाथ से स्खलित न हो। सावधान!—मन निर्मल रहे।

...स्नेहाशीष लो। अत्र मंगल।

राधेश्याम।

आशीर्वादिका—माँ

८८

ॐ हरिः

सन्त आश्रम, वाराणसी

नारायणेषु,

प्रिय.....

तुम्हारे पत्र को पाकर सुखी हुई।... तुम लोगों की पूजा सुन्दर ढंग से हुई है यह जानकर मैं भी सुखी हुई। तुम लोग स्वयं एक-एक शुद्ध सुन्दर निर्मल फूल होओ, मैं यही इच्छा करती हूँ। सुन्दर निर्मल मन में भगवान का रूप झलकता है। वे सर्वत्र ही विद्यमान हैं—जैसे मलिन दर्पण में प्रतिबिम्ब नहीं झलकता, वैसे ही अपरिष्कृत मन में उनकी छाया प्रस्फुटित नहीं होती। उनको देखने के लिए सुन्दर निर्मल स्वच्छ दर्पणवत् मन की जरूरत है। 'नाम' जपते-जपते मन सुन्दर निर्मल होगा। इसलिए नाम के स्मरण से मन को भरपूर रखने की चेष्टा करो। वे तुम्हारे अन्तर में ही हैं, बाहर नहीं हैं। तुम लोगों की वहाँ की अवस्था भी ज्ञात है। देखते

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रहो—किसी विषय में लिप्त मत होना—कुछ भी स्थायी नहीं है, इसका भी परिवर्तन होगा।

...मेरा स्नेहाशीष लो। अत्र मंगल।

राधेश्याम।

आशीर्वादिका—माँ

८९

ॐ हरिः

सन्त आश्रम, वाराणसी

नारायणेषु,

प्रिय.....

तुम्हारा पत्र पाकर सुखी हुई।... तुम्हारे साधन भजन की सुविधा-असुविधा की सब बातों से अवगत हुई। भगवान ने तो सुविधा-असुविधा की सब बातों को जानकर के ही तुम्हें ग्रहण किया है। इसलिए तुम्हें चिन्ता क्या? तुमने तो जो नाम पाया है, उसे निष्ठापूर्वक जपने की चेष्टा करते रहो। साधन भजन के मार्ग में नाना प्रकार के बाधाविघ्न तो आते ही हैं—अपनी चेष्टा के द्वारा उसे काटने की कोशिश करो। हाथ से कोई कार्य क्यों न करो, मन ही मन हर समय 'नाम' जपते रहने की चेष्टा करो।...

मेरा स्नेहाशीष लो। अत्र मंगल।

राधेश्याम।

आशीर्वादिका—माँ

९०

ॐ हरिः

सन्त आश्रम, वाराणसी

नारायणेषु,

प्रिय.....

तुम्हारे पत्र को पाकर सुखी हुई।... मिलन के बाद ही विरह—यह भी तो स्वतःसिद्ध है। विरह होगा यह जानकर भी मनुष्य मिलन की आशा में रहता है। विरह का अवसान करने के लिए ही साधन भजन है—जो केवल मिलन का आनन्द ही देगा—विरह की व्यथा नहीं देगा। तुम लोगों ने वास्तव में वही साधन पाया है—किन्तु साधना कर रहे हो या नहीं, इसी ओर लक्ष्य रखो। यह तो जानते हो कि गन्ने के टुकड़े को केवल मुख में रखने से ही उसका स्वाद नहीं पाया जाता—स्वाद के लिए उसका चर्वण करना पड़ता है—ऐसे ही जो साधन पाया है,

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

 Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उसकी साधना करनी पड़ेगी, तभी तो ईप्सित (वांछित) पथ पर पहुँच सकते हो? हताश होने से कुछ भी नहीं होगा, मन में जोर रखकर अभीष्ट पथ पर अग्रसर होना पड़ता है।

...स्नेहाशीष लो। अत्र मंगल।

राधेश्याम।

आशीर्वादिका—माँ

९१

ॐ हरिः

सन्त आश्रम, वाराणसी

१३.१२.९०

नारायणेषु,

प्रिय.....

तुम्हारा पत्र पाकर सुखी हुई... जानते हो, अनेक जन्मों की साधना के फलस्वरूप ब्राह्मण वंश में जन्म होता है। मनुष्य होने के साथ ही साथ ब्राह्मण कुल में जन्म होना दुर्लभ था। कारण जो लोग ब्रह्म को जानते थे, वे ही ब्राह्मण होते थे—अतः समझ लिया न? कुल के सम्मान को रखने के लिए भी तुम्हें ब्रह्म को जानना होगा। युगधर्म जो भी हो तुम अपने सनातन-धर्म की रक्षा करते रहने की चेष्टा करो। काल स्रोत में यदि सभी प्रवाहित हो जायेगा, तो पतवार कौन पकड़ेगा? इसलिए साधना के द्वारा हलधर को अपने अन्दर खोजना होगा।...

...मेरा स्नेहाशीष लो। अत्र मंगल।

राधेश्याम।

आशीर्वादिका—माँ

९२

ॐ हरिः

सन्त आश्रम, वाराणसी

१७.८.५०

नारायणेषु,

प्रिय.....

तुम्हारा पत्र पाकर सुखी हुई।... तुम्हारे संसार में ही वे विद्यमान हैं—उनको बाहर खोजने के लिए मत जाना। प्रत्येक व्यक्ति में वे विराजित हैं—यह कल्पना नहीं है, यह सत्य है। इस सत्य का आविष्कार करने के लिए ही साधन

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भजन है। तुम ध्यान करो, सबके अन्दर वे हैं—जिसके प्रति भी तुम्हारी कुछ विद्वेष-बुद्धि है, उसको ही उनका रूप समझकर ध्यान करो। यह जान लो कि संसार में कोई किसी को दुःख नहीं दे सकता। अपने-अपने पूर्व-पूर्व जन्मार्जित कर्म के फलस्वरूप मनुष्य इस जन्म में सुख-दुःख भोग करता है। कोई किसी को भी दुःख या सुख नहीं दे सकता—मात्र निमित्त होता है। समय अच्छा होने पर शत्रु भी मित्रवत् आचरण करता है और समय प्रतिकूल होने पर मित्र भी शत्रुवत् आचरण करता है—सभी कुछ अपने समय एवं कर्मफल के ऊपर निर्भर करता है। निर्मल प्रेम के द्वारा सभी के चित्त को जीतने की चेष्टा करना। अपना दोष पहले संशोधन करो, तभी सहज ही दूसरे को अच्छा कर सकते हो। हममें दोष है, इसीलिए मनुष्यों को सत् उपदेश दे करके भी सहज ही जय नहीं कर पाते। पहले जयी बनो, फिर जय करने की चेष्टा करो। जब भी मन में क्रोध का उद्रेक हो, 'शिव शिव' उच्चारण करना। क्रोध के समय उत्तर-प्रत्युत्तर मत देना। क्रोध को जीतने के बाद—प्रयोजन समझकर क्रोध कर सकते हो, इससे कोई आपत्ति नहीं है। तुम्हारी चेष्टा रहने पर उनकी कृपा अवश्य ही मिलेगी।

...मेरा स्नेहाशीष ग्रहण करो। अत्र मंगल।

राधेश्याम।

आशीर्वादिका—माँ

९३

ॐ हरिः

सन्त आश्रम, वाराणसी

१९.९.५१

नारायणेषु,

प्रिय.....

तुम्हारा पत्र पाकर सुखी हुई।... तुम लोगों के मंगल की चिन्ता ही मेरा काम है। यदि पारिवारिक कारण से मुझे भूल जाते हो तो भूल जाओ—केवल उनको मत भूल जाना—जिनको भुला देने पर जगत् भूल होती है (अर्थात् संसार में सारी भूलें होती हैं)—और उनको पाने से जगत् को पाया जाता है। उनके ही अन्दर मैं हूँ, इसीलिए उनको दृढ़ रूप से पकड़कर रहो—और दूसरों को पकड़ना सिखाओ। उनको छोटी सीमा में आबद्ध मत करो।... दूसरा जो कुछ समझता है, समझने दो, लेकिन तुम गलत समझकर कष्ट मत पाना... और कष्ट मत देना। तुम लोगों का कष्ट मुझे आघात देता है। सर्वावस्थाओं में उनको आश्रय-स्थल समझकर उन्हीं के सीने से लग जाओ। याद रखो, सुख-दुःख दाता एकमात्र वे ही हैं। मनुष्य

CC-0. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

 Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

के ऊपर दोषारोपण करना अर्थात् अपने आपको छोटा करना है—**प्रेम का प्रसार करो, मन को उन्नत करो।**

मेरा स्नेहाशीष लो। अत्र मंगल।

राधेश्याम।

आशीर्वादिका—माँ

९४

ॐ हरिः

सन्त आश्रम, वाराणसी

१५.२.५२

नारायणेषु,

प्रिय.....

तुम्हारा पत्र पाकर सुखी हुई।... जब जिस अवस्था में भगवान तुम लोगों को रखें, सन्तुष्ट चित्त से वही अवस्था तुम लोगों के पक्ष में परम मंगलजनक है यह समझकर, मन में सन्तोष भाव रखो। मन को सहज, सरल, सुन्दर रखो। तुम्हारा शरीर स्वस्थ नहीं है, किन्तु मन अस्वस्थ न रहे, उसके प्रति विशेष लक्ष्य रखो। श्री भगवान् सर्व घटों में सर्व स्थानों पर विद्यमान हैं एवं जिन-जिन रूपों में तुम्हारे पास सेवायत्न लेने के लिये हैं, उनके उन विशेष रूपों का यत्न (सेवा) विशेष करके, करते रहो। उसी से भगवान् तुम्हारे प्रति सन्तुष्ट होंगे। किसी के प्रति विद्वेष भाव मत रखना। **मनुष्य से विद्वेष करने का अर्थ है, उनसे विद्वेष करना, यह बात याद रखो।** साध्यानुयायी सभी का सेवायत्न करते रहो, इससे स्वयं सुखी होओगे।

मेरा स्नेहाशीष लो।... अत्र मंगल।

राधेश्याम।

आशीर्वादिका—माँ

९५

ॐ हरिः

सन्त आश्रम, वाराणसी

नारायणेषु,

प्रिय.....

तुम्हारा पत्र पाकर सुखी हुई।... मन के अन्दर सन्तोष भाव लाने की चेष्टा करो, तब अपने को असहाय नहीं समझोगे। सन्तोष भाव लाने के लिए मन ही मन उनका नाम-जप करना चाहिए। सत्संग के अभाव में सद्ग्रन्थ पाठ

CC-0. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

करो। तुम लोगों को निर्मल करने के लिए ही वे नाना प्रकार के कर्मभोग देते हैं यह जान लो। उसे यदि प्रसन्न चित्त होकर सह सको, तब यह भोग शीघ्र ही कट जायेगा। 'नाम' जपो इससे सह्यशक्ति बढ़ेगी हर समय समझो कि भगवान् तुम्हारे माध्यम से खेल कर रहे हैं। अपने को द्रष्टा समझकर उनका खेल देखने की चेष्टा करो। अप्रिय अवस्था से अभिभूत मत हो जाओ। कुछ भी स्थायी नहीं है—तुम्हारी यह स्थिति भी स्थायी नहीं है—यह विश्वास अन्तर में रखकर दिन व्यतीत करो।

मेरा स्नेहाशीष लो। अत्र मंगल।

राधेश्याम।

आशीर्वादिका—माँ

१६

ॐ हरिः

सन्त आश्रम, वाराणसी

नारायणेषु,

प्रिय.....

तुम्हारा पत्र पाकर सुखी हुई।... महामाया की यह शक्ति गुरुकृपा से तुम लोगों को मिली है। अब मन-प्राण से उस जाग्रत मंत्र की उपलब्धि चित्त में जिससे हो सके, इसके लिए साधना करते रहो। छोटा-मोटा सुख-दुःख कुछ भी तुम लोगों को विचलित न कर सके। चारों ओर के मायाजाल को काटकर उस शाश्वत चिर सुन्दर की ओर जिससे अग्रसर हो सको, ऐसी चेष्टा जाग्रत करो।

...मेरा स्नेहाशीष लो। अत्र मंगल।

राधेश्याम।

आशीर्वादिका—माँ

१७

ॐ हरिः

सन्त आश्रम, वाराणसी

नारायणेषु,

प्रिय.....

तुम्हारा पत्र पाकर सुखी हुई।... सुख-दुःख, सुविधा-असुविधा सबका सम्मिश्रण ही जीवन है। इस किचकिच से मुक्त होकर उस शाश्वत चिर-सुन्दर की गोद में जाकर अखण्ड आनन्द के अधिकारी बन सकें, इसीलिए तो साधन-भजन

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

है। जब तक मनुष्य मुक्ति या मोक्ष नहीं पा जाता, तब तक पर्यायक्रम से आना-जाना रहेगा ही। इसीलिए प्रत्येक माँ अपने पुत्र को श्रेयः पथ पर ले जाना चाहती है। मार्ग में जो सब काँटे हैं, वे माँ के लिए ही रहें, तुम सब निर्विघ्न रूप में उनके निकट पहुँचो, तभी आनन्द पूर्ण होगा।

...मेरा स्नेहाशीष ग्रहण करो। अत्र मंगल।

राधेश्याम।

आशीर्वादिका—माँ

९८

ॐ हरिः

सन्त आश्रम, वाराणसी
१०.१२.६१

नारायणेषु,

प्रिय.....

तुम लोगों का पत्र पाकर सुखी हुई।... संसार के अनेक घात-प्रतिघात से क्षत-विक्षत अपने मन को नामरूप रस-सिंचन के द्वारा सजीव करने की चेष्टा करो। क्षत-विक्षत मन उनके नाम से ही शान्त होता है। सांसारिक दुःख कष्ट के द्वारा भगवान तुम्हें निर्मल बना रहे हैं एवं इसके द्वारा ही पूर्व जन्मार्जित पापकर्म का क्षय हो जाता है।... तुम एकादशी करना चाहते हो यह जाना। तुम एकादशी कर सकते हो—एकादशी करना अच्छा ही है।...

मेरा स्नेहाशीष लो। अत्र मंगल।

राधेश्याम।

आशीर्वादिका—माँ

९९

ॐ हरिः

सन्त आश्रम, वाराणसी

नारायणेषु,

प्रिय.....

तुम्हारा पत्र पाकर सुखी हुई।... तुम खूब अच्छी तरह नाम जप करते रहो, इससे खराब समय कट जायेगा। नाम के द्वारा ही सब प्रकार से कल्याण लाभ होता है। मन में हर समय आनन्द भाव रखने की चेष्टा करो। ऐसे भी अच्छा न लगने पर बीच-बीच में सद्ग्रन्थ पाठ करना। इससे भी मन का निरानन्दभाव कई बार कट जाता है। उनके ऊपर निर्भरशील बनो। दिन के आरम्भ में एवं दिन के

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अन्त में ठीक तरह नाम-जप हो, इस ओर ध्यान रखो। इसके अलावा जब भी संभव हो, नाम जपने की चेष्टा करना।

.....मेरा स्नेहाशीष लो। अत्र मंगल।

राधेश्याम।

आशीर्वादिका—माँ

१००

ॐ हरिः

सन्त आश्रम, वाराणसी

९.९.६२

नारायणेषु,

प्रिय.....

तुम्हारा पत्र पाकर सुखी हुई। तुम्हारी सब प्रार्थनाओं में से कुछ प्रार्थनाएँ भगवान सुन रहे हैं, यह जानकर बहुत सुखी हुई। मेरे बाबा की कृपा मेरी सन्तान के ऊपर इस तरह वर्षित हो रही है, इससे अपने को धन्य समझ रही हूँ। फिर भी यही विश्वास मन में रखना कि उनसे सब प्रार्थनाएँ की जा सकती हैं, फिर भी वे जीव के पक्ष में जो मंगलजनक है वही देते हैं। इसलिए यदि किसी समय प्रार्थना पूर्ण न हो तब मन में अभिमान मत लाना। प्रार्थना पूर्ण होने पर भी तुम लज्जित मत होओ—यह तो आनन्द की ही बात है। तुम अपनी माँ की गोद में ही हो एवं माँ ही तुम्हारा सभी कुछ कर रही हैं, इसलिए तुम लज्जित मत होओ। तुम माता के नाम से विभोर होकर मातृसुधा पान करते रहो। और तुम्हारे लिए करणीय कुछ भी नहीं है।...

...मेरा स्नेहाशीष लो। अत्र मंगल।

राधेश्याम।

आशीर्वादिका—माँ

१०१

ॐ हरिः

सन्त आश्रम, वाराणसी

नारायणेषु,

प्रिय.....

तुम्हारा पत्र पाकर सुखी हुई।... स्त्रीरूप को ही माता का रूप समझो। देवी, दानवी दोनों रूप ही मातृरूप हैं—इसलिए आद्याशक्ति मातृरूप के निकट अपने को शिशु की तरह समर्पित कर देना बड़ा सुन्दर है। माँ ही पिता का परिचय करा

CC-0. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

 Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

देंगी। इसलिए मातृ-आराधना पिता के पास ही पहुँचा देती है। व्यावहारिक जागतिक नियम में भी तो यही देखा जाता है। यदि मातृनाम में कोई बाधा आती है, तब अपनी साधना के बल से उसको काटने की चेष्टा करो।

हमारे बाबा हैं—अब चिन्ता क्या? चंचल अस्थिर मन को शान्त करने का भार तो उनके ही ऊपर है। चंचल मन के लिए तो चंचला माँ हैं ही। तुम केवल शिशु की तरह गुरु के ऊपर निर्भर करके उनको पुकारते रहो—तुम्हारा काम तो वे ही कर रहे हैं। मातृ-क्रोड़ तुम्हारे लिए सर्वदा ही उन्मुक्त है। बीच-बीच में आओ।

.....मेरा स्नेहाशीष लो। अत्र मंगल।

राधेश्याम।

आशीर्वादिका—माँ

१०२

ॐ हरिः

सन्त आश्रम, वाराणसी

१९.८.६३

नारायणेषु,

प्रिय.....

तुम्हारे पत्र को पाकर सुखी हुई।... अब तुम्हारी उम्र हो गई है। इस समय अन्य कुछ चिन्ता न करके उनका चिन्तन जितना कर सको उतना ही अच्छा है। इस संसार का जो कुछ है इस संसार में ही रह जायेगा। केवल एकमात्र उनका 'नाम' ही संगी होगा। इसलिए उनके नाम के माध्यम से उनका संग करके दिन व्यतीत कर सको, तो अधिक अच्छा है। अब संसार को पुत्र-पुत्री के ऊपर छोड़कर तुम उनके चिन्तन में ही दिन व्यतीत करने की चेष्टा करो। जप की संख्या जितनी बढ़ा सको, उतना ही अच्छा।... भगवान को सर्वस्व धन समझकर उनके ऊपर सब कुछ छोड़ने की चेष्टा करो।

मेरा स्नेहाशीष लो। अत्र मंगल।

राधेश्याम।

आशीर्वादिका—माँ

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

१०३

ॐ हरिः

सन्त आश्रम, वाराणसी

नारायणेषु,

प्रिय.....

तुम्हारा पत्र पाकर सुखी हुई। तुम्हारे दिन नीरस कैसे कट रहे हैं? नूतनत्व के राजा जो नीलमणि (प्रभु) हैं, वे तो तुम्हारे पास हैं, तब तुम्हें एकरसता क्यों लगेगी?... मन को अच्छा करने की चेष्टा करो। जब कभी एकरसता लगे, तभी अधिक जप करने की चेष्टा करो एवं महापुरुषों की जीवनी का पाठ करो—तब देखोगे कि धीरे-धीरे एकरसता कट गई है। हर समय याद रखो कि हम आनन्द से आये हैं, पुनः आनन्द में ही लीन होंगे—बीच के निरानन्द को ही भगवत् नाम के द्वारा काटना पड़ेगा।

मेरा स्नेहाशीष लो। अत्र मंगल।

राधेश्याम।

आशीर्वादिका—माँ

१०४

ॐ हरिः

सन्त आश्रम, वाराणसी

नारायणेषु,

प्रिय.....

तुम्हारे पत्र को पाकर सुखी हुई।... शिशु की तरह स्वयं को उनके चरणों में उत्सर्ग कर दो, तभी माँ-मय हो सकोगे। तुम जितना छोड़ोगे, उतना ही वे पकड़ेंगे। हमारे पकड़ने में तो हाथ की मुट्ठी खुल सकती है, किन्तु उनके पकड़ने पर हाथ की मुट्ठी नहीं खुलेगी। इसलिए उनसे यही प्रार्थना रहे, तुम मुझे पकड़ लो।

...मेरा स्नेहाशीष लो। अत्र मंगल।

राधेश्याम।

आशीर्वादिका—माँ

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

 Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

१०५

ॐ हरिः

सन्त आश्रम, वाराणसी

नारायणेषु,

प्रिय.....

तुम्हारा पत्र पाकर सुखी हुई।... अष्ट ग्रहों के लिए इतना शङ्कित क्यों हो, बोलो? भगवान के नाम को लेकर सभी जगह निर्भय होकर रहा जा सकता है। निर्भरशील व्यक्ति की वे हर समय रक्षा करते हैं। निर्भरता में ही परम सुख और आनन्द है।... मनुष्य चेष्टा ही कर सकता है, फलाफल तो भगवान के हाथ है। जब समय होगा, तब किसी न किसी को उपलक्ष्य करके हो जायेगा। इसलिए भगवान के ऊपर निर्भर करके चेष्टा करते रहने की चेष्टा करो। सभी कार्यों में 'अहं' बुद्धि यथासंभव छोड़ने की चेष्टा करो। 'मैं' का नाश होने से ही उनको पाया जाता है। अतः जितना संभव हो, स्वयं को उनकी ओर अग्रसर करने की चेष्टा करो।

...मेरा स्नेहाशीष लो। अत्र मंगल।

राधेश्याम।

आशीर्वादिका—माँ

१०६

ॐ हरिः

सन्त आश्रम, वाराणसी

नारायणेषु,

प्रिय.....

तुम्हारा पत्र पाकर सुखी हुई।... माँ के ऊपर निर्भर करके माँ ही सब कुछ हैं यह जानकर जीवन पथ पर चलने की चेष्टा करो। जितना भगवान का नाम कर सकोगे, उतनी ही माँ की सत्ता अनुभव कर सकोगे। तुम अपनी माँ का स्वप्न देखते हो यह जानकर आनन्दिता हुई। इससे कल्याण होगा। अपने शरीर में सत्त्वगुण बढ़े, इसी ओर लक्ष्य रखो। जितना सत्त्वगुण बढ़ेगा उतना ही माँ का सानिध्य अनुभव कर सकोगे। तुम्हारी चेष्टा होने पर माँ का आशीर्वाद निश्चय ही पाओगे। 'मेरी' समझकर किसी वस्तु को पकड़ने की चेष्टा मत करना। 'माँ' का समझकर सब कुछ छोड़ने की चेष्टा करो। हर समय यही बुद्धि रखने की चेष्टा करो कि तुम माँ की गोद में ही हो।

मेरा स्नेहाशीष लो। अत्र मंगल।

राधेश्याम।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection. आशीर्वादिका—माँ

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

१०७

ॐ हरिः

सन्त आश्रम, वाराणसी

नारायणेषु,

प्रिय.....

तुम्हारे पत्र को पाकर सुखी हुई।... तुम इस समय जो सोच रहे हो कि महिना अधिक पाने से रसोइया रखकर साधन-भजन की ओर अग्रसर हो सकूँगा, यह ठीक नहीं है। वे कब किसको किस दिशा से अग्रसर करेंगे, इसको एकमात्र वे ही जानते हैं। वे अनेक कर्मों के माध्यम से तुम लोगों के भोग को काटकर शुद्ध निर्मल कर रहे हैं। जब जिस अवस्था में रहो, 'नाम' ही पूर्ण लक्ष्य है—यह बोध लेकर चलो। जब वे सुयोग सुविधा देंगे, तब 'नाम' जपूँगा—यह विचार मन में मत लाना। जब भी जिस अवस्था में रहो, 'नाम' जपते हुए लक्ष्य वस्तु की ओर अग्रसर होते रहो—यही विचार मन में रखो।

मेरा स्नेहाशीष लो। अत्र मंगल।

राधेश्याम।

आशीर्वादिका—माँ

१०८

ॐ हरिः

सन्त आश्रम, वाराणसी

नारायणेषु,

प्रिय.....

तुम्हारा पत्र पाकर सुखी हुई।... यदि तुम्हारा आना न हो, तब दुःख होने पर भी इसे मैं मान लूँगी। तुम भी इसे अपनी दृष्टि से कल्याणजनक समझकर मन में संतोष भाव रखने की चेष्टा करो। मैं यह समझती हूँ कि सारे कार्य हमारे मनोनुकूल न होने पर भी इसके द्वारा श्रेयः ही हो रहा है। वे जब हमें अपना बना लेंगे तब कुछ घात-प्रतिघात दे ही सकते हैं। जो जितना अधिक निकट आयेगा वह उतना अधिक आघात खायेगा। वे प्यार करते हैं इसलिए शासन करना भी अच्छा लगता है।... देखना मन के अन्दर थोड़ी-सी भी कालिमा न आने पाये।

...मेरा स्नेहाशीष लो। अत्र मंगल।

राधेश्याम।

आशीर्वादिका—माँ

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

 Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

१०९

ॐ हरिः

सन्त आश्रम, वाराणसी

नारायणेषु,

प्रिय.....

तुम्हारा पत्र पाकर सुखी हुई।... स्वयं को जितना उनकी सेविका समझोगी, उतना ही देखोगी तुम्हारा काम वे ही कर रहे हैं। जितना 'मेरा-मेरा' छोड़कर 'उनका' समझोगी, उतना ही आनन्द पाओगी। अपना बोझा दूसरे को दे देने से काफी हल्का हुआ जाता है। वे बोझा लेने के लिए तैयार ही हैं, किन्तु हम दे ही कहाँ पाते हैं? समर्पण कर पाने का कौशल सीखने की चेष्टा करो।

...मेरा स्नेहाशीष लो। अत्र मंगल।

राधेश्याम।

आशीर्वादिका—माँ

११०

ॐ हरिः

सन्त आश्रम, वाराणसी

नारायणेषु,

प्रिय.....

तुम्हारा पत्र पाकर सुखी हुई।... सन्तान जहाँ पर भी क्यों न हो, माँ हर समय ही उनके साथ हैं—यह विश्वास रखकर पथ पर चलो। माँ के लिए सन्तान का रुदन एवं सन्तान के लिए माँ का रोना दोनों ही मधुर हैं। मन को जितना द्रवीभूत किया जाय, उतना ही अच्छा—शुष्क काठिन्य भाव से मन की सरसता कम हो जाती है—इसलिए हर समय रोना खराब नहीं है। जो 'नाम' पाया है, वह निष्ठापूर्वक जपते रहो—उसी से मातृ सानिध्य अनुभव कर सकते हो। माँ किसी समय सन्तान का अपराध नहीं मानती—यह जान लो। मातृ नाम में विभोर होकर पथ पर चलने की चेष्टा करो।

...मेरा स्नेहाशीष लो। अत्र मंगल।

राधेश्याम।

आशीर्वादिका—माँ

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

१११

ॐ हरिः

सन्त आश्रम, वाराणसी

नारायणेषु,

प्रिय.....

तुम्हारा पत्र पाकर सुखी हुई।... तुम सब सुख-शांति से हो यह जानकर ही सुखी हो जाती हूँ। तुम सबके आनन्द में ही मेरा आनन्द है। तुम सबको छोड़कर मैं नहीं हूँ। इसलिए तुम लोग उनका नाम लेकर आनन्द से रहकर मेरे आनन्द की मात्रा बढ़ाओ, यही चाहती हूँ। संसार की घटना स्रोत की गति की तरह है—जो है प्रवाहित हो जायेगी, उससे विचलित मत होना। 'यह बाह्य' है—यह मन के ऊपर दाग न छोड़े। इस विषय में सावधान रहना।

...मेरा स्नेहाशीष लो। अत्र मंगल।

राधेश्याम।

आशीर्वादिका—माँ

११२

ॐ हरिः

सन्त आश्रम, वाराणसी

नारायणेषु,

प्रिय.....

तुम लोगों का पत्र पाकर सुखी हुई। तुम लोगों के मिलन-मंदिर में किस दिन नहीं जाती, बोलो तो? अपना कर्तव्य मैं ठीक ही करती हूँ। तुम लोगों का मन अनुभव करने के लिए तैयार नहीं रहता। तुम लोग ठाकुर जी को लेकर आनन्द से तो हो, आनन्द ही हम लोगों का काम्य है। उस सत्-चित्-आनन्द को पाने के लिए सत्पथ अर्थात् सत्य के पथ पर चलना चाहिए। संसार की कालिमा पथ की पिच्छलता (फिसलन) न ला सके, इस ओर ध्यान रखना। उनका नाम लेकर शीघ्रतापूर्वक उनके पथ पर अग्रसर होने की चेष्टा करो। चेष्टा में त्रुटि न होने पर उनका साहाय्य अनुभव किया जाता है।

...मेरा स्नेहाशीष जानो। अत्र मंगल।

राधेश्याम।

आशीर्वादिका—माँ

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

११३

ॐ हरिः

सन्त आश्रम, वाराणसी

नारायणेषु,

प्रिय.....

तुम्हारा पत्र पाकर सुखी हुई।... स्थूल पाने का तो एकदिन अवसान होगा ही, इसलिए जिससे सूक्ष्मभाव से पा सको उस ओर साधना करनी होगी। **एकमात्र सूक्ष्मरूप से पाना ही पाना है—जिस पाने का कोई विच्छेद नहीं है** और स्थूल रूप में जितना ही क्यों न पाया जाय, उसका तो विच्छेद है ही। और हर समय याद रखो, उनके निकट योग्यता-अयोग्यता कुछ भी नहीं है। उन्होंने कृपा करके हम लोगों को ग्रहण किया है—अतएव **उनके निकट योग्यता-अयोग्यता भ्रम मात्र है।** माँ के लिए जहाँ काना पुत्र पद्मलोचन है वहाँ और प्रश्न क्या है? और तुम लोग तो सोने के टुकड़े हो!

...मेरा स्नेहाशीष लो। अत्र मंगल।

राधेश्याम।

आशीर्वादिका—माँ

११४

ॐ हरिः

सन्त आश्रम, वाराणसी

नारायणेषु,

प्रिय.....

तुम्हारा पत्र पाकर सुखी हुई।... जहाँ भी क्यों न रहो, भगवत् नाम लेकर शान्त मन से रहने की चेष्टा करो। **जितना संभव हो अपने को संसार से अलग रखने की चेष्टा करो। श्रीगुरु की सेवा पूजा ही तुम्हारा अब असल कार्य है यह जानो।** सभी जगह तो सत्संग संभव नहीं है, इसलिए सद्ग्रन्थ पाठ करने की चेष्टा करो। सद्ग्रन्थ पाठ के द्वारा भी सत्संग होता है यह जान लो। जब भी चुपचाप बैठो तभी मन ही मन नाम जपते रहो। मन में जितना उनका स्मरण करोगे, उतना ही मंगल समझो। स्थूलतः गुरुसंग न कर पाने से भी मन से करने की चेष्टा करो।

.....मेरा स्नेहाशीष लो। अत्र मंगल।

राधेश्याम।

आशीर्वादिका—माँ

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

११५

ॐ हरिः

सन्त आश्रम, वाराणसी

नारायणेषु,

प्रिय.....

तुम्हारा पत्र पाकर सुखी हुई।... वास्तव में वे ओट से हम लोगों को प्रेम कर रहे हैं। जितना देह मन निर्मल होगा, उतनी ही इसकी उपलब्धि होगी एवं इसकी उपलब्धि करना ही साधना है। इस साधना में तुम लोग जिससे सिद्धि लाभ करो, इसके लिए मेरा भी आशीर्वाद है।

तुम्हारी असुविधा की बात भी समझी। भगवान ने जब संसार तुमको दिया नहीं है, तब क्यों व्यर्थ ही अपने को संसार से जोड़े हुए हो? जितना संभव हो, ये सब बन्धन काट लो। अपना सब कुछ गुरु के प्रति समर्पण कर दो—'मेरा' कहकर कुछ भी नहीं है यह जान लो। संसार मन को बड़ा संकीर्ण कर देता है। स्वयं को इन सबसे दूर रखो। ठाकुर के चाकर का संसार एक तरह से अच्छा है—इससे बन्धन नहीं होता।

मेरा स्नेहाशीष लो। अत्र मंगल।

राधेश्याम।

आशीर्वादिका—माँ

११६

ॐ हरिः

सन्त आश्रम, वाराणसी

नारायणेषु,

प्रिय.....

तुम्हारा पत्र मिला।... मैंने तुम लोगों को उनके चरणों में समर्पित कर दिया है, इसलिए तुम लोगों के लिए जो मंगलमय है श्रीगुरुजी वही करेंगे, यही भरोसा है। तुम लोग अनवरत उनका नाम लेकर उनके पथ पर चलो।

कालस्रोत के अनुसार जो समस्त अवस्थाएँ प्राप्त होती हैं, उन्हें तो मानना ही पड़ेगा, फिर भी अवस्था के अनुसार सब प्रकार की व्यवस्था तो करनी ही पड़ेगी। हर समय बुद्धि को स्थिर रखने की चेष्टा करो।... किसी भी कार्य में विचलित न होना, लेकिन सब ओर लक्ष्य रखना।...

तुम सभी समझो या न समझो, तुम लोगों की माँ हर समय तुम्हारे पास हैं। स्थूलतः दूरत्व कोई दूरत्व नहीं है यह जानो, हर समय माँ की गोद में

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ही हो। मन तो किसी समय खाली नहीं रहता, एक न एक विचार उसमें रहते ही हैं। इसलिए वह चिन्तन, भगवत् चिन्तन हो, इस ओर लक्ष्य रखना। परनिन्दा परचर्चा सर्वदा परित्याज्य है, यह कभी मत भूलना।

अत्र मंगल।

राधेश्याम।

आशीर्वादिका—माँ

११७

ॐ हरिः

सन्त आश्रम, वाराणसी

नारायणेषु,

प्रिय.....

तुम्हारा पत्र पाकर सुखी हुई।... तुम सुबह उठकर जप में बैठने की चेष्टा करोगे, यह जानकर सुखी हुई। भोर के समय का जप ही यथार्थ जप है। ब्राह्म मुहूर्त में जप करने के लिए बैठने पर महापुरुषों का आशीर्वाद पाया जाता है, कारण इस समय महापुरुषगण आकाशमार्ग में विचरण करते हैं—इससे देखोगे शरीर भी बहुत स्वस्थ है, मन भी प्रफुल्ल है। जितना 'नाम' जप कर सकोगे, उतना ही मन भी शुद्ध रहेगा। तुम्हारे स्वप्न का वृत्तान्त जाना, यह बड़ा ही सुन्दर है। कहाँ जाओगे या वे कहाँ ले जायेंगे, इस सम्बन्ध में तुम्हें चिन्ता करने की जरूरत नहीं है। जब उन्होंने एकबार गोद में स्थान दिया है—तब अपात्र में नहीं गिरा देंगे।

...हर समय सावधानीपूर्वक चलना-फिरना, अवस्था देखकर पैर रखना। भय मत करना, फिर भी विचार करके चलना।... अच्छी लड़की बनने की चेष्टा करो, तभी देखोगी अच्छी लड़की बन सकी हो। अपनी चेष्टा होने पर भगवान का आशीर्वाद मिलता है।

...मेरा स्नेहाशीर्वाद लेना। अत्र मंगल।

राधेश्याम।

आशीर्वादिका—माँ

११८

ॐ हरिः

सन्त आश्रम, वाराणसी

नारायणेषु,

प्रिय.....

तुम्हारा पत्र पाकर सुखी हुई।... वर्तमान समय खूब दुःसमय चल रहा है—सभी सावधानीपूर्वक रहने की चेष्टा करो। उनके आश्रित व्यक्ति को कोई भय

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नहीं है। जितना भय का भाव है, सब उनको पुकारने से दूर चला जायेगा। एकाग्र मन से समय मिलने पर उनके नाम को लेकर व्यतीत करो। वे हर समय तुम लोगों के साथ-साथ हैं।... ठीक तरह नाम जप होने से ही माँ की सेवा होती है यह जानो। मेरी सेवा का अन्य कुछ भी प्रयोजन नहीं है—तुम सब नाम जपो, यही मेरी सबसे बड़ी सेवा जानो। सत्-चित्-आनन्द को जानना होगा। यही सबसे बड़ा काम समझो। समुद्र में जैसे तरंग उठेगी ही, इसी तरह संसार में भी सुख-दुःख की तरंगों का खेल चलेगा ही। स्वयं को द्रष्टा करके देखते रहने की चेष्टा करो।... तुम्हारे दर्शन की बात जानी। इसे भगवत् कृपा समझो।

...मेरा स्नेहाशीष लो। अत्र मंगल।

राधेश्याम।

आशीर्वादिका—माँ

११९

ॐ हरिः

सन्त आश्रम, वाराणसी

नारायणेषु,

प्रिय.....

तुम्हारे पत्र को पाकर सुखी हुई।... सब कुछ पवित्र रखो। अपने मन की पवित्रता सबसे बड़ी बात है। किसी प्रकार की भी अपवित्रता तुम्हें स्पर्श न करे। तुम ऋषिपुत्र हो, यह तुम मत भूलो, नाम की पवित्रता सर्वदा रक्षा करके चलो। नाम तुम्हारा नित्यसंगी है। नाम जपते-जपते नामी का दर्शन मिलेगा। नाम और नामी को अभिन्न समझो। तुम सब उनके पार्षद (सेवक) हो—उन्होंने तुम लोगों को ग्रहण कर लिया है। तुम लोग उनके अपने हो।

...मेरा स्नेहाशीष लो। अत्र मंगल।

राधेश्याम।

आशीर्वादिका—माँ

१२०

ॐ हरिः

सन्त आश्रम, वाराणसी

नारायणेषु,

प्रिय.....

तुम्हारे पत्र को पाकर सुखी हुई।... तुम्हारे यहाँ के दुःख-सुख, भाव-अभाव की बात जानी। यहाँ तो संसार है। इस चक्र के आवर्तन में पड़ने से ही तो

CC-0. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कर्म का भोग क्षीण होता है। इसके द्वारा ही तो भगवान जीवन को शुद्ध निर्मल बना लेते हैं।... अखण्ड कर्मराशि क्या सहज ही क्षीण हो जाती है? संसारी लोगों की सांसारिक ताप में और साधु संन्यासियों को अन्य ताप में दग्ध करके वे शुद्ध बना लेते हैं। 'सु' या 'कु' किसी कर्मफल को लेकर उनके निकट जाया नहीं जा सकता। दोनों को ही यहाँ समाप्त करके जाना पड़ेगा। महापुरुषजन भी इसका व्यतिक्रम नहीं कर सकते। महापुरुषों के सुकर्म का फल जो उनकी सेवा यत्न करते हैं वे ले लेते हैं, और कु-कर्म का फल जो उनकी निन्दा करते हैं वे ले लेते हैं, इसी तरह कर्म क्षीण हो जाता है।

...मेरा स्नेहाशीष लो। अत्र मंगल।

राधेश्याम।

आशीर्वादिका—माँ

१२१

ॐ हरिः

सन्त आश्रम, वाराणसी

नारायणेषु,

प्रिय.....

तुम्हारा पत्र पाकर सुखी हुई।... गोपालजी के लिए तुम्हारे कष्ट को जानकर सबसे अधिक अच्छा लगा। गोपालजी के लिए जितना कष्ट होगा, उनको अपना समझकर जितनी दृढ़तापूर्वक पकड़ सकोगे, उतना ही मुक्ति का पथ प्रशस्त समझो। सच तो यही है, उनसे अधिक अपना अन्य कोई हमारा नहीं है। फिर भी असल वस्तु को न पकड़कर हम लोग असार वस्तु को लेकर रोते रहते हैं। यदि किसी के अभाव में रोना पड़े तो उनके अभाव में ही सबसे अधिक रोना उचित है। उनके लिए ही तुम्हारा रोना स्थायी हो, यही चाहती हूँ।... तुम्हारे विषय में जान लिया, हताश मत होना, पतवार मत छोड़ना, चेष्टा करते रहो। मनुष्य के ऊपर क्रोध मत करो। उनको देने वाला समझो। संभव होने पर बीच-बीच में मिलन मन्दिर में जाना—इससे यहाँ की खबरें अच्छी तरह मिल जायेंगी। भाई-बहनों का बीच-बीच में मिलना खूब अच्छा है।

...मेरा स्नेहाशीष जानो। अत्र मंगल।

राधेश्याम।

आशीर्वादिका—माँ

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

१२२

ॐ हरिः

सन्त आश्रम, वाराणसी

नारायणेषु,

प्रिय.....

तुम लोगों का पत्र पाकर सुखी हुई... सब बातें समझी। भगवान जब जैसे रखने में तुम्हारी दृष्टि से कल्याणजनक होगा, वैसे ही तुम्हें रख रहे हैं। तुम लोगों का जीवन उनके द्वारा ही चालित हो रहा है। तुम लोग उनकी दृष्टि में हो। प्राप्त मंत्र निष्ठापूर्वक जपते रहो, उनके द्वारा इसकी सत्यता उपलब्ध कर सकोगे। मातृक्रोड़ में ही तुम लोगों का स्थान है।

...मेरा स्नेहाशीष लो। अत्र मंगल।

राधेश्याम।

आशीर्वादिका—माँ

१२३

ॐ हरिः

सन्त आश्रम, वाराणसी

नारायणेषु,

प्रिय.....

तुम्हारा पत्र पाकर सुखी हुई। ...ईसामसीह की कथा तुम्हें अच्छी लगती है जानकर सुखी हुई। सत्य सब एक ही है। सभी शास्त्रों ने एक ही तत्त्व का वर्णन किया है। भेद जो देखा जाता है, वह साधारण दृष्टि की भूल है। हर समय तुम लोग सत्य पर ही दृष्टि रखना। सत्य से च्युत मत होना। सत्य को ही साधना जानो।

...मेरा स्नेहाशीष लो। अत्र मंगल।

राधेश्याम।

आशीर्वादिका—माँ

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

१२४

ॐ हरिः

सन्त आश्रम, वाराणसी
१८.३.६३

नारायणेषु,

प्रिय.....

तुम्हारा पत्र पाकर सुखी हुई। कुछ भी क्यों न करो, अपने भोजन व शरीर के प्रति ध्यान देना। याद रहे, साधन-भजन करने के लिए ही शरीर को स्वस्थ रखने का प्रयोजन है। शरीर स्वस्थ न होने पर तो साधन-भजन नहीं कर सकते। मानव जीवन श्रेष्ठ है, कारण इसके द्वारा उनका साधन-भजन किया जाता है। अब उम्र हो गई है। उनका कार्य जिससे ठीक तरह हो, इस ओर ध्यान रखना।

...मेरा स्नेहाशीष लो। अत्र मंगल।

राधेश्याम।

आशीर्वादिका—माँ

१२५

ॐ हरिः

सन्त आश्रम, वाराणसी

नारायणेषु,

प्रिय.....

तुम्हारा पत्र पाकर सुखी हुई।... सांसारिक सुख-दुःख से विचलित मत होना। भगवान को पुकारते रहो, इससे यदि आघात ज्यादा मिले, फिर भी उनको ही पुकारना होगा। भगवान को पुकारने से विपत्ति ज्यादा आती है, यह जो धारणा है, वह गलत धारणा है। उनको पुकारने का कारण है, जो विपत्ति दारुणभाव से आती, वह कोमलभाव से आती है। इसलिए सभी अवस्थाओं में उन्हीं को पुकारते रहो।... बचने का यही एकमात्र उपाय है। उनका नाम लेकर जो चलता है, उसे सौ दुःख मिलने पर भी उसमें एक प्रकार की सान्त्वना रहती है। हमारे कल्याण के लिए वे बीच-बीच में दुःख देते हैं, हर समय यह याद रखो। इसलिए किसी भी अवस्था में उनको मत भूलो।

...मेरा स्नेहाशीष लो। अत्र मंगल।

राधेश्याम।

आशीर्वादिका—माँ

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

१२६

ॐ हरिः

सन्त आश्रम, वाराणसी

नारायणेषु,

प्रिय.....

तुम्हारा पत्र पाकर सुखी हुई।... तुम्हारी दुःखद बात जानकर मेरा मन दुःख से भर गया।... तुम किसी भी अवस्था में मन को विचलित मत करना। हर समय मन के सामने द्रोपदी, सीता आदि का आदर्श रखना।... तुमने रामायण, महाभारत तो पढ़ी है? उसमें तो देखा है कि बेटियों ने प्रतियुग में कितना दुःख-कष्ट भोग किया है? किन्तु किसी भी अवस्था में वे विचलित नहीं हुईं। विचलित नहीं हुईं इसीलिए तो वे मनुष्य न होकर 'देवी' हुईं।

...तुम भी किसी अवस्था में विचलित मत होना। पति के प्रति अपना कर्त्तव्य तुम एकाग्रभाव से करते रहने की चेष्टा करो। माँ की गोद तुम्हारे लिए हर समय खुली है। जब भी अवसर मिले, माँ की गोद में आकर पड़ सकती हो। किन्तु... मैं चाहती हूँ, तुम लोग जो संसारी हो, वे संसार के कर्त्तव्य यथार्थरूप में पालन करते रहो।

...मेरा स्नेहाशीष लो। अत्र मंगल।

राधेश्याम।

आशीर्वादिका—माँ

१२७

ॐ हरिः

सन्त आश्रम, वाराणसी

२४.२.६२

नारायणेषु,

प्रिय.....

तुम्हारा पत्र पाकर सुखी हुई। सांसारिक तूफ़ानों को मन से दूर हटाने की चेष्टा करो। भोग काटने के लिए ही संसार करना पड़ रहा है, यह हर समय याद रखो। सुख-दुःख को एक पोशाक की तरह जानो—ये आत्मा का स्पर्श नहीं करते। आत्मा सर्वमुक्त है, यह समझने के लिए ही तो साधन भजन हैं। कोई भी परिस्थिति मन को पंगु न कर सके, इसी ओर लक्ष्य रखो। सर्व अवस्थाओं में वे हैं, इस भाव को दृढ़ीभूत करने की चेष्टा करो।

...मेरा स्नेहाशीष लो। अत्र मंगल।

राधेश्याम।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection. आशीर्वादिका—माँ

 Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

१२८

ॐ हरिः

संत आश्रम, वाराणसी
१२.६.६१

नारायणेषु,

प्रिय.....

तुम्हारा पत्र पाकर सुखी हुई।... **सांसारिक समस्त कार्यों के साथ-साथ उनका कार्य करते रहना है, इस ओर लक्ष्य रखना।** अन्यथा, हिसाब देने के समय मुश्किल में पड़ जाओगे। याद रखो, यहाँ दो दिन का हिसाब देना है, वहाँ चिरदिन का हिसाब देना है। इसलिए वहाँ का हिसाब देते समय परेशानी में न पड़ जाओ, इस ओर लक्ष्य रखो।

...मेरा स्नेहाशीष लो। अत्र मंगल।

राधेश्याम।

आशीर्वादिका—माँ

१२९

ॐ हरिः

सन्त आश्रम, वाराणसी
२८.७.६०

नारायणेषु,

प्रिय.....

तुम्हारा पत्र पाकर सुखी हुई।... यह बात याद रखो कि हर समय उनके ऊपर निर्भरशील होना पड़ेगा, **निर्भरशील व्यक्ति की रक्षा वे ही करते हैं।** इन समस्त भय-भीतियों में निर्भरता बढ़ाने की चेष्टा करो, ऐंसा होने पर लगेगा कि यह भी उनकी एक लीला है। शान्तभाव एवं रुद्रभाव—दोनों ही उनके भाव हैं। उनके ही निकट प्रार्थना करो कि वे करुणाघन-मूर्ति रूप में दर्शन दें। शिव की ताण्डव-लीला एकमात्र विष्णु ही सह्य कर सकते हैं। तुम लोग तो वैष्णव हो, तो क्यों नहीं सहन कर सकते? प्रयोजन होने पर वज्र से भी कठिन होना पड़ता है, यह क्या भूल गये हो? यह समझाने के लिए ही क्या उनका यह शासन है? अच्छा, उनकी इस लीला को देखकर विचलित मत होना। तुम लोग क्षमासुन्दर के शिष्य हो, इसलिए सभी को क्षमा करके प्रेम वितरण करते रहने की चेष्टा करो, सब भाई-बहनों को अपना बना लो।

...मेरा स्नेहाशीष लो। अत्र मंगल।

राधेश्याम।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection. आशीर्वादिका—माँ

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

१३०

ॐ हरिः

सन्त आश्रम, वाराणसी
२८.७.६०

नारायणेषु,
प्रिय.....

तुम्हारा पत्र पाकर सुखी हुई।... उनकी इस रुद्रमूर्ति को देखकर भय मत करना। नाम जपते रहो, नाम के द्वारा ही उनकी यह रुद्रमूर्ति शान्त रूप धारण करेगी। किसी का भी समय एक तरह नहीं बीतता, इसलिए बंगालियों के भी दुर्दिन कटकर सूर्योदय होगा। दुर्दिन जल्दी कट जायें, इसके लिए समवेत भाव से नामगान करना उचित है। किन्तु हम लोग रोग से मुक्ति पाने का प्रतिकार कहाँ करते हैं? सभी मिलकर नाम रूपी औषध ग्रहण करो, तभी शीघ्रातिशीघ्र रोग नष्ट हो जायेगा।

अत्र मंगल।
राधेश्याम।

आशीर्वादिका—माँ

१३१

ॐ हरिः

सन्त आश्रम, वाराणसी
२८.६.६०

नारायणेषु,
प्रिय.....

तुम्हारा पत्र पाकर सुखी हुई। मनुष्य के मन का स्वाभाविक धर्म ही है कि किसी एक विषय में स्थिर नहीं रह सकता, इसलिए तुम्हारा मन भी अस्थिर होगा—यह तो स्वाभाविक नियम है; फिर भी चंचल एवं अस्थिर मन को एकमात्र नामरूपी रज्जू के द्वारा बाँधा जा सकता है अर्थात् जब भी मन बहिर्मुखी होने लगे तभी मन ही मन नाम जपकर उसको अंतर्मुखी करने की चेष्टा करो। चेष्टा होने पर उनका आशीर्वाद अपने आप मिलेगा। इसलिए तुम चेष्टा करते रहो, हताश मत होना। जब जो मन में आये, वह सकाम या निष्काम कुछ भी क्यों न हो, उनके निकट प्रार्थना करते रहो। इससे कोई दोष नहीं, लेकिन मन में यह विचार रखना—मेरा चाहने का अधिकार है, देने वाले वे ही हैं। जैसे छोटा शिशु-पिता-माता से सब कुछ चाह सकता है, किन्तु पिता-माता उसका इष्ट-अनिष्ट विचार करके फल

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

 Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

देते हैं, तद्वत्। मेरा भला मुझसे अधिक वे समझते हैं, अतः वर्तमान में दुःख असुविधा देकर विचलित होने का कोई कारण नहीं है। प्रयोजनीय व्यवस्था वे ही करेंगे। प्रथमतः ये बातें प्रलाप प्रतीत हो सकती हैं, किन्तु अभ्यास करने पर देखोगे कि इसीसे शान्ति एवं सान्त्वना मिलेगी।

...स्नेहाशीष लो। अत्र मंगल।

राधेश्याम।

आशीर्वादिका—माँ

१३२

ॐ हरिः

सन्त आश्रम, वाराणसी

नारायणेषु,

प्रिय.....

तुम्हारा पत्र पाकर सुखी हुई।... रास उत्सव जानते हो? कृष्ण को जगतमय देखना—उनके प्रेम में मतवाला होना। इस जगत में जो कुछ देख रहे हो, सब कृष्णमय जगत् है। उनके बिना एक बालूकण भी नहीं हो सकता। यह विश्व उनमें है—विश्व के मध्य में वे हैं। उनको जानने के लिए अपने प्रत्येक अणु-परमाणु को जाग्रत करो। सुन्दर करो, प्रेममय करो। प्रेम की रज्जू से उनको बाँधा जा सकता है। रासगान के पन्ने को भूलकर ३-४ पन्ने एक साथ पलट दिये यह जाना। उनकी इच्छा के बिना कुछ भी नहीं हो सकता, होता ही नहीं, यह भी उनकी ही इच्छा जानो। प्रत्येक विषय में उनकी इच्छा समझने से और कोई अशांति नहीं रहती। हम समझें या न समझें उनकी इच्छा के बिना वृक्ष का एक पत्ता भी नहीं हिलता, यह जान लो। अपनी इच्छा उनकी इच्छा के साथ युक्त करने की चेष्टा करो—तभी शांति मिलेगी। तुम लोग सुन्दर निर्मल होओ, मैं तो यही चाहती हूँ। तुम लोग मेरे बड़े प्यारे धन हो, यह भूल मत जाना।

मेरा स्नेहाशीष लेना। अत्र मंगल।

राधेश्याम।

आशीर्वादिका—माँ

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

१३३

ॐ हरिः

सन्त आश्रम, वाराणसी

नारायणेषु,

प्रिय.....

तुम्हारा पत्र पाकर सुखी हुई।... किसी भी अवस्था में मन को अस्थिर मत करना। जब जिस अवस्था में वे रखें, उसी में मन को आनन्दित रखने की चेष्टा करना। ...जिससे आनन्दमय को जानने के लिए मन उन्मुख हो, इस विषय में तुमको ही यत्न करना पड़ेगा। जीवन में चलने का पथ बड़ा ही कठिन है। प्रथम पदक्षेप यदि ठीक जगह पड़े तो और पदस्खलन होने का भय नहीं होता।...तुम्हारी माँ ने तुम्हारा हाथ पकड़ा ही हुआ है। इसलिए तुम्हें कोई भय नहीं—उनकी गोद में ही तुम लोग हो, इसलिए निर्भयपूर्वक पथ पर चलने की चेष्टा करो। यदि कभी हम इधर-उधर पदक्षेप भी करें, तो वे ही पुनः हम लोगों को ठीक पथ पर चालित करेंगे। फिर भी ठीक पथ पर चलने की चेष्टा का अभाव न हो, इस ओर लक्ष्य रखना होगा। प्राण भरकर नाम जपो। नाम से शरीर का प्रति अणु-परमाणु आविष्ट हो जाये, ऐसी चेष्टा करना।

...मेरा स्नेहाशीष लो। अत्र मंगल।

राधेश्याम।

आशीर्वादिका—माँ

१३४

ॐ हरिः

सन्त आश्रम, वाराणसी

११.२.६८

नारायणेषु,

प्रिय.....

तुम्हारा पत्र पाकर सुखी हुई।... सद्गुरु से नाम प्राप्त व्यक्ति का नरकभोग नहीं होता। 'नाम' देकर सद्गुरु उसका समस्त दायित्व ग्रहण करते हैं। उसका भार सम्पूर्णरूप से गुरु के ऊपर ही रहता है, फिर भी दीक्षा का प्रयोजन है—यह जानो। जैसे स्कूल के बाद कॉलेज में अध्ययन का भी प्रयोजन है। तुम कोपीन पहन सकते हो एवं कोपीन पहनना आरम्भ किया है जानकर सुखी हुंई। रिपु की प्रबलभाव से उत्तेजना जब अनुभव करो, तब बाबाजी महाराज की पत्रावली का पाठ करना, उससे उपकार होगा।...

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

 Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

साधारणतः एक घण्टे में बहुत अधिक जप होने पर १००० हो सकता है। एक घंटे में ५००-६०० होने पर भी Speed खूब खराब नहीं कही जा सकती। केवल जप की संख्या बढ़ाना पर्याप्त नहीं है। **जप के समय मंत्र की प्रत्येक ध्वनि जिससे स्पष्ट सुनी जा सके, इसके प्रति लक्ष्य रखना होगा।** जप के बाद यदि मन प्रशान्ति से भर जाय तभी समझो जप ठीक तरह से हुआ है। संख्या अधिक नहीं हुई यह समझकर मन खराब मत करना।... शालग्राम जी की पूजा के सम्बन्ध में बाबाजी महाराज ने अनुमति दी है, यही सबसे बड़ी बात है। गुरु वाणी को ही शास्त्र समझो।

मेरा स्नेहाशीष लो। अत्र मंगल।

राधेश्याम।

आशीर्वादिका—माँ

१३५

ॐ हरिः

सन्त आश्रम, वाराणसी

नारायणेषु,

प्रिय.....

तुम्हारा पत्र पाकर सुखी हुई।... गुरुजी के ऊपर निर्भर रहकर मस्तक अवनत करके, किन्तु सर्वसाधारण के निकट मस्तक उन्नत रखकर समस्त प्रकार के कर्त्तव्य कर्म करते रहना है। मन को विचलित करने से नहीं चलेगा। हर समय मन में यही अनुभूति रखना कि **कर्त्तव्यभार जिन्होंने दिया है—पालन (निर्वाह) भी वे ही करा लेंगे।** बुद्धि को हर समय स्थिर रखने की चेष्टा करना। **बुद्धि के रूप में भी वे हैं, यह बात याद रखना।...** जो भी आयें तुम सभी को सादर ग्रहण करने की चेष्टा करो। सर्वरूपों में वे हैं।

...मेरा स्नेहाशीष लो। अत्र मंगल।

राधेश्याम।

आशीर्वादिका—माँ

१३६

ॐ हरिः

सन्त आश्रम, वाराणसी

१२.१२.६५

नारायणेषु,

प्रिय.....

तुम्हारा पत्र पाकर सुखी हुई।... मुझे केन्द्र बनाकर तुम लोगों के सुन्दर-जीवन सुन्दर रूप में गठित हो रहे हैं, वे सुन्दर से सुन्दरतम हों, यही प्रार्थना

CC-0. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

करती हूँ। तुम लोग यदि सुन्दर होओ, तभी तो बचे रहने की सार्थकता होगी। तुम सभी मिल-जुलकर रहो। चलने के पथ पर नाना प्रकार की तरंगें आयेंगी, उनको काटकर उठने की चेष्टा करो। पुरी के समुद्र की तरंग देखी है तो? जब तरंग आती है, तब माथा ऊँचा करके रहने से आघात लगता है, माथा नीचा कर देने पर तरंग माथे के ऊपर से होकर चली जाती है अर्थात् कितनी ही तरंगें क्यों न आयें, उनके प्रेम-सागर में डुबकी लगाकर रहना होगा, जितनी ही डुबकी लगायी जायगी, उतनी ही मणि-माणिक्य की खोज मिलेगी। तुम अपने भाईयों के साथ आनन्द से रहने की चेष्टा करो। हर समय याद रखो, मनुष्य में एक गुण होने पर, दो दोष भी होते हैं। मेरे शरीर में भी जब दो दोष होने पर मुझे प्रेम कर सकते हो, तो अन्य से प्रेम क्यों नहीं कर सकते? देहधारण के कारण कम-ज्यादा होते हुए भी कुछ रजोगुण-तमोगुण तो रहेगा ही। इसी तरह तुम्हारे भाई-बहन भी दोष-गुण सहित ही भाई-बहन हैं, दोष-गुण सहित ही उन्हें प्रेम करते रहना है। गुलाब तोड़ने पर हाथ में काँटा लगेगा ही, इससे गुलाब तोड़ने से कोई विरत रहता है क्या? बातचीत करने पर घात-प्रतिघात (मतभेद) हो सकता है, इससे बातचीत से विरत होने से नहीं चलेगा। अपने व्यक्ति को प्रेम करने में कोई बड़ी बात नहीं, दूसरे को अपना बना लेने में ही बहादुरी है। मन को विराट महान् करो—इसी में है आनन्द !... जीवन में जितना बड़ा व्रत लिया जाता है, उतना ही बड़ा घात-प्रतिघात (संघर्ष) आता है। तूफान आने पर बड़े वृक्ष में ही पहले आघात लगता है। बचने के लिए ही अवनत होना पड़ता है। अहं ही (छोटे पौधे की तरह) सहारा पाकर वृक्ष बन जाता है अर्थात् 'अहं' को ही अवनत करके 'नति' सिखानी होगी।

...मेरा स्नेहाशीष जानो। अत्र मंगल।

राधेश्याम।

आशीर्वादिका—माँ

१३७

ॐ हरिः

सन्त आश्रम, वाराणसी

२३.११.६५

नारायणेषु,

प्रिय.....

तुम्हारा पत्र पाकर सुखी हुई।... सब महापुरुषों के निकट से जो मिलता है, उसे उपदेश के रूप में ग्रहण करने की चेष्टा करो। अपने गुरु के निकट से जो

CC-0. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मिलता है, उसे आदेश जानो। क्योंकि उपदेश अनेक तरह का मिलता है, इससे घबड़ाने की कोई बात नहीं। अपने गुरु के उपदेश के साथ जो मिले, उसी को ग्रहण करने की चेष्टा करो।

...मेरा स्नेहाशीष लो। अत्र मंगल।

राधेश्याम।

आशीर्वादिका—माँ

१३८

ॐ हरिः

सन्त आश्रम, वाराणसी

१२.१२.६५

नारायणेषु,

प्रिय.....

तुम्हारा पत्र पाकर सुखी हुई।... तुम्हारे निकट कभी-कभी में सत्य प्रकाशित होता है। शुद्ध सत्वगुण के माध्यम से जो प्रकाशित होता है, वही सत्य है। तुम महापुरुषों की जीवनी जो भी पाओ, वही पढ़ो—इससे अपनी माँ को जान सकोगे। स्मरण रखो, गुरुशक्ति किसी विशेष देह में आबद्ध नहीं है—गुरुशक्ति इस विश्वब्रह्माण्ड को व्याप्त करके ही विराजमान है। ...तुमको शिष्य रूप में जब ग्रहण किया, तभी तुम्हारे समीप परिचय में आयी। जितना साधन कर सकोगे, उतनी ही उपलब्धि कर सकोगे। माता-पुत्र का परिचय जन्मजन्मान्तर से ही है।

...मेरा स्नेहाशीष लो। अत्र मंगल।

राधेश्याम।

आशीर्वादिका—माँ

१३९

ॐ हरिः

सन्त आश्रम, वाराणसी

१३.३.६६

नारायणेषु,

प्रिय.....

तुम लोगों का पत्र पाकर सुखी हुई।... हम लोग जिह्वा के द्वारा नाम जप करने की अपेक्षा मानस जप को प्रशस्त समझते हैं। मन-प्राण को केन्द्रीभूत करके यह जप चलता है। मन-प्राण यदि स्थिर न रहे, तो यह जप नहीं सुना जाता।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मन को शान्त रखने की चेष्टा करना। ऐसा होने पर देखोगे, जप तुम लोग नहीं कर रहे, जप वे ही कर रहे हैं।

अत्र मंगल।

राधेश्याम।

आशीर्वादिका—माँ

१४०

ॐ हरिः

सन्त आश्रम, वाराणसी

२७.४.९५

नारायणेषु,

प्रिय.....

तुम लोगों का पत्र पाकर सुखी हुई।... नववर्ष में तुम लोगों को निकट पाकर बहुत अच्छा लगा था। आश्रम में कोई न कोई है एवं आ भी रहे हैं, इस हिसाब से आश्रम भरपूर ही है। समुद्र की तरंगों की भाँति आते हैं और जाते हैं।... हर समय भगवान् का स्मरण-मनन करते हुए पथ पर चलो। नाम ही जीवन का पाथेय है, यह किसी भी अवस्था में मत भूलो। जब भी मन हो, तभी इष्ट-मंत्र जप करना। इष्ट-मंत्र जपने का अर्थ है जिस मंत्र के जप द्वारा सभी प्रकार के इष्ट का लाभ हो। समस्त मनुष्यों को भी इष्ट-बुद्धि से देखना अर्थात् सबमें वे ही हैं। शत्रु-मित्र कोई नहीं है। समय जब अच्छा होता है, तो शत्रु भी मित्रवत् आचरण करता है और समय जब खराब होता है, तो मित्र भी शत्रुवत् आचरण करता है। अतः समय ही प्रधान है। इसी कारण हर समय मनुष्य अपने-अपने प्रारब्ध कर्म का फल ही भोग करता है। सुख-दुःख के विषय में समय ही प्रधान है। सभी से प्रेम करने का अर्थ है, भगवान से प्रेम करना।

...मेरा स्नेहाशीष लो। अत्र मंगल।

राधेश्याम।

आशीर्वादिका—माँ

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

१४१

ॐ हरिः

सन्त आश्रम, वाराणसी
२३.६.६०

नारायणेषु,

प्रिय.....

तुम्हारा पत्र पाकर सुखी हुई।... जिस पथ पर चले हो, वह बड़ा कठिन है। नाना भावों की तरंग आकर दोलायित करना चाहेगी। पतवार अच्छी तरह पकड़कर गन्तव्य पथ पर आगे बढ़ने की चेष्टा करो। किसी भी अवस्था में हताश मत होना और निश्चेष्ट भाव भी न आये। उनके ऊपर निर्भर करके आगे बढ़ते रहो।... सभी की सेवा भगवद्बुद्धि से करते रहो। याद रखो, जब वे तुम्हारी सेवा लेना चाहते हैं, तभी नानारूपों में तुम्हारे निकट आते हैं। सभी उनके रूप हैं। इसलिए उनके सभी रूपों का यथासाध्य आदर-यत्न करो। वे सर्वव्यापी विश्वव्यापी सर्वत्र ओतप्रोत हैं। मन को प्रसन्न रखो। कर्मभोग शेष करने के लिए नाना प्रकार के कर्मों की अवतारणा करते हैं, इसलिए प्रसन्न मन से ग्रहण करो।

...मेरा स्नेहाशीष लो। अत्र मंगल।

राधेश्याम।

आशीर्वादिका—माँ

१४२

ॐ हरिः

सन्त आश्रम, वाराणसी
९.५.६०

नारायणेषु,

प्रिय.....

तुम्हारा पत्र पाकर सुखी हुई।... कीर्तन में एक भाव आ जाता है। उसे यदि कोई चेक न कर सके, तो अनेक प्रकार के कांड हो जाते हैं। कीर्तन के भाव को चेक करने का ही नियम है। जैसे दूध गर्म होने पर उबलकर गिरना चाहता है एवं उसको चम्मच से हिला-हिलाकर दबाना पड़ता है, ऐसे ही नाम करके भाव को दबाकर रखना पड़ता है, ऐसा न होने पर पात्र खाली हो जाता है—जैसे उबला हुआ दूध गिरकर नष्ट हो जाता है। हर समय भाव को अपने अंदर समेट कर रखने की चेष्टा करो।

...मेरा स्नेहाशीष लो। अत्र मंगल।

राधेश्याम।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

आशीर्वादिका—माँ

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

१४३

ॐ हरिः

सन्त आश्रम, वाराणसी
१७.५.६०

नारायणेषु,

प्रिय.....

तुम्हारा पत्र पाकर सुखी हुई।... याद रखो साधन-भजन की सुविधा के लिए ही विशेष करके इस कार्य हेतु गये हो। इसलिए आलस्य करके वृथा समय नष्ट मत करना। समय एवं सुयोग हर समय एक साथ नहीं मिलते, इसलिए सुयोग मिलने पर समय निकालने की चेष्टा करना। समय पाने पर सुयोग के लिए चेष्टा करना। सत्य पथ पर एवं सत्य विचार लेकर चलने की चेष्टा करना। पथ पर बाधा विघ्न अनेक हैं एवं अप्रत्याशित भाव से भी अनेक आ जाते हैं। बुद्धिमान व्यक्ति इसके लिए स्वयं को तैयार रखकर बुद्धिपूर्वक पथ पर चलने की चेष्टा करता है, यह बात याद रखना।

...मेरा स्नेहाशीष लो। अत्र मंगल।

राधेश्याम।

आशीर्वादिका—माँ

१४४

ॐ हरिः

सन्त आश्रम, वाराणसी
३०.८.७०

नारायणेषु,

प्रिय.....

तुम्हारा पत्र पाकर सुखी हुई। तुम्हारा सुन्दर स्वप्नवृत्तान्त जानकर बहुत अच्छा लगा। तुम अपने स्वप्नों को एक exercise कॉपी में लिखकर रखो तो ? समस्त स्वप्नों को लिखकर रख लेना। ऐसा करने पर, बाद में पढ़ने से बहुत अच्छा लगेगा। साधारणतः ये स्वप्न सत्त्वगुणान्वित होते हैं। इसलिए सत्त्वगुण की जितनी आलोचना की जाय उतना ही अच्छा। सत्त्वगुण की आलोचना से सत्त्वगुण ही बढ़ता है, यह समझो। तुम लोगों में जितना सत्त्वगुण बढ़ेगा, मुझे उतना ही आनन्द होगा।... तुम मन को आनन्द में रखना। मन में आनन्द होने पर शरीर भी स्वस्थ रहता है। किसी भी अवस्था में मन में आनन्द का अभाव न हो। जितना संभव हो परनिन्दा, परचर्चा मत करना। शरीर पर चादर ओढ़ने का अर्थ है स्वयं को बाह्य आवरण से बचाकर

CC-0. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

 Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रखना। केवल बाहर से चादर ओढ़ना ही पर्याप्त नहीं है, मन के भीतर भी बाहर की कोई आबहवा अपना प्रभाव न डाल सके। अर्थात् नाम के आवरण द्वारा मन की रक्षा बाहरी आबहवा से करनी पड़ेगी। पत्रोत्तर से तुम्हारे मंगल की इच्छा करती हूँ।

मेरा स्नेहाशीष लो। अत्र मंगल।

राधेश्याम।

आशीर्वादिका—माँ

१४५

ॐ हरिः

सन्त आश्रम, वाराणसी
अप्रैल, १९६०

नारायणेषु,

प्रिय.....

तुम लोग मेरा स्नेहाशीष लो।... कोई पीछे न रहो, उनके निकट बढ़ना होगा—यही प्रण हो। मिथ्या सब कुछ वर्जन करना होगा, सत्य ही हमारा भाषण, आचरण हो। वे मंगलमय हैं, यह जानकर मान-अभिमान सबका विसर्जन करके उनको ही दृढ़तापूर्वक पकड़े रहो। वे ही अपने हैं, वे ही स्वजन हैं और सब कुछ पर है। यहाँ की वस्तु यहीं रहेगी। वे हर समय संग थे, हैं, रहेंगे भी। एकमात्र शाश्वत वे ही हैं—दासभाव से उनकी सेवा करते रहो।...भगवत् कृपा से कल्याण लाभ करो...हर समय नाम जपते रहो। इसी के द्वारा कल्याण लाभ होगा। ...तुम्हारी माँ का शरीर कैसा है? माँ के शरीर के लिए हर समय यत्न करना। माता-पिता को साक्षात् देवता जानो। माता-पिता का आशीर्वाद ही जीवन की परम प्राप्ति है।... पत्रोत्तर में तुम्हारे मंगल की इच्छा करती हूँ।

मेरा स्नेहाशीष लो। अत्र मंगल।

राधेश्याम।

आशीर्वादिका—माँ

१४६

ॐ हरिः

कल्याणी
७.७.७७

नारायणेषु,

प्रिय.....

आज तुम्हारा जन्मदिन है। जन्म तभी सार्थक होता है यदि उनको जाना जाय। ऊपर की संख्या देखो, सब समान है—ऐसे ही सबको समानभाव से प्रेम

CC-0. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

करो—प्रिय-अप्रिय बोध मत रखना। यदि तुम्हारे जीवन में एक व्यक्ति भी अप्रिय रहे, तो यह समझो कि तुम एक भगवान को प्रेम नहीं कर सके। सभी में वे हैं यह जानकर सभी की सेवा सुन्दरभाव से करते रहो। स्वयं को यथार्थ सेविका के रूप में गठित करो। आश्रम में रहकर आश्रम की सभी प्रकार की सेवाएँ तुम्हारी प्राण हों। सभी के साथ मधुर व्यवहार करना। यह मत सोचो कि तुमने किसी के साथ खराब व्यवहार किया है इसीलिए यह बात लिख रही हूँ, ऐसा नहीं है—हमारा क्या आदर्श है यह समझा दिया है। मैं एक दिन नहीं रहूँगी—किन्तु मैं तुम लोगों के माध्यम से बचे रहना चाहती हूँ अर्थात् अपने आदर्श का रूपायन देखना चाहती हूँ। मैं इस प्रेम-रज्जू को तुम लोगों को सौंपना चाहती हूँ—मनुष्य को (यथार्थतः) मनुष्य बनाने के लिये। प्रेम-रज्जु से पशु वश में हो जाता है, मनुष्य तो होगा ही। तुम लोगों में जो प्रेम है, उसे सभी को देकर सभी को अपना बना लो। दूसरे की बात सुनने की चेष्टा करो, तब देखोगे, दूसरा तुम्हारी बात सुनेगा। यदि बड़ा होना चाहते हो तो सभी का दास अर्थात् दासी होओ। सभी के दास यदि हो सको, तभी उनकी दासी हो सकोगे। आज के दिन तुम्हारे लिए मेरा बहुत-बहुत स्नेह—और? और आदर्श—आदर्श को रूप देने की चेष्टा करो।

अत्र मंगल।

राधेश्याम।

आशीर्वादिका—माँ

१४७

ॐ हरिः

सन्त आश्रम, वाराणसी

२५.७.६५

नारायणेषु,

प्रिय.....

तुम्हारा पत्र पाकर सुखी हुई।... तुम्हारी सुन्दर मधुर अनुभूति की बात जानी। गोपालजी के हाथ में जो लम्बी लाठी की तरह देखा, वह गौ हाँकने की छड़ी है।... शरीर मन दोनों को निर्मल रखने की चेष्टा करना। निर्मल मन में ही उनका वास है।...तुम्हारे स्वप्नवृत्तान्त एवं दर्शन की बात जानकर बहुत अच्छा लगा। मन जितना शान्त निर्मल रहेगा, उतना ही यह सब दर्शन मिलेगा। लेकिन यहीं रुकना पर्याप्त नहीं—आगे और भी बढ़ो। इन सबके प्रति मन आकृष्ट न हो जाय, इससे भी बड़ी वस्तु तुम लोगों को लाभ करनी है, यह मत भूल जाना।...तुम्हारे स्वप्नों का वृत्तान्त जाना। स्वप्न के माध्यम से उनके साथ तुम्हारा जो कुछ संग है, यह

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

खूब अच्छा है। जो स्वप्न देखा है, उसे हर समय याद रखने की चेष्टा करना। यह बात ठीक ही है, जो शासन करते हैं, वे शासित से कम व्यथा नहीं पाते। तुम्हारे मधुर-मधुर स्वप्नवृत्तान्त सुनकर अच्छा ही लगता है। यह तुम्हारे प्रति उनकी विशेष कृपा है। सुस्वप्न को उनके आशीर्वाद स्वरूप जानो।... तुमने जो छोटे काले लड़के को देखा है, वह बच्चा प्यारा गोपाल है। गोपाल के सहारे तुम्हारे सारे दिन का अधिकांश समय बीते, यही तो मैं चाहती हूँ। संभव हो तो एक दिन मोहनभोग का भोग देना।... ठाकुरजी का भोग स्वयं कुछ खाने के पहले देना ही अच्छा है। फिर भी असुविधा होने पर सभी किया जा सकता है।... जप की माला दो तरह की है। छोटी माला को करमाला कहते हैं।... तुम्हारी सुन्दर-सुन्दर मधुर अनुभूति की बात जानकर खूब अच्छा लगा। जीवन के मार्ग में ये सब लीला गुरुजी का आशीर्वाद ही जानो। सेविका की तरह स्वयं को उनके चरणों में निवेदन कर दो। जितना ही अपने को निवेदित कर सकोगे, उतनी ही लीला की उपलब्धि कर सकोगे। शबरी का स्वप्न भी बड़ा सुन्दर है। उनको यथार्थ रूप में प्रेम कर पाने से ही शबरी की तरह हुआ जा सकता है। उनको अपने से भी अपना बना लो।... तुम्हारी माँ कैसी हैं? भगवद्बुद्धि से माता-पिता की सेवा करना। माता-पिता को स्थूल भगवान समझो। अध्ययन के अलावा बचे हुए समय को मुझमें लगाने की कोशिश करना। जितना उनकी ओर मन लगाओगे, उतना ही आनन्द पाओगे। मैं हर समय तुम लोगों को घेरे हुए हूँ, तुम लोग जितना याद करोगे, उतना ही अनुभव कर सकोगे। हर समय याद रखो, हम सभी एक ही धागे की माला हैं।

...स्नेहाशीष लो। अत्र मंगल।

राधेश्याम।

आशीर्वादिका—माँ

१४८

ॐ हरिः

सन्त आश्रम, वाराणसी

११.९.६६

नारायणेषु,

प्रिय.....

तुम्हारा पत्र पाकर सुखी हुई। तुम्हारे सुन्दर मधुर पत्र मुझे बहुत अच्छे लगते हैं। वे हम लोगों के साथ-साथ हैं, यह बात सत्य ही है। इसीलिए तुम अनेक प्रकार की गन्धों के माध्यम से उनकी जो उपस्थिति अनुभव करती हो, यह आनन्द की बात है। अनुभव के लिए ही तो साधना है... मैं स्थूलतः तुम लोगों से दूर रहने

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पर भी तुम्हारे पास ही पास हूँ ऐसा जानो। फूल के वृक्ष में प्रसादी जल देने से कोई दोष नहीं है। इसके फूल से आनन्द सहित उनकी पूजा कर सकती हो। प्रसादी जल या वस्तु से अन्य वस्तु का गुण बढ़ ही जाता है।... तुम्हारे सुन्दर उपवास की बात जानकर बहुत अच्छा लगा। वे जब जिसके माध्यम से जो कराना चाहते हैं, इसी तरह करा लेते हैं। इन सभी छोटे-छोटे कार्यों से समझा जाता है कि कर्मकर्त्ता हम नहीं हैं। उपवास शब्द का अर्थ है निकट में वास। उस दिन तुमने अनेक प्रकार के कार्य, नामकीर्तन, इत्यादि के माध्यम से उनके निकट ही वास किया है, इसी से उत्सव की सार्थकता हुई है।... तुमने स्वप्न में अनन्तदास जी को देखा है, यह जानकर सुखी हुई। साधन-भजन करने से उनकी कृपा से बहुत कुछ दर्शन होता है। उनके द्वारा निर्देशित पथ पर चलो, मैं यही चाहती हूँ।

तुम लोगों के यहाँ की झूलनोत्सव की सुन्दर घटना...पत्र से भी जानी। जिनके जाने पर तुम लोग सबसे अधिक खुश होते हो, वे ही जाकर तुम लोगों का गान सुन आये हैं। तुम सभी भाई-बहन मिलकर यह झूलनोत्सव किये हो, इससे मैं खूब आनन्दित हुई हूँ। सभी की मिलित चेष्टा का फल अच्छा होता है। कारण प्रत्येक का थोड़ा-थोड़ा सत्वगुण मिलने से काफी सात्विक वातावरण हो जाता है। एकमन, एकज्ञान, एक ध्यान से बहुत शक्ति बढ़ जाती है। तुम लोगों के भाई-बहनों की सुन्दर निर्मल श्रद्धा-भक्ति ही हमारा काम्य है।

मेरा स्नेहाशीष लो। अत्र मंगल।

राधेश्याम।

आशीर्वादिका—माँ

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

❀ ❀ ❀ ❀ ❀

३. शान्ति पथ

❀ ❀ ❀ ❀ ❀

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

श्री श्री १०८ स्वामी सन्तदास बाबा जी महाराज

श्री श्री १०८ स्वामी रामदास काठिया बाबा जी महाराज

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

१४९

ॐ हरिः

सन्त आश्रम, वाराणसी

नारायणेषु,

प्रिय.....

तुम लोगों का पत्र पाकर सुखी हुई।... चारों ओर की परिस्थिति जैसी है वैसी ही रहेगी, भीतर आनन्द का अभाव क्यों होगा? मानसिक अस्थिरता आने से भजन में त्रुटि तो होगी ही—फिर भी मानसिक अस्थिरता क्यों आयेगी? **सभी कुछ 'यह बाह्य' है अर्थात् भोग काटने के लिए सोपान है यह समझकर मन को शान्त रखने की चेष्टा करो।**... तुम लोगों के खाने-पहनने की व्यवस्था तो chamber नहीं करता, जो मालिक हैं वे ही कर रहे हैं—chamber तो उपलक्ष्य मात्र है। उपलक्ष्य को भी अवश्य सादरपूर्वक वरण करना होगा।... इन सबके द्वारा भी तुम्हारे धैर्य की परीक्षा हो रही है यह समझ लो। इन सब युक्ति विचार के अलावा मन को शान्त करने का और कोई मार्ग नहीं है।... तुम लोग माँ के पुत्र-पुत्रियाँ हो, इसे किसी अवस्था में मत भूलो। तुम लोगों के कष्ट की बात, असुविधा की बात जानने से तुम लोगों की इस माँ को भी बड़ा कष्ट होता है, किन्तु भोग काटने का अन्य कोई रास्ता भी नहीं है। कितने कम कष्ट के माध्यम से तुम लोगों को ले जाया जाय, इसी की तो चेष्टा कर रही हूँ। शासित से अधिक जो शासन करते हैं वे कम कष्ट नहीं पाते। इसके अतिरिक्त सुन्दर निर्मल करने का अन्य कोई उपाय नहीं है। **मन में किसी भी अवस्था में अभिमान मत लाओ।** सर्वावस्थाओं में उनको पकड़कर रहो, यही चाहती हूँ।

मेरा स्नेहाशीष लो। अत्र मंगल।

राधेश्याम।

आशीर्वादिका—माँ

१५०

ॐ हरिः

सन्त आश्रम, वाराणसी

नारायणेषु,

प्रिय.....

तुम लोगों का पत्र पाकर सुखी हुई।... आजकल डाक की अव्यवस्था के कारण किसने पत्र पाया है और किसने नहीं पाया, यही प्रश्न है। मेरे पास अनेक पत्र मास डेढ़ मास बाद आते हैं, अनेक पत्र शुरू में नहीं आते। मेरा पत्र भी तुम

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

लोगों में से कई ठीक समय नहीं पाते, या शुरू में नहीं पाते। यही तो वर्तमान परिस्थिति चल रही है। इन सबके मध्य भी हमें मानसिक साम्यशान्ति रखते हुए मार्ग पर चलना होगा। **मन को भगवत्मुखी करना पड़ेगा—अन्तर राज्य में प्रतिष्ठित करनी पड़ेगी उनकी ध्यानमूर्ति**—इसके अतिरिक्त शांति और आनन्द पाने का तो मैं कोई मार्ग नहीं देखती। शान्त-तालाब में जितने कंकड़ फेंकोगे, उसकी प्रतिक्रिया होगी ही। इसलिए मन के कोने में कोई कंकड़ न पड़े, इसकी ओर लक्ष्य रखकर पथ पर बढ़ते हुए उनकी ओर ही अग्रसर होना होगा। चारों ओर कितनी ही तरंगें क्यों न उठें, वे तुम्हारे मन के दरवाजे से भीतर न घुस सकें। **भीतर शान्त रहने से तुम देखोगे कि किसी प्रकार का घात-प्रतिघात तुमको विचलित नहीं कर सकेगा।** प्रकृति के धर्मानुसार वह अपने नाना वैचित्र्यपूर्ण खेल खेलेगी ही। तुम द्रष्टा बनकर रहो।

इधर नाना प्रतिकूल अवस्थाओं में श्रीगुरुजी का तिरोधान उत्सव सुन्दर भाव से आनन्दपूर्ण ढंग से पालित हुआ है। राससज्जा एवं कीर्तन अपूर्व आनन्दलहरी के मध्य सुसम्पन्न हुआ।

स्नेहाशीष। अत्र मंगल।

राधेश्याम।

आशीर्वादिका—माँ

१५१

ॐ हरिः

सन्त आश्रम, वाराणसी

नारायणेषु,

प्रिय.....

तुम्हारे पत्र को पाकर सुखी हुई।... **यह बात ध्यान में रखना कि समय न होने पर स्वयं भगवान आकर भी शांति नहीं देते**—इस सम्बन्ध में तुम्हें एक कहानी लिखती हूँ—

एक बार स्वर्गराज्य में भगवान इन्द्र का पुत्र अस्वस्थ हुआ। सर्वप्रथम अश्विनीकुमारद्वय को चिकित्सा के लिए बुलाया गया, किन्तु वे लोग आरोग्य लाभ नहीं करा सके। तदनन्तर धन्वन्तरि आये, किन्तु वे भी स्वस्थ न कर सके। कुछ दिन के बाद इसी तरह सब बड़े-बड़े वैद्य आकर असमर्थ हो गये, फिर एक साधारण वैद्य आकर बोले—मैं तुम्हारे पुत्र को अच्छा कर दूँगा। तब उन्होंने एक-एक करके सब वैद्यों को बुलाया, उस समय सभी ने कहा—अब हम सभी अच्छा कर सकते हैं। उन्होंने नारायण से इसका कारण पूछने पर उन्होंने कहा—तब समय नहीं हुआ था, इसलिए उस समय कोई तुम्हारे पुत्र को अच्छा नहीं कर सका—अब समय

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हुआ है, इसलिए किसी को भी निमित्त बनाकर वह अच्छा हो जायेगा। इसलिए समय न होने पर कुछ भी नहीं होता, इसके द्वारा ही समझ सकते हो।

मेरा स्नेहाशीष लो। अत्र मंगल।

राधेश्याम।

आशीर्वादिका—माँ

१५२

ॐ हरिः

सन्त आश्रम, वाराणसी

१९६१

नारायणेषु,

प्रिय.....

तुम्हारे पत्र को पाकर सुखी हुई। पुराना वर्ष व्यतीत हो गया, नवप्रभात का अरुणाकाश आ गया। मानव जीवन के पुरातन सुख-दुःख सबको भुलाकर नूतन आनन्दमय को वरण करो। नूतन छन्द, नूतन गीत में अपने को आनन्दमयी बना लो। आनन्द से आये हो—जाओगे भी आनन्दमय की गोद में—बीच के कुछ दिनों को भी यथासम्भव आनन्दमुखर करने की चेष्टा करो। जीवन के गन्तव्य पथ पर सुख-दुःख की साड़ी पहननी होगी। जितना संभव हो उससे अपने को पृथक् रखने की चेष्टा करो—उससे अपने को संलग्न मत करो। याद रखो, नये-पुराने कपड़े की तरह एक के बाद एक सुख-दुःख आते और चले जाते हैं। इन बातों को केवल बातों की माला समझकर अपने वस्त्र पर मत धारण करके रहो—औषध की भाँति उसको ग्रहण करो—उससे काम होगा। तुम लोगों को अपना स्नेहाशीष देती हूँ।

अत्र मंगल।

राधेश्याम।

आशीर्वादिका—माँ

१५३

ॐ हरिः

सन्त आश्रम, वाराणसी

नारायणेषु,

प्रिय.....

तुम लोगों का पत्र पाकर सुखी हुई।... भगवत् कृपा से तुमने उनकी सेवा करने का सुयोग पाया है। जीवरूपी नारायण की सेवा नारायण बुद्धि

CC-0. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

से करने की चेष्टा करो। देखोगे कि उससे बन्धन की सृष्टि न होकर मुक्ति के पथ पर अग्रसर हो जाओगे। सुख-दुःख दोनों ही उनके जगत में व्याप्त हैं—जो जिसको ग्रहण कर लेता है, वह उसी की माला गूँथकर अपने अंग पर धारण करता है। तुम दुःखरूपी फूल को न लेकर सुख रूपी फूलों से माला गूँथने की चेष्टा करो। तुम्हारी चेष्टा होने पर भगवत् आशीर्वाद मिलेगा। उनके आशीर्वाद से ही शान्ति समझो। अहमिका ही दुःख की कारण है—अहं बुद्धि त्याग करके जो पथ पर चलता है, शान्ति उसके करतलगत होती है यह जानो। प्रतिदिन प्रातः एवं संध्या को पाँच-दस मिनट जितना भी हो, उनका स्मरण करो—ध्यान करो उनकी मोहन मूर्ति। मोहनीय का मोहन प्रकाश तुम्हारा सब अंधकार दूर करे, यही चाहती हूँ। जीवन में यदि कभी भी क्लान्ति आये, मेरा हाथ पकड़ लेना। मैं तुम्हारे लिये हूँ।

मेरा स्नेहाशीष लो। अत्र मंगल।

राधेश्याम।

आशीर्वादिका—माँ

१५४

ॐ हरिः

सन्त आश्रम, वाराणसी

नारायणेषु,

प्रिय.....

तुम लोगों का पत्र पाकर सुखी हुई।... जीवन के गन्तव्य पथ पर झंझावात, घात-प्रतिघात आता ही है—इन सबको सहज मन से ही मान लेना पड़ेगा। थोड़ा-सा भी कुछ हो जाने पर सोचते हो, मैं...नहीं जाऊँगा, यह सब क्यों सोचते हो? जीवन-मार्ग में छोटा-बड़ा न्याय-अन्याय हम लोग करेंगे ही—इन सबको क्षमा करना पड़ेगा। जल के स्रोत की तरह ही इन सबको बहा देना होगा। इन सबको गुरुत्व (महत्व) देने पर ही इनका गुरुत्व बढ़ जाता है। सुन्दर-असुन्दर इनको लेकर ही तो दुनिया है। हम लोगों का हर समय हर बात एवं व्यवहार सुन्दर ही होगा, इसका कोई मतलब नहीं है। असुन्दर तो हम लोगों के मुख से निकलता ही है। शरत्कालीन मेघ थोड़ी देर के लिए सूर्य को ढकने के बाद जैसे वह हट जाता है। राहू के द्वारा चन्द्र-सूर्य को ग्रास किये जाने पर भी चन्द्र-सूर्य पूर्ववत् ठीक तरह उदित होते हैं। काली छाया हट जाने पर पुनः प्रकाश की छाया ही उज्ज्वल हो उठती है। मन जितना खराब करोगे उतना ही देखोगे कि मन को खराब करने के मालमिसाले का अभाव नहीं है। आनन्दमय के ध्यान एवं स्मरण-

CC-0. Jangamwadi Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मनन में हमें आनन्द से ही रहना होगा। सत्व-रज-तम—इन तीन गुणों को लेकर ही तो दुनिया है—फिर भी तमोगुण की बौछार तो आ ही सकती है—यही स्वाभाविक है। मनुष्य के भीतर भी तमोगुण की बौछार आ सकती है—फिर भी यही सब कुछ या शेष नहीं है। ये सब बातें लिखने पर समाप्त नहीं होंगी—बढ़ ही जायेंगी। तुम शरीर को ठीक रखने की चेष्टा करो। मन को शान्त रखो—सब कार्यों में अपने को उत्तरदायी क्यों समझते हो? यह भी तो एक प्रकार का 'अहं' नहीं है क्या? हम लोग अपने को पिता, माता, कर्ता समझते हैं, इसी से व्यथित होते हैं।

.....मेरा स्नेहाशीष लो। अत्र मंगल।

राधेश्याम।

आशीर्वादिका—माँ

१५५

ॐ हरिः

सन्त आश्रम, वाराणसी

नारायणेषु,

प्रिय.....

तुम्हारा पत्र पाकर सुखी हुई। सत्य है कि इस दुनिया में जो देख रहे हो, वह दो दिन का है—कुछ लेकर आये नहीं हो और कुछ लेकर जाओगे भी नहीं—इसीलिए मनुष्य इस खेल के घर में खेलते हुए आनन्द नहीं पाता। जो कुछ तुम पकड़ते हो, वह आनन्द पाने के उद्देश्य से ही पकड़ते हो, यही तुम्हारी भूल है; जिसे पकड़कर रखना चाहते हो अर्थात् जिसके द्वारा आनन्द पाना चाहते हो, वह क्षणस्थायी वस्तु है—इसलिए उससे संभवतः क्षणिक सुख मिले, किन्तु आनन्द नहीं मिलता। आनन्द अपार्थिव वस्तु है, जो एकमात्र आनन्दमय के पास ही पाया जा सकता है। उनको ही पकड़ने की चेष्टा करो—आनन्द सुधा वहीं है। पाया नहीं यह समझकर क्लान्त मत होना—आगे बढ़ते रहो, पाओगे ही—यह भरोसा एवं विश्वास लेकर।

मेरा स्नेहाशीष लो। अत्र मंगल।

राधेश्याम।

आशीर्वादिका—माँ

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

१५६

ॐ हरिः

सन्त आश्रम, वाराणसी
२१.१०.६०

नारायणेषु,

प्रिय.....

तुम्हारा पत्र पाकर सुखी हुई। मनुष्य इस जन्म का कर्मभोग इस जन्म में भोग नहीं करता। मनुष्य पूर्वजन्म के कृतकर्म का फल ही इस जन्म में भोग करता है। भोग के द्वारा भोग का क्षय होने पर ही मनुष्य सुन्दर निर्मल हो जाता है। तुम्हारा भोग भी इस जन्म में ही शेष हो जायेगा। जितने दिन यह शरीर है, उतने दिन भोग है, तत्पश्चात् तुम सुन्दर एवं आनन्दमय लोक में जाओगे—वहाँ थोड़ा भी दुःख-कष्ट नहीं है यह जानो। इसलिए धैर्य रखकर थोड़ा कष्ट भोग कर लो। उसके बाद ही तुम अपार शान्ति पाओगे—जिस शान्ति या आनन्द की तुम कल्पना भी नहीं कर सकते। मेरी ये बातें केवल सान्त्वना वाक्य नहीं हैं—जो सत्य देख रही हूँ, उसी का केवल प्रकाश किया है। इसलिए मन को शांत करने की चेष्टा करो। ठीक तरह से 'नाम' करते रहो, उससे धैर्य की वृद्धि होगी। नाम जपते-जपते तन्मयता प्राप्त होने पर देखोगे कि ये समस्त बाह्य तरंगें तुम्हें और अधिक विचलित न कर पायेंगी। गुरुचरणों में अपने परिवार के मंगल की प्रार्थना करते रहो। तुम्हारे लिए एवं तुम्हारे परिवार के लिए जो मंगलमय है उसी की वे व्यवस्था करेंगे। इसलिए आपाततः दुःख देखने पर कष्ट पाओगे यह तो स्वाभाविक है, किन्तु अभिभूत होकर मत पड़ जाना। मन को दृढ़ करने की चेष्टा करो। यह समझती हूँ कि तुम कहोगे, इतना घात-प्रतिघात मिलने पर कहाँ तक दृढ़ रहा जाय, किन्तु उपाय नहीं है। शान्ति पाने का एकमात्र उपाय है सम्पूर्ण आत्मसमर्पण। मन विद्रोह करना चाहे तो उसका बलपूर्वक दमन करो—क्योंकि उससे कल्याण नहीं होगा, वरन् दुःख की ज्वाला और अधिक बढ़ जायेगी। तुम्हारे इस जन्म के सत्कर्म का फल वृथा नहीं जायेगा, वह भी तुम अवश्य पाओगे। मेरी ये बातें अभी संभवतः तुम्हें अच्छी नहीं लग रही होंगी, किन्तु बीच-बीच में पत्र पढ़ना, उससे कल्याण होगा। भगवान नाना प्रकार के आघात देकर यह दिखला देते हैं कि जिन्हें तुम पकड़े हुए हो, उनमें से कोई कुछ नहीं है—आज है, कल नहीं रहेगा। इसलिए उस शाश्वत को ही पकड़े रहने की चेष्टा करो। तब क्या संसार छोड़ दोगे? नहीं, यह भी नहीं। संसार कर्तव्य बुद्धि से करते रहो। यह अर्थात् संसार हथौड़ा है, इसके द्वारा उनको जब जैसे घात-प्रतिघात देने की जरूरत पड़ती है, वे वैसे ही उसका

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection.

 Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

व्यवहार करते जाते हैं। जितना हथौड़े को जकड़कर रखोगे, उतना आघात अधिक आयेगा। इसलिए स्वयं को अर्थात् मन को इससे दूर ही रखने की चेष्टा करो। मनुष्य चेष्टा ही कर सकता है, फलाफल उनके हाथ है। संभव है कि तुम्हारी इस मानसिक अवस्था में यह लम्बा पत्र तुम्हें अच्छा न लगे, किन्तु बातें आती रहीं, इसलिए तुम्हें प्रेषित कर दीं। यदि इच्छा हो तो इन बातों की माला गूँथकर तुम गले में पहन सकते हो, अन्यथा वायुमण्डल में फैला सकते हो। यदि ये बातें तुम्हारे अशान्त मन को थोड़ी भी सान्त्वना दें, तो मैं सुखी होऊँगी।... मन को शान्त रखने की चेष्टा करो।

.....मेरा स्नेहाशीष लो। अत्र मंगल।

राधेश्याम।

आशीर्वादिका—माँ

१५७

ॐ हरिः

सन्त आश्रम, वाराणसी

१.१२.९१

नारायणेषु,

प्रिय.....

तुम्हारा पत्र पाकर सुखी हुई।... तुम्हारी अनेक प्रकार की अशान्ति पूर्ण बातों को जानकर बड़ा कष्ट होता है। जो भी हो सभी अवस्थाओं में मन को शान्त रखकर आनन्दित रहने की चेष्टा करो। तुम्हारे साथ कोई भी कैसा ही व्यवहार क्यों न करे, तुम सभी से प्रेम करने की कोशिश करो। सम्माननियों का सम्मान करो। जिसका-जिसका कर्मफल है वह उसका साथी है। किन्तु तुम अपने मन को सुन्दर निर्मल रखने की चेष्टा करो। तुमने यदि अपने सुन्दर मन को खो दिया तो यह बहुत कष्टकर होगा। मन ही मन नाम जप करो। नाम ही जीवन-युद्ध में जयी बन जाने में सहायता करेगा। सभी से प्रेम करो। सबसे प्रेम करके ही भगवान से प्रेम किया जा सकता है।

.....मेरा स्नेहाशीष लो। अत्र मंगल।

राधेश्याम।

आशीर्वादिका—माँ

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

१५८

ॐ हरिः

सन्त आश्रम, वाराणसी
१६.७.९४

नारायणेषु,

प्रिय.....

तुम्हारा पत्र पाकर सुखी हुई।... तुम्हारी व्यथा मैं समझती हूँ, किन्तु क्या करोगे, जब जो अवस्था होती है, उसका मुकाबला करने के अतिरिक्त अन्य कोई रास्ता नहीं है। भगवत् नाम जपो, तब अनुभव करोगे कि सभी प्रकार की परिस्थितियों में दृढ़ रहने योग्य मानसिक बल मिल गया है। प्रारम्भ में भगवत् नाम जपने में मन नहीं लगेगा फिर भी यह जान लो कि मन को स्वस्थ रखने के लिए यही औषध है। किसी भी समय कुछ सद्ग्रन्थ पाठ करो—उससे भी मनोबल बढ़ेगा। माँ तो किसी की भी चिरकाल तक नहीं रहती, मेरी भी नहीं है, लेकिन हाँ, समय से पहले जाने पर कष्ट अधिक होता है। सभी के भीतर माँ हैं यह जानकर सबसे प्रेम करने की चेष्टा करो। तब देखोगे, तुम्हारी माँ जहाँ कहीं भी होंगी, तुम्हारे प्रति प्रसन्न होंगी। तुम्हारी माँ तो सभी से प्रेम करती थीं, अपना-पराया विचार नहीं किया। माँ का आदर्श मन में रखकर चलने की चेष्टा करो।

.....मेरा स्नेहाशीष लो। अत्र मंगल।

राधेश्याम।

आशीर्वादिका—माँ

१५९

ॐ हरिः

सन्त आश्रम, वाराणसी

नारायणेषु,

प्रिय.....

तुम्हारा पत्र पाकर सुखी हुई।... जहाँ भी रहो, एक बात याद रखो—भगवान की तरह, माता-पिता की बात मानकर चलना उचित है। जीवन के गन्तव्य पथ पर माता-पिता का आशीर्वाद बहुत बड़ी चीज है। माता-पिता के मन को कष्ट देकर कोई अच्छा कार्य सिद्ध नहीं होता। एकमात्र आध्यात्मिक पथ पर चलने में उनका मत न मिलने पर उनके निकट क्षमा प्रार्थना करके भगवत् पथ पर अग्रसर होना पड़ता है। इसके अतिरिक्त अन्य किसी कार्य में उनके मत का विरोध करके किसी अच्छे कार्य में आनन्द या शान्ति नहीं मिलती। माता-पिता के अन्दर से भी

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection.

 Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भगवान का आशीर्वाद ही मिलता है। हर समय संभवत: उनका सिद्धांत मनोनुकूल नहीं होता, लेकिन यदि बिल्कुल असंभव न हो तो, मनोनुकूल न होते हुए भी उनके सिद्धान्त को मानकर चलना ही उचित है। वह आपातत: आनन्ददायक न होने पर भी भविष्य में उससे श्रेय ही होगा।

.....मेरा स्नेहाशीष लो। अत्र मंगल।

राधेश्याम।

आशीर्वादिका—माँ

१६०

ॐ हरि:

सन्त आशीष, सिंथि

१४.६.९४

नारायणेषु,

प्रिय.....

तुम्हारा पत्र पाकर सुखी हुई।... सब कार्यों में भगवान को कर्त्ता समझकर सब कुछ करते रहो। तुम निमित्त मात्र हो, तुम्हें उपलक्ष्य करके भगवान जब जो करायें, वही शान्त एवं निर्विकार चित्त से स्वीकार करने की चेष्टा करो। जितना अपने को कर्ता समझोगे, उतना ही दु:ख का बोझ बढ़ेगा। प्रसन्नता ही भगवान का आशीर्वाद है, अप्रसन्नता ही दु:ख का मूल है। गरीब, धनी, कुछ तो मन का व्यापार है, कुछ वास्तविक है। वास्तव में जब ऐसा हो, तब ऐसा समझो कि तुम्हारी मलिनता दूर करने के लिए ही भगवान ने यह दिया है, इसको परिष्कार करने की औषधि एकमात्र नाम है—तुम अपने मन में नाम की शक्ति लाने की चेष्टा करो, तभी सबके मन में यह शक्ति संचरित कर सकते हो। यह शक्ति जितनी प्रसारित करोगे, उतनी दु:ख की मात्रा कम होकर आनन्द की मात्रा बढ़ेगी। हर समय गुरु तथा भगवान के ऊपर विश्वास रखकर पथ पर चलो।

स्नेहाशीष लो। अत्र मंगल।

राधेश्याम।

आशीर्वादिका—माँ

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

१६१

ॐ हरिः

सन्त आश्रम, वाराणसी
विजयादशमी
१४०१ बँगला

नारायणेषु,

प्रिय.....

श्री गुरु की अपार कृपा से इस बार श्री श्री दुर्गा माँ की पूजा का उत्सव सुन्दर भाव से सुसम्पन्न हुआ है।... हमारी विश्वजननी माँ दुर्गा विश्वव्यापी हैं, इसलिए जो जहाँ पर भी है, सब ने निश्चय ही उनका आशीष पाया है। आज विजया के प्रथम प्रभात में तुम लोगों को विजया का स्नेहाशीष देती हूँ। भगवान का स्मरण-मनन करते हुए जीवन के प्रति पदक्षेप में आगे बढ़ने की चेष्टा करो।

वर्तमान के दुःखमय जगत में आनन्द, शान्ति पाना क्रमशः दुर्लभ होता जा रहा है। मनुष्य वास्तविक आनन्द नहीं पा रहा है, इसलिए साकार की ओर अग्रसर न होकर क्रमशः विकारग्रस्त हो गया है। हम लोगों को मनोनुकूल आनन्द देने के लिए ही तो उन्होंने साकार रूप धारण किया है। दसभुजा माँ दसों दिशाओं को आलोकित करके आनन्द देने आती हैं, किन्तु हमारा विकारग्रस्त मन उसको भी ठीक तरह ग्रहण नहीं कर पाता। हम लोग क्रमशः अन्याय अपराध की ओर आगे बढ़ते जा रहे हैं, यह सब हम समझते हुए भी समझना नहीं चाहते। **इसका कारण भी यही है कि हम लोग अत्यधिक स्थूल रूप में विकारग्रस्त होते जा रहे हैं।** हमें अब केवल पैसा-पैसा-पैसा ही चाहिए, इसीलिए जीवन काँटामय हो गया है। हम लोगों के अन्दर आनन्द का अभाव हो गया है, इसीलिए घर एवं बाहर शान्ति का अभाव हो गया है। जहाँ शान्ति का अभाव है, वहीं अशान्ति और उसका प्रभाव फैलता है। पति-पत्नी, पुत्र-पुत्री, भाई-बहन, बन्धु-बान्धव किसी में भी जैसे शान्ति नहीं है, असहिष्णुता है। **एकमात्र भगवत् नाम संग के बिना हम लोग उस आनन्द के अधिकारी नहीं हो सकते।** इसलिए आज विजया के दिन तुम सभी से निवेदन है—कुछ भगवान के नाम का स्मरण-मनन करके पथ पर चलो, तभी तुम लोग शान्ति प्राप्त करोगे। तुम लोगों की शान्ति में ही मेरा आनन्द है। अच्छे रहो...

अत्र मंगल।

राधेश्याम।

आशीर्वादिका—माँ

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

 Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

१६२

ॐ हरिः

सन्त आश्रम, वाराणसी

नारायणेषु,

प्रिय.....

तुम्हारा पत्र मिला।... तुम्हारा मन इस समय भी... लिये रोयेगा, यह तो स्वाभाविक है। फिर भी **शोक को जितना पकड़कर रखोगे, शोक भी उतना ही स्थान बना लेगा।** भगवान के चरणों का फूल उनके चरणों में ही लीन हो गया है, यह समझकर मन में सान्त्वना रखने की चेष्टा करो। बगीचे में तो कितने ही फूल खिलते हैं, सभी फूल क्या समयानुसार उनके चरणों में जाकर पहुँचते हैं? जो फूल निर्मल एवं सुन्दर रहते हुए ही उनके चरणों में चढ़ जाते हैं उनके लिए तो दुःख की कोई बात नहीं है, वरन् आनन्द की ही बात है। हम सब उनके चरणों में पहुँचने के लिए ही तो साधना कर रहे हैं। उसने आपाततः दृष्टि से साधना करके ही साधनोचित धाम लाभ किया है, यह तो भाग्य की बात है। मनुष्य माया के बंधन में बँधा है, इसलिए माया का बंधन टूटने पर कष्ट होना तो स्वाभाविक है, किन्तु कष्ट को तो जय करना ही पड़ेगा। **नाम जपो, नाम जपते-जपते ही घाव सूख जायेगा।**

तुम्हारी इस व्यथा ने स्थूलतः मुझे भी व्यथित किया है। मेरे बाबा तुम्हें सान्त्वना दें, मैं यही इच्छा करती हूँ। जब रोना आये तब रो लेना, इससे मन कुछ हल्का होगा।

मेरा स्नेहाशीष लो। अत्र मंगल।

राधेश्याम।

आशीर्वादिका—माँ

१६३

ॐ हरिः

सन्त आश्रम, वाराणसी

नारायणेषु,

प्रिय.....

तुम्हारा पत्र पाकर सुखी हुई।... माँ, तुम्हारे दुःख से मैं भी बड़ी दुःखित होती हूँ। तुम्हारा प्रारब्ध कितना कठिन है, यही देख रही हूँ। बाबा की कृपा से तुम्हें कुछ शान्ति मिले तो मुझे भी कुछ शान्ति मिलती। तुम लोगों का दुःख मुझे खूब आघात देता है, किन्तु प्रतिकार का रास्ता नहीं खोज पाती। तुम लोगों को मैंने

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बाबा के चरणों में ही समर्पित कर दिया है, वे मंगलमय हैं, तुम लोगों का मंगल ही करेंगे। इतना मैं निश्चय जानती हूँ। तुम दुःख से विचलित मत होना और निष्ठा के साथ भगवान का नाम जपती रहो, शान्ति पाने का यही मार्ग है।

...मेरा स्नेहाशीष लो। अत्र मंगल।

राधेश्याम।

आशीर्वादिका—माँ

१६४

ॐ हरिः

सन्त आश्रम, वाराणसी

नारायणेषु,

प्रिय.....

तुम्हारा पत्र पाकर सुखी हुई।... तुम्हारी अशान्ति का कारण जाना। शान्ति-अशान्ति सभी कुछ मनुष्य पूर्व जन्मार्जित कर्मफल के अनुसार भोग करता है। इस जन्म में जिन्हें हम सुख-दुःख दाता समझते हैं, वास्तव में वे सुख-दुःख दाता नहीं हैं, उन्हें निमित्त मात्र समझो। फिर भी जो निमित्त बनते हैं, वे उस कर्म के फल को प्राप्त करते हैं। आपाततः दृष्टि से वह फल न मिलने पर भी भविष्य में अर्थात् जन्मान्तर होने पर भी वह उस फल को पायेगा ही। यह जानकर सज्जन व्यक्ति दुष्ट के प्रति दयाशील होते हैं, यह जानो। तुम किसी के प्रति विद्वेषभाव मत रखो। तुम भगवान को कर्म समर्पित करके सारे कर्म निष्काम भाव से करने की चेष्टा करो। निर्भरशील व्यक्ति की भगवान रक्षा करते हैं।... कोई चिन्ता मत करना।

...स्नेहाशीष लो। अत्र मंगल।

राधेश्याम।

आशीर्वादिका—माँ

१६५

ॐ हरिः

सन्त आश्रम, वाराणसी

नारायणेषु,

प्रिय.....

तुम्हारा पत्र पाकर सुखी हुई।... किसी भी अवस्था में विचलित मत होना। सभी अवस्थाओं में सन्तोष रखकर चलने की चेष्टा करो। मन में जितना असन्तोष रहेगा, दुःख की मात्रा उतनी ही बढ़ जायेगी। भगवान कब किस कर्म के माध्यम से किसका क्या मंगल करते हैं, यह साधारण बुद्धि से नहीं समझा जा

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

 Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सकता। इसलिए उनके समस्त अवदानों को नतमस्तक होकर मान लेना ही बुद्धिमान का कार्य है। नाम ठीक तरह से करते रहो, इसके द्वारा ही कल्याण लाभ करोगे।

...मेरा स्नेहाशीष लो। अत्र मंगल।

राधेश्याम।

आशीर्वादिका—माँ

१६६

ॐ हरिः

सन्त आश्रम, वाराणसी

नारायणेषु,

प्रिय.....

तुम्हारा पत्र पाकर सुखी हुई।... तुम्हारे मन में जब भी जो दुःख हो, निश्चय ही वह माँ को बताओ। यदि तुम माँ को बतलाकर थोड़ा भी हल्का हो जाओगे, तब मेरा माँ होना सार्थक है। वर्तमान में तुम्हारी जो परिस्थिति है, उससे मन विचलित होना स्वाभाविक है। विचलित होने से दुःख की मात्रा बढ़ जाती है, इसीलिए विचलित न होने के लिए लिखती हूँ। आप्राण भगवान को पुकारने की चेष्टा करो। दुःख में सान्त्वना एकमात्र नाम ही देगा। अपनी स्त्री को यह बात कहना, यदि संग्रह कर पाओ, तो बाबा जी महाराज की 'पत्रावली' का 'शोक शान्ति' अध्याय पढ़ना। बाबा जी महाराज की 'पत्रावली' को पढ़ने से उपकार होगा, ऐसा मैं समझती हूँ। बीच-बीच में महापुरुषों की जीवनी पढ़ो, इससे कल्याण होगा। सत् आलोचना में समय बिताने की चेष्टा करो और सभी कार्यों में भगवान के ऊपर निर्भरशील बनो।

...मेरा स्नेहाशीष जानो। अत्र मंगल।

राधेश्याम।

आशीर्वादिका—माँ

१६७

ॐ हरिः

सन्त आश्रम, वाराणसी

नारायणेषु,

प्रिय.....

तुम्हारा पत्र पाकर सुखी हुई।... देख रही हूँ कि किसी भी अवस्था में तुम्हारा मन स्वाभाविक अवस्था को नहीं प्राप्त हो रहा है। अपने मन को क्यों इस तरह भाराक्रान्त कर रहे हो? पुत्रियों के दायित्व को लेकर इतना क्यों सोच रहे हो? जिन्होंने दिया है वे ही दायित्व को वहन करेंगे। अपने ऊपर दायित्व लेकर रहने में

CC-0 Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ही मनुष्य का कष्ट बढ़ता है। जिनकी वस्तु है उनके ऊपर निर्भर रहने से ही सब सुंदर रूप में हो जाता है। तुम भी दोनों बच्चों को उनके चरणों में अर्पण करके अपने को हल्का करने की चेष्टा करो। सबके साथ बातचीत करो, इससे देखोगे कि मन में और दुःख का गुंजन नहीं होगा। बीच-बीच में गाना गाओ, इससे मन बहुत अच्छा रहेगा। शिशु को कभी भी डाँटना मत, ऐसा करने पर इष्ट से अनिष्ट ही अधिक होगा।

...मेरा स्नेहाशीष लो। अत्र मंगल।

राधेश्याम।

आशीर्वादिका—माँ

१६८

ॐ हरिः

सन्त आश्रम, वाराणसी

नारायणेषु,

प्रिय.....

तुम्हारा पत्र पाकर सुखी हुई।... तुम लोग सांसारिक कारण से अशान्त हो, यह जाना। सब अशान्ति उनके चरणों में समर्पित करके शान्ति पाने की चेष्टा करो। याद रखो शान्ति अन्दर की वस्तु है, बाहर से कितनी ही तरंगें क्यों न आयें, भीतर को तरंगित न कर सकें इसी रूप में चलने की चेष्टा करो। संसार में रहने पर उसका घात-प्रतिघात आयेगा ही, अग्नि के समीप रहने पर उसकी आँच तो लगेगी ही, किन्तु अग्नि से जल न पाओ, इस ओर लक्ष्य रखो। खूब निष्ठापूर्वक नाम जपते रहो, इससे घात-प्रतिघात बहुत कम हो जायेगा।

...मेरा स्नेहाशीष लो। अत्र मंगल।

राधेश्याम।

आशीर्वादिका—माँ

१६९

ॐ हरिः

सन्त आश्रम, वाराणसी

१९.८.६३

नारायणेषु,

प्रिय.....

भगवान के ऊपर निर्भर करके रहने की चेष्टा करो। मन को जितना शान्त रख सकोगे, उतना ही घात-प्रतिघात से चंचल नहीं होगा। मनुष्य के अनन्त जन्मों की कर्मराशि का भोग काटने के लिए ही जीवन में अनेक घात-प्रतिघात

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

 Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आते हैं। तुम्हारी इन समस्त चिन्ताओं के माध्यम से भोग ही कट रहा है। भगवान तुम लोगों को शुद्ध सुन्दर निर्मल करके गोद में लेने के लिए ही जितना मैल है, उसका भोग के द्वारा क्षय कर रहे हैं, इसलिए किसी भी कारण से भय मत करना।

...मेरा स्नेहाशीष लो। अत्र मंगल।

राधेश्याम।

आशीर्वादिका—माँ

१७०

ॐ हरिः

सन्त आश्रम, वाराणसी

१७.१२.६२

नारायणेषु,

प्रिय.....

तुम्हारा पत्र पाकर सुखी हुई।... माँ तो तुम्हारे संग ही हैं। आना होने पर ही कृपा और न आने पर अकृपा—यह बात मत सोचो। हर समय याद रखो कि भोग काटने के लिए जब जिसके लिये जो कल्याणकारक है, वही वे करते हैं। हमारा मनोनीत-अमनोनीत दोनों ही उनकी कृपा है। मन को खराब मत करना। जैसी भी परिस्थिति हो, उसे मान लेने की चेष्टा करो। मैं चिरकाल के लिए तुम्हारी हूँ, रहूँगी भी। बीच में जो बाधाएँ आती हैं, वे तुम्हारे आकर्षण को बढ़ाने के लिए ही हैं। ऐसा होने पर देखोगे, किसी के प्रति विद्वेष भाव नहीं आयेगा।... मन को शान्त रखने की चेष्टा करो। कभी भी क्षिप्त मत करो।

मेरा स्नेहाशीष लो। अत्र मंगल।

राधेश्याम।

आशीर्वादिका—माँ

१७१

ॐ हरिः

सन्त आश्रम, वाराणसी

नारायणेषु,

प्रिय.....

तुम्हारा पत्र पाकर सुखी हुई।... कितना ही दुःख, कष्ट क्यों न आये, विचलित मत होना। याद रखो, इसके द्वारा भगवान तुम लोगों को शुद्ध निर्मल कर रहे हैं। संभवतः आज सुख से रहने पर तुम लोग उनको इस तरह से न पुकारते। गीता में भगवान ने कहा है—चार प्रकार के लोग उनको पुकारते हैं। उनमें एक

CC-0 Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आर्त है। दुःख में उनको आकुलता से पुकारा जाता है। इसलिए याद रखो, दुःख भी एक प्रकार का आशीर्वाद है। जो दुःख उनका स्मरण करा दे, वह तो आशीष है। जो सुख उनको भुला दे, वह अभिशाप है।

मेरा स्नेहाशीष जानो। अत्र मंगल।

राधेश्याम।

आशीर्वादिका—माँ

१७२

ॐ हरिः

सन्त आश्रम, वाराणसी

१२.१०.४९

नारायणेषु,

प्रिय.....

तुम्हारा पत्र पाकर सुखी हुई।... दुःख नहीं आयेगा, यह तो स्वाभाविक नहीं है, फिर भी दुःख में तुम लोग अभिभूत मत हो जाना। दुःख को जीतने की चेष्टा करो। मन सुन्दर निर्मल होगा—हृदय में प्रशस्त आसन बिछा रहेगा, इसलिए जब भी वे आयें, आसन पर बैठ सकें, आसन के अभाव में वे वापस न लौट जायें। संसार में रहो, लेकिन उनको केन्द्र में रखकर रहो। मालिक वे होंगे, लेकिन यह केवल भाषा तक ही न रहे, जीवन में कार्यकारी करो, शान्ति मिलेगी। शान्ति बाहर की वस्तु नहीं है, यह तो अन्तर की वस्तु है, इसको शुष्क कठिन रूप में मत ग्रहण करो। आघातकारी को क्षमा करने की चेष्टा करो, तभी भगवान से तुम्हें क्षमा मिलेगी। जो आघात देता है, वह बड़ा नहीं है, जो आघात सहन करता है वही बड़ा है। अपने मन को छोटा मत करो।

मेरा स्नेहाशीष लो। अत्र मंगल।

राधेश्याम।

आशीर्वादिका—माँ

१७३

ॐ हरिः

सन्त आश्रम, वाराणसी

नारायणेषु,

प्रिय.....

तुम्हारा पत्र पाकर सुखी हुई।... भगवान जब जिस अवस्था में रखें, उसी अवस्था में सन्तोष रखने की चेष्टा करो। अपने को सम्पूर्ण रूप में उनके चरणों

CC-0. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

 Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

में समर्पण करने के लिए यत्नशील हो जाओ। तुमको भगवान इतनी सब असुविधा देकर तुम्हारा भोग ही काट रहे हैं यह जानो। जब असुविधा हो तब जिससे मन में विकार न आये, इस ओर लक्ष्य रखो। जब मन में विकार न आये, तब समझना कि भोग कट गया है। वे तुमको शुद्ध, सत्व, निर्मल करके अन्त में तुमको निकट बुला लेंगे। पारलौकिक सद्गति के सम्बन्ध में तो तुम लोगों को कोई चिन्ता ही नहीं है, स्थूलतः जिससे शान्ति से रह सको, ऐसी चेष्टा करो।

...मेरा स्नेहाशीष लो। अत्र मंगल।

राधेश्याम।

आशीर्वादिका—माँ

१७४

ॐ हरिः

सन्त आश्रम, वाराणसी

२८.६.४९

नारायणेषु,

प्रिय.....

तुम्हारा पत्र पाकर सुखी हुई।... जो अतीत का कर्मफल है वह भोग करना ही होगा—यदि मैं अभी शीघ्र प्रतीकार करूँ, तब वह जमा होकर भविष्यत् में तुमको कष्ट देगा, इसलिए सोचती हूँ, कट जाये। यह दुःख तुम्हें सुन्दर निर्मल कर दे। दुःख को सह्य किया जा सकता है, यदि वह सुफल ले आये। तुम्हारा दुःख भी परिणाम में सुफल लायेगा, यही भरोसा करती हूँ। तुम भी इसी भरोसे पर आस्था रखो। कोई किसी को दुःख नहीं देता, केवल निमित्त मात्र होता है। और जो निमित्त बनते हैं, वे अपने कर्मफलानुसार कभी भी शान्ति नहीं पा सकते। इसलिए जो दुःख के निमित्त कारण बनते हैं, वे कृपा के पात्र हैं। इसलिए उनके प्रति विद्वेष बुद्धि रखकर अपने को छोटा मत करो। अपने को उससे ऊर्ध्व में रखो, भविष्य की ओर देखकर चिन्ताधारा का परिवर्तन करो। जब संसार करने का व्रत लिया है, अच्छी तरह करो। किन्तु संसार की कालिमा से अपने को लिप्त मत करो। संभवतः तुम यह कहोगे कि संसार जब करूँगा, तो उसकी कुछ कालिमा तो हाथ में लगेगी ही। यह युक्ति अस्वीकार्य नहीं है। किन्तु कालिमा से लिप्त रहना होगा, इससे कोई मतलब नहीं, साथ ही साथ वह कालिमा साफ कर दो। उससे लिप्त रहने में सार्थकता कहाँ है? बोलो? वह कालिमा कैसे छूटेगी? वह साबुन उनका ही 'नाम' है। जब भी आघात मिले, तभी आघातदाता का स्मरण करो। आघात दाता एकमात्र वे ही हैं, अन्य सब निमित्त मात्र हैं। तुम-मैं सब उनके हाथों के यन्त्र हैं, अन्य कुछ नहीं है?...

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सभी बातें संभवतः बुद्धि के द्वारा तुम्हें ज्ञात हैं। युग युगान्तर से इन ज्ञात बातों की ही पुनरावृत्ति हो रही है। मैंने भी यही किया है। फिर भी ये बातें मेरी बुद्धिवृत्ति की बातें नहीं हैं, इसीलिए मैं प्रति अणु-परमाणु (पूर्ण रूप) से विश्वास करती हूँ। क्योंकि तुम मेरे प्रिय हो, इसीलिए तुम इस विषय में विश्वास कर सकते हो, ऐसा मैं समझती हूँ।...

...मेरा स्नेहाशीष लो। अत्र मंगल।

राधेश्याम।

आशीर्वादिका—माँ

१७५

ॐ हरिः

सन्त आश्रम, वाराणसी

नारायणेषु,

प्रिय.....

तुम्हारा पत्र पाकर सुखी हुई। किसी भी अवस्था में विचलित मत होना। जो संकट देते हैं, वे ही त्राण भी करते हैं। भगवान अपमान देकर निकट ही खींचते हैं, ऐसा जानो। अपमान के द्वारा आत्म अभिमान क्षीण हो जाता है। जैसे शिशु माँ से मार खाकर भी उसी को कसकर पकड़ लेता है, ऐसे ही मान-अपमान कुछ भी क्यों न पाओ, उनको ही कसकर पकड़े रहने की चेष्टा करो। इस दुनिया में सभी दो दिन का खेल है—मान-अपमान कुछ भी स्थायी नहीं है।

...मेरा स्नेहाशीष लो। अत्र मंगल।

राधेश्याम।

आशीर्वादिका—माँ

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

४. विविध प्रसंग

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

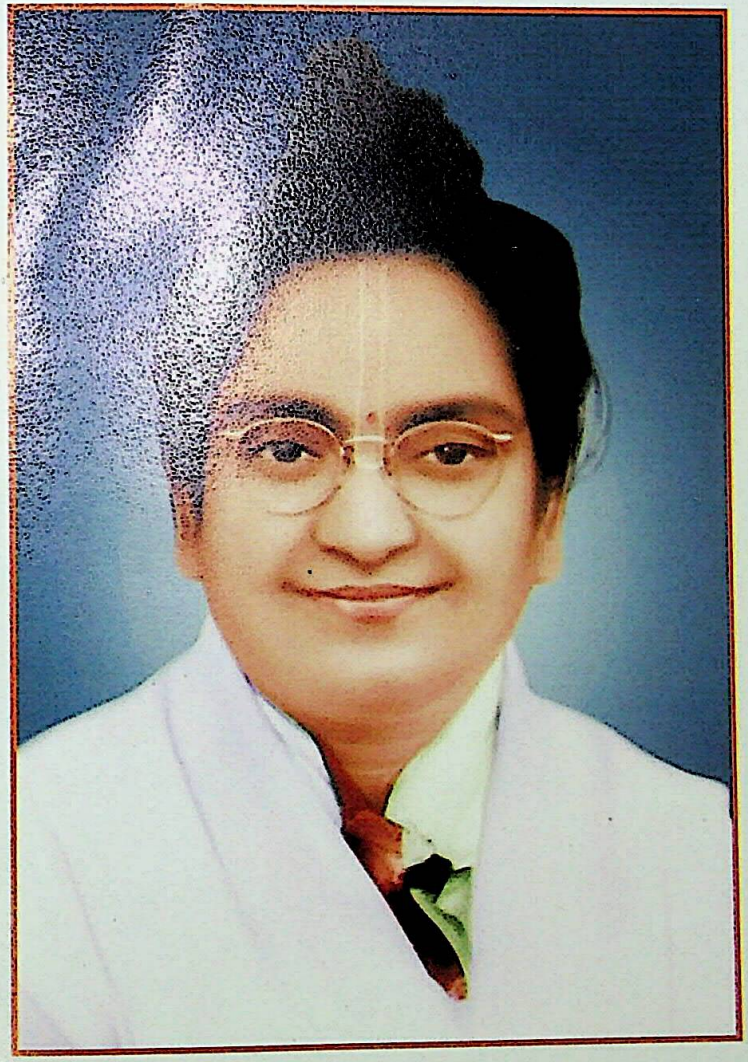

श्री श्री १०८ शोभा माता जी

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ॐ हरिः

सन्त आश्रम, वाराणसी
२९.१.९२

नारायणेषु,

प्रिय.....

तुम लोगों का पत्र पाकर सुखी हुई। दिन आता है, चला जाता है। पुनः वर्ष बीतने पर फरवरी या फागुन मास, तुम लोगों के उत्सव का मास आ गया। मेरे लिए यह महिना इसीलिए प्रिय है, क्योंकि इसी समय मेरे प्रिय गोपाल-गोपालिकायें आकर माँ की गोद में लिपट जायेंगे। बेटे-बेटियों का निकट आना ही माँ का असल आनन्दोत्सव है। इसीलिए आश्विन एवं फागुन मास मेरे लिए प्रिय एवं आवाहन मास है। फिर भी इसके साथ हमें यह भी याद रखना होगा कि केवल बाह्य आनन्दोत्सव में व्यस्त रहना पर्याप्त नहीं है, चिर शाश्वत आनन्द होना चाहिए, जिस आनन्द से विच्युति न हो। जो आनन्द आनन्दमय की ओर ले जाये। जो आनन्द स्मरण-मनन में उनकी आनन्दमय मूर्ति को झलका दे। जिस आनन्द का स्पर्श पाकर हम लोग परनिन्दा, परचर्चा, परदोष दर्शन इत्यादि भूल जायें। तभी उत्सव में आनन्दोत्सव करना होगा सार्थक। दोष, त्रुटि यदि देखना चाहो तो इस उत्सव में उसका अभाव नहीं होगा। सैकड़ों जगहों से छिन्न वस्त्र की भाँति सैकड़ों दोषों से भरा है उत्सव, न आवाहन जानती हूँ, न जानती हूँ विसर्जन। किन्तु हमारा लक्ष्य हो—दोष, त्रुटि, क्षुद्रता, नीचता, सर्व प्रकार असुविधा इत्यादि को भूलकर आनन्दमय की आनन्दमय सत्ता को उपलब्ध करने के लिए जागरण की चेष्टा—तभी उत्सव में सबका मिलित होना होगा आनन्दमय। वर्ष के तीन सौ पैंसठ दिनों में, समझ लो वर्ष के पाँच दिन नाना असुविधाओं में भी बिताने हैं, आनन्द-मिलन को सार्थक करने के लिये। तभी देखोगे, कोई भी असुविधा, असुविधा न लगेगी, सभी सुविधा एवं सार्थकमय प्रतीत होगा। तुम्हारे आनन्द से ही उत्सव प्राङ्गण आनन्द-हिल्लोल से भर उठेगा। जिस हिल्लोल में सम्पूर्ण आकाश एवं वायुमण्डल में आनन्द का स्पर्श अनुभूत होगा। असुविधा की नौका खेते हुए ले जाओ आनन्दमय की ओर, यही हो उत्सव के लिए तुम लोगों का व्रत। पत्र के अन्त में तुम लोगों के लिए स्नेहाशीष देती हूँ। सकुशल रहो।

अत्र मंगल।

राधेश्याम।

आशीर्वादिका—माँ

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

१७७

ॐ हरिः

सन्त आश्रम, वाराणसी
११.१२.९१

नारायणेषु,

प्रिय.....

तुम्हारे पत्र को पाकर खुशी हुई। श्री गुरुकृपा से यहाँ का कर्फ्यू गत ९.१२ से हटा दिया है एवं स्कूल खुल गया है। कॉलेज अभी भी नहीं खुला है। भगवत् कृपा से १ मास ७ दिन के दीर्घकालीन कर्फ्यू में हम लोगों को कोई असुविधा नहीं हुई।... अभी भी लोगों में स्वाभाविक अवस्था नहीं आ सकी है। एक आतङ्क भाव सभी में है। कब, किस मुहूर्त में फिर कर्फ्यू न लग जाये। यह हुई कर्फ्यू की इतिकथा।

वर्तमानकालीन जो अवस्था है, उसमें हमें सकुशल एवं आनन्द में रहना होगा। जो कुछ हो रहा है, सभी को उनकी ही लीला समझकर आनन्द से स्वीकार करना होगा। और दिन के आलोक से रात के अन्धकार पर्यन्त इसी विश्वास को लेकर चलना है कि वे मंगलमय हैं। जो कुछ हो रहा है सब मंगलमय मंगल के लिए ही कर रहे हैं, यद्यपि साधारण विचार से हम नहीं समझ सकते हैं। किन्तु वे असाधारण, सर्वद्रष्टा, मंगलमय भगवान हैं, यह हम किसी अवस्था में न भूलें। उनका ही नाम स्मरण-मनन करते हुए यह भवसमुद्र हमें पार करना होगा। वे पार करने वाले नाविक हैं, समय आने पर पार करेंगे ही, यह विश्वास मत छोड़ना। वे डूबने नहीं देंगे, समय होने पर स्नेहपूर्ण हाथ अवश्य ही बढ़ायेंगे, जिसकी सहायता से हम उनकी गोद में चले जायेंगे। तुम लोग यह विश्वास लेकर उनकी ओर अग्रसर होते रहो। तुम लोग उनके चरणों में समर्पित फूल हो यह मत भूलो। स्नेहाशीष देकर अत्र मंगल, राधेश्याम कर रही हूँ।

आशीर्वादिका—माँ

१७८

ॐ हरिः

सन्त आश्रम, वाराणसी
२५.८.५२

नारायणेषु,

प्रिय.....

तुम्हारा पत्र पाकर सुखी हुई। किसको क्या बात, किस अर्थ में मैं कहती हूँ, यह समझने की क्षमता तुममें नहीं है। इसलिए तुम्हें जो बात नहीं कही

CC-0 Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

है, अन्य को जो बात कही है, उसे सुनकर दूसरे से कुछ कहना उचित नहीं है। मनुष्य कई बार कई बातें समय-विशेष पर व्यक्ति-विशेष से बोलता है, दूसरे व्यक्ति के द्वारा सुन लिये जाने पर भी चुप रहना पड़ता है एवं अपने लिये भी वह प्रयोज्य है कि नहीं यह बिना पूछे मान लेना उचित नहीं है।... छोड़ो, मन खराब मत करना। मुझे गलत मत समझना। केवल मनुष्य की एक दिन की एक बात से किसी के विषय में विचार मत करना। उसके व्यवहार पर लक्ष्य करना।... तब जगज्जननी रूप में ही देखने की चेष्टा करना। मन को जितना हल्का रख सकोगे, उतनी ही शान्ति पाओगे। साधारण बात को बड़ा समझकर कष्ट मत पाना।

...मेरा स्नेहाशीष लो। अत्र मंगल।

राधेश्याम।

आशीर्वादिका—माँ

१७९

ॐ हरिः

सन्त आश्रम, वाराणसी

नारायणेषु,

प्रिय.....

तुम्हारा पत्र पाकर सुखी हुई।... जीवन पथ पर सुख-दुःख कुछ भी क्यों न आये, दोनों को ही हम समानभाव से ग्रहण कर सकें। दोनों को समानभाव से ग्रहण न कर पाने से सुख-दुःख से अतीत नहीं हुआ जा सकता। और इन दोनों से अतीत न होने पर प्रकृत आनन्द का अधिकारी नहीं हुआ जा सकता। हम सभी अवस्थाओं में उनके प्रिय हो सकें, यही हमारी चेष्टा हो। ...तुम्हारी प्रार्थना मुझे याद है, किन्तु प्रार्थना को पूर्ण करने के मालिक तो वे हैं—इसलिए उनसे प्रार्थना करते रहो। वे तो हर समय हमें पुकार रहे हैं, किन्तु हम उस पुकार को सुन कहाँ पाते हैं? इस पुकार को सुनने के लिए ही तो साधना है। हम लोगों का मन मोह जाल के द्वारा आवृत है। वही उनकी कृपा से काटना होगा।

...मेरा स्नेहाशीष लो। अत्र मंगल।

राधेश्याम।

आशीर्वादिका—माँ

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

१८०

ॐ हरिः

सन्त आश्रम, वाराणसी

नारायणेषु,

प्रिय.....

तुम्हारा पत्र पाकर सुखी हुई।... तुम लोग अच्छे रहो। सकुशल रहने के लिए सर्वप्रथम यह समझना होगा कि सब कुछ मनोनुकूल नहीं होगा। हमारे मनोनुकूल भी नहीं होता। हम लोग भी सोचते हैं कि हम लोगों में कितने ही दोष-त्रुटि क्यों न रहें, तुम लोग सुन्दर निर्मल एक फूल बन जाओ। सुन्दर फूल बनने के लिए सब कुछ सौन्दर्यपूर्ण दृष्टि से देखना होगा। यह दुनिया तीन गुणों की समष्टि से चल रही है—सत्त्व-रज-तम। कम या अधिक सभी में ये तीन गुण हैं। तुम लोग चेष्टा करो, इनमें से सत्त्व को चयन कर सको। जितना यह गुण बढ़ेगा, उतने अच्छे रह सकोगे। अपने भीतर अजस्त्र दोष हैं, इसलिए हम दूसरे के दोष न देखें। जितना दोषों को न देखने का अभ्यास करोगे, उतने ही कम दीखेंगे। क्रोध को जीतने का व्रत लो। क्रोध का कारण नहीं है—यह क्रोध के ऊपर जय नहीं हुई। कारण रहने पर भी क्रोध न हो। सभी के साथ प्रेम से बात करने की चेष्टा अवश्य ही करो।

.....मेरा स्नेहाशीष लो। अत्र मंगल।

राधेश्याम।

आशीर्वादिका—माँ

१८१

ॐ हरिः

सन्त आश्रम, वाराणसी

नारायणेषु,

प्रिय.....

तुम्हारा पत्र पाकर सुखी हुई।... किसी समय दूसरे के पैसे से हाथ न लगाना। भगवान तुम्हें जितना दें, उसके ऊपर निर्भर रहकर ही सब व्यवस्था करो। यदि औषध-पथ्य के लिए पैसा वे न दें, तो समझो चिकित्सा कराने की उनकी इच्छा नहीं है। यदि वास्तव में निर्भर करके सब भार उनके ऊपर दे सको, तब देखोगे कि तुम्हारी सब व्यवस्था वे ही कर रहे हैं। कभी भी किसी अवस्था में महाजन के पैसे से हाथ मत लगाना। जैसे भी संभव हो, इस पैसे का ऋण उतारने की आप्राण चेष्टा करना। सत् चेष्टा के पीछे भगवान् का आशीर्वाद होता है।

...मेरा स्नेहाशीष लो। अत्र मंगल।

राधेश्याम।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

आशीर्वादिका—माँ

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

१८२

ॐ हरिः

सन्त आश्रम, वाराणसी

नारायणेषु,

प्रिय.....

तुम्हारा पत्र पाकर सुखी हुई।... काल्पनिक दुःख-कष्ट को सोचकर क्यों मन को भारी कर लेते हो? जिन्होंने जीव दिया है, आहार की व्यवस्था वे ही करेंगे। किसी के भरण-पोषण के कर्त्ता तुम नहीं हो। खाने-पहनाने के मालिक वे ही हैं। इसलिए तुम्हारी इतनी दुश्चिंता का क्या कारण है? नहीं समझती। अपने ऊपर कर्तृत्वाभिमान होने पर ही मनुष्य कष्ट पाता है, उनके ऊपर छोड़ने पर ही आनन्द पाता है। अपने ऊपर भार समझते हो, इसीलिए आज यह नहीं है, वह नहीं है ऐसी चिन्ता हो रही है। देखो, बाबा की कृपा से बाबा के ऊपर निर्भर किया हुआ है, इसीलिए हम लोगों की आय भी नहीं है, लेकिन अभाव भी नहीं है। तुम्हारी तो फिर भी एक निर्दिष्ट आय एवं एक वासस्थान भी है, फिर क्यों इतनी चिन्ता करके कष्ट पाते हो?

...मेरा स्नेहाशीष लो। अत्र मंगल।

राधेश्याम।

आशीर्वादिका—माँ

१८३

ॐ हरिः

सन्त आश्रम, वाराणसी

नारायणेषु,

प्रिय.....

तुम्हारा पत्र पाकर सुखी हुई।... तुम्हारे व्यवसाय की बात जानी। यह सब विषय मैं नहीं समझती। फिर भी यदि तुम अच्छा समझते हो, तो योगदान करो। बुद्धि रूप में भी वे ही विराजमान हैं।

कुछ आरम्भ करने से पहले अच्छी तरह विचार कर लेने से एक स्थिर सिद्धान्त निकलेगा। उसके बाद उसी के अनुसार चलो। तुम्हारे सब कार्यों में मेरा आशीर्वाद है। मन में कोई दुविधा न रखकर कार्य करते रहो। भद्र व्यक्ति के साथ पहले से ही अच्छी तरह सब बात कहकर कार्य आरम्भ करो। जिससे बाद में कटुता न हो। व्यवसाय में व्यवसायी बुद्धि को लेकर ही चलो। लेकिन किसी पर प्रताड़ना मत करना या प्रताड़ित मत होना। आँख-कान खुला रखकर कार्य करते रहो। भगवान

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पर निर्भर करके सब कार्यों में अग्रसर होते रहो। मेरा आशीर्वाद है। जय-पराजय उनके हाथ में है। तुम्हारा कर्म में ही अधिकार है।

मेरा स्नेहाशीष लो। अत्र मंगल।

राधेश्याम।

आशीर्वादिका—माँ

१८४

ॐ हरिः

सन्त आश्रम, वाराणसी

नारायणेषु,

प्रिय.....

तुम्हारा पत्र पाकर सुखी हुई। सच, सबके साथ मिलकर रहने में एक आनन्द है, इसलिए पहले के लोग एकान्नवर्ती परिवार में थे, इसलिए उनका मन भी बहतु ऊँचा था। जितनी संकीर्णता ने हम लोगों को ग्रसित किया है, उतने ही हम संकुचित हो रहे हैं। संकीर्णता से ही दुःख मिलता है। सभी व्यथा से म्रियमाण हैं, किन्तु उस व्यथा का उत्स कहाँ है? कोई नहीं खोजता। मन जितना बड़ा होता है, मनुष्य उतना ही आनन्द पाता है। सुन्दर उदार मन में भगवान का विशेष प्रकाश है। इसलिए उदार मन में आनन्द का अभाव नहीं होता।

मेरा स्नेहाशीष ग्रहण करो। अत्र मंगल।

राधेश्याम।

आशीर्वादिका—माँ

१८५

ॐ हरिः

सन्त आश्रम, वाराणसी

नारायणेषु,

प्रिय.....

तुम्हारे पत्र को पाकर सुखी हुई।... संसार कर रहे हो, मन को खूब मजबूत रखना। इससे संसार की पतवार ठीक चला सकते हो। सभी से प्रेम करो, तभी सभी का प्रेम पा सकोगे। क्या पाया है, इसका विचार मत करना, स्वयं देते रहो। देते रहने से एक न एक दिन उसका मूल्य अवश्य ही पाओगे। कर्मफल वृथा नहीं जाता। कितना ही आघात क्यों न आये, धैर्यहीन मत होना, भगवान को और अधिक मजबूत हाथों से पकड़कर रखना। ठाकुरजी ने तुम लोगों को ग्रहण कर लिया है, अपना बना लिया है। इसलिए चिन्ता क्या? मन में हर समय नाम का

CC-0 Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

स्मरण करो। उन्हीं को साथी जानो, वे प्रति मुहूर्त तुम लोगों के साथ-साथ हैं। जितने निर्भरशील बनोगे, उतनी ही इसकी उपलब्धि कर सकोगे...भय नहीं है।

.....स्नेहाशीष लो। अत्र मंगल।

राधेश्याम।

आशीर्वादिका—माँ

१८६

ॐ हरिः

सन्त आश्रम, वाराणसी

नारायणेषु,

प्रिय.....

तुम्हारा पत्र पाकर सुखी हुई।... याद रखो कोई किसी को अशान्ति नहीं दे सकता। अपने-अपने पूर्व-पूर्व जन्मार्जित कर्म से ही मनुष्य इस जन्म में शान्ति-अशान्ति भोग करता है। तुम्हारे नाम को लेकर यदि कोई मिथ्या कहे तो इससे उसका अनिष्ट होगा। तुम्हारी कोई लाभ-हानि नहीं है। **निन्दक व्यक्ति सज्जन व्यक्ति की निन्दा करके समस्त पाप हर लेता है।** वे कुछ भी क्यों न कहें, तुम लोग उस पर ध्यान मत देना, तभी देखोगे कि धीरे-धीरे वे अपना संशोधन कर रहे हैं। तुम किसी के प्रति विद्वेषभाव मत रखना। तब अन्यायकारी दण्ड पायेगा। तुम अपना कर्तव्य ठीक तरह करने की चेष्टा करो—दूसरे की निन्दा-प्रशंसा से क्या होता है? इन सबकी ओर लक्ष्य न रखकर जिससे यथार्थ में अच्छे हो सको, इसकी चेष्टा करो।

...मेरा स्नेहाशीष लो। अत्र मंगल।

राधेश्याम।

आशीर्वादिका—माँ

१८७

ॐ हरिः

सन्त आश्रम, वाराणसी

नारायणेषु,

प्रिय.....

तुम्हारा पत्र पाकर सुखी हुई।... तुमने अपने प्रश्नों के उत्तर ठीक ही पाये हैं एवं जो उत्तर पाये हैं, उन्हें अच्छी तरह मन में रखने की चेष्टा करो। ऐसा होने पर देखोगे, इस विषय में और अशान्ति नहीं पाओगे। जो होता है, उसे मान लेना ही बुद्धिमान का कार्य है। वृक्ष का एक पत्ता भी यदि उनकी इच्छा के बिना नहीं हिलता, तो क्या यह उनकी इच्छा के बाहर है? सब कुछ उदार मन से ग्रहण करने की चेष्टा

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

करो। जितना अधिक क्षमा कर सकोगे, उतनी ही भगवान की क्षमा पाओगे।... तुम किसी के विरुद्ध मन में विद्वेष भाव मत रखना। जीव से द्वेष करने का अर्थ है उनसे द्वेष करना। गीता में भी देखो, उन्होंने बार-बार समदृष्टि की बात ही लिखी है। जीव अपनी इच्छा से कुछ भी नहीं करता, सब जब उनकी ही इच्छा से हो रहा है, तब मनुष्य किससे द्वेष करेगा? यदि सब कुछ सहज सरलभाव से मान सको, तो उससे आनन्द पाओगे। तुम youngman हो—इससे तुममें मन की प्रसारता क्यों न आयेगी? तुम पुष्प का बगीचा बना रहे हो, तुम्हारा मन भी फूल की तरह ही सुन्दर हो। राधा-श्याम का ध्यान करके एकदम उन्हें अपना बना लो, यही चाहती हूँ। वे दूर नहीं हैं—एकदम निकट से निकटतम हैं। वे बाहर की वस्तु नहीं हैं, इसलिए उनको बाहर खोजने मत जाना। मन का आलोक जलाने से ही उनको देख सकोगे।

....मेरा स्नेहाशीष लो। अत्र मंगल।

राधेश्याम।

आशीर्वादिका—माँ

१८८

ॐ हरिः

श्री वृन्दावन

१९६१ ई.

नारायणेषु,

प्रिय.....

तुम्हारा पत्र पाकर सुखी हुई।... जितना भी देखूँ, जहाँ पर भी क्यों न जाऊँ, मुझे आश्रम की तरह कहीं अच्छा नहीं लगता। सच, ऐसा लगता है जैसे सब सन्त आश्रम में है। उस दिन धक्का-धुक्की खाते-खाते सोचा, इन सबसे क्या लाभ है? क्या कुछ ज्यादा पाया जाता है? उनका प्रत्येक अणु-परमाणु मेरे बाबा की कृपा से भरा है। जहाँ भी रहो, मन को उनके चरणों में बाँधकर रखो। संयमित जीवन बिताओ, सेवा धर्म ही तुम्हारा बड़ा धर्म है—ठाकुरजी की सेवा और भगवत् बुद्धि से जीव सेवा। जितना संभव हो, कम बात करो—अधिक बात करने से शक्ति का अपचय होता है। मन को प्रफुल्ल रखो। जो हो रहा है, शान्त मन से ग्रहण करो। जो लिख रही हूँ, कोई भी नवीन बात नहीं है, फिर भी तुम लोगों को पुरातन बात याद दिलाने के लिए ही मेरा नूतन रूप में जन्म है।

...मेरा स्नेहाशीष लो। अत्र मंगल।

राधेश्याम।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

आशीर्वादिका—माँ

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

१८९

ॐ हरिः

सन्त आश्रम, वाराणसी
२५.९.६१ ई.

नारायणेषु,

प्रिय.....

तुम्हारा पत्र पाकर सुखी हुई। इस बार तुम्हारे लिए मन बहुत उत्कंठित है। लगता है यही माया या मोह है। मातायें इसीलिए सन्तानों से मायामोह नहीं छोड़ पातीं। इसी से माँ दुर्गा श्मशानवासी होते हुए भी सन्तान परिवृता रूप में मानवों के पास प्रतिभात होती हैं। सन्तान का दल माँ के अंग से लगा ही हुआ है। कर्म-क्षय करके महामाया के चरणतल में मिलने के लिए नाना दिक्‌दिगन्त उत्साहित हैं, कर्म का अवसान होने पर मिलित होने की आशा लेकर ही। फूल तो चारों ओर बिखर जाते हैं, मेरा काम है, बिखरे हुए फूलों की माला गूँथकर उनके गले में पहना देना। तुम लोग भी तो एक-एक फूल हो, कब तुम लोग सुन्दर माला बनकर सुन्दर माँ के गले में सुसज्जित होओगे, उसी प्रतीक्षा में हूँ। एक दिन तुम लोग उनके गले में सुशोभित होओगे, इस सम्बन्ध में कोई सन्देह नहीं है।

अत्र मंगल।

राधेश्याम।

आशीर्वादिका—माँ

१९०

ॐ हरिः

सन्त आश्रम, वाराणसी
८.७.९३

नारायणेषु,

प्रिय.....

परम मंगलमय श्रीगुरु की कृपा से इस बार का गुरुपूर्णिमा उत्सव भी आनन्द से महासमारोह पूर्वक सुसम्पन्न हुआ है। उत्सव का दिन वृष्टि से स्नात था और आकाश था धूप से झलमल। उत्सव के पहले दिन अधिवास होता है, उस दिन दोपहर को प्रचण्ड धारा में वर्षण हुआ, ऐसा लगा मानो प्रकृति देवी ने आकाश, वायु एवं रास्ते की समस्त कालिमा को धोकर गुरुपूर्णिमा के दिन को हास्योज्ज्वल भोर में वरण किया हो। गुरुपूर्णिमा का दिन केवल जीवजगत के लिए ही वरणीय नहीं है, परमा प्रकृति भी उसका सादर आवाहन करती हैं धरित्री के वक्ष पर, आकाश

CC-0. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

एवं समस्त वायुमण्डल 'नाम' से मुखरित होकर गुरु-परम्परा शक्ति का आवाहन करते हैं। ऐसा लगता है मानो अपनी-अपनी गुरु-परंपरा ने 'गुरु' रूप का परिग्रह कर लिया है और वे जीव उद्धारिणी परंपरा-शक्ति को लेकर धरित्री पर अवतरित हुए हैं। मनुष्य की सामर्थ्य नहीं है कि वह साधन-शक्ति के द्वारा उस शक्तिमान की पूजा-वन्दना कर सके। इसीलिए विश्व प्रकृति आनन्दधारा के स्वागत को बताने के लिए उनकी पूजा-वन्दना हेतु सहायक है। इस विश्ववंदनीय गुरुशक्ति के आवाहन के लिए इसी दिन ऊँच-नीच, धनी-दरिद्र सर्वप्रकार की पुत्र-पुत्रियाँ तुम लोगों के छोटे सन्त आश्रम कल्याणी में भी सम्मिलित हुए थे। उन्हीं की कृपा से उत्सव आनन्दधारा से स्नात साफल्यमण्डित हुआ था। प्रायः हजार नरनारायण प्रसाद पाये थे। इसके अतिरिक्त अनुष्ठान सूची के प्रत्येक अनुष्ठान समय से सुन्दर रूप में सम्पन्न हुए। कर्मीजनों की कर्मदक्षता भी उल्लेखनीय है। इस दिन वे लोग धैर्य और स्थैर्य की प्रतिमूर्ति हो जाते हैं। यह भी मेरे प्रति श्रीगुरुदेव की विशेष कृपा है।

तुम सभी के सर्व प्रकार के अर्घ्य अंजलि उनके श्रीचरणों में दी गई। उत्सव की समाप्ति पर आनन्दधारा का आशीर्वाद स्नेह तुम सभी को देती हूँ।

यदि दैव बाधा-विघ्न न आये तो आगामी १ अगस्त को तुम लोगों की माँ दिल्ली कालका मेल से वाराणसी रवाना होंगी।

अत्र मंगल।

राधेश्याम।

आशीर्वादिका—माँ

१९१

ॐ हरिः

सन्त आश्रम, वाराणसी

११.१२.९३

नारायणेषु,

प्रिय.....

तुम लोगों का पत्र पाकर सुखी हुई।... आजकल जब जो परिस्थिति आती है, उसे शान्त मन से मान लेने पर ही मानसिक शान्ति अव्याहत रहती है। ऐसा न हो पाने से टेंशन बढ़ता है, जो किसी काम में सहायता नहीं करता है, किन्तु अस्थिरता बढ़ती है। तुम लोग किसी अस्थिरता के शिकार न होकर जप-ध्यान के द्वारा मन को शान्त रखकर शान्ति के पथ पर अग्रसर होने की साधना करो। चंचल अस्थिर मन से ध्यान-धारणा कुछ भी ठीक तरह नहीं होता। भगवत् कृपा से तुम लोग सकुशल रहो, आजकल उनकी कृपा के बिना सकुशल रहना असंभव है। उनकी

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

करुणा से ही मन शान्त होने का पाथेय पाता है। अवस्था अनुकूल होने पर मन शान्त हो यह बड़ी बात नहीं है, प्रतिकूल अवस्था में मन को शान्त रखने का नाम ही साधना या आराधना है।

यदि इस बीच तुम लोगों को पत्र नहीं मिला, तो मैं इसका कारण बता रही हूँ कि यहाँ मेरे गुरुजी महाराज का तिरोधान उत्सव एवं रास-पूर्णिमा उत्सव खूब सुन्दर आनन्दमय भाव से सम्पन्न हुआ है और एक खबर यह है कि तुम लोगों की माँ पूजा के पहले से जो अस्वस्थ हुई थीं, वह अवस्था अभी भी है। एक के बाद एक रोग उनके शरीर को स्पर्श किये हुए है, अवश्य तुम लोगों के स्थानीय भाई-बहन नाना प्रकार के डॉक्टरों को दिखाकर नाना रूपों में चिकित्सा करा रहे हैं। जो भी हो यह चिन्ता का कारण नहीं है, एक खबर है।

अब बनारस के आगत शीत ने हम लोगों का आलिंगन किया है। फिर भी उसका स्नेहमय स्पर्शमात्र है, कष्टकर तीव्रता नहीं है। सब मिलाकर हम लोग अच्छे ही हैं। तुम लोग सकुशल रहो।

तुम लोगों को मैं अपना स्नेहाशीष देती हूँ।

अत्र मंगल।

राधेश्याम।

आशीर्वादिका—माँ

१९२

ॐ हरिः

सन्त आश्रम, वाराणसी

२९.४.९५

नारायणेषु,

प्रिय.....

तुम लोगों का पत्र पाकर सुखी हुई।... अच्छे तो हो? तुम भयभीत क्यों हो? सब समय तो तुम्हारे साथ बाबाजी महाराज हैं। कोई डरो मत, भय खाते हैं पागल लोग। जो नाम मिला है, उस नाम को जपने से भूत-प्रेत में सामर्थ्य नहीं है कि वह तुम लोगों के निकट आ सके। तुम हर समय मन ही मन नाम जपो, तब देखोगे कि बाबाजी महाराज, काठियाबाबा तुम्हारे निकट हैं और तुम्हारी माँ तो हैं ही। माँ तो माँ ही हैं।

मेरा स्नेहाशीष लो। अत्र मंगल।

राधेश्याम।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection. आशीर्वादिका—माँ

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

१९३

ॐ हरिः

सन्त आश्रम, वाराणसी
२७.४.९५

नारायणेषु,

प्रिय.....

तुम्हारा पत्र पाकर सुखी हुई।... बाबा..., मन क्यों अच्छा नहीं है? मन को अच्छा रखना ही पड़ेगा। जीवन पथ पर सुख-दुःख की कितनी तरंगें आती हैं, समुद्र की तरंगोंवत् आती और चली जाती हैं। किसी का स्थायित्व नहीं है। तरंग को 'मेरी' कहकर पकड़ोगे तो वह रुकेगी नहीं, चली जायेगी, फिर आयेगी। जीवन को भी ऐसा ही समझो। ...फिर भी यह ठीक ही है कि मेरे बेटे-बेटियों के कष्ट पाने से मुझे भी कष्ट होता है।

...मेरा स्नेहाशीष लो। अत्र मंगल।

राधेश्याम।

आशीर्वादिका—माँ

१९४

ॐ हरिः

सन्त आश्रम, वाराणसी

नारायणेषु,

प्रिय.....

तुम्हारा पत्र पाकर सुखी हुई।... समस्त Energy इस तरह नष्ट करने से मुझे क्या दोगे? सभी का एक नियम है। गीता में देखा है—'अति' किसी भी प्रकार की ठीक नहीं है। सभी कुछ नियमित रूप में करना पड़ता है। इतना अनियम शरीर और मन कैसे सहन करेगा? तुम लोगों के इतने अनियम का बोझा ढोते-ढोते मैं थक गई हूँ।... ? न्यस्त कर्म का बोझा तो क्षय करना ही होगा, किन्तु धीरे-धीरे।

...मेरा स्नेहाशीष लो। अत्र मंगल।

राधेश्याम।

आशीर्वादिका—माँ

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

 Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

१९५

ॐ हरिः

सन्त आश्रम, वाराणसी
६.२.५२

नारायणेषु,
प्रिय.....

तुम्हारा पत्र पाकर सुखी हुई।... जीवन पथ पर जो दायित्व बढ़ रहा है, उसे कर्तव्यबुद्धि से सुसम्पन्न करते रहने की चेष्टा करो। जब क्लान्त महसूस करो तो उनका नाम जपो। इससे क्लान्ति दूर हो जायेगी, आनन्द के अधिकारी हो जाओगे। मेरे स्नेह से वंचित नहीं रहोगे, यदि तुम लोगों का स्नेह रहे। मैं अपने स्नेह के सम्बन्ध में ऐसा समझती हूँ कि मैं किसी से भी स्नेह नहीं करती। मनुष्य अपने-अपने कर्मानुसार मुझसे स्नेह आकर्षण करके ले जाते हैं। इसलिए यदि तुम्हारा स्नेह मेरे ऊपर रहे, तो यह भय नहीं है। न होने पर भी फल्गु नदी होकर ही रहूँगी।

मेरा स्नेहाशीष लो। अत्र मंगल।

राधेश्याम।

आशीर्वादिका—माँ

१९६

ॐ हरिः

सन्त आश्रम, वाराणसी

नारायणेषु,
प्रिय.....

तुम्हारा पत्र पाकर सुखी हुई।... ऋण न करके जीवन पथ पर चल सको, इस ओर लक्ष्य रखो। ऋण बड़े दुःख का कारण है। ऋण की यंत्रणा बड़ी कष्टकर है। शाक भात खाना पड़े इससे कोई आपत्ति नहीं, किन्तु ऋण मत करो। ...सबको लेकर, उनका नाम जपते हुए शान्ति से रह सको, ऐसी चेष्टा करो। आनन्द भोग में नहीं, त्याग में है, यह बात हर समय याद रखो। सभी सम्मिलित रूप में उनकी ओर अग्रसर हो सको, इसकी चेष्टा करो।

मेरा स्नेहाशीष लो। अत्र मंगल।

राधेश्याम।

आशीर्वादिका—माँ

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

१९७

ॐ हरिः

सन्त आश्रम, वाराणसी

नारायणेषु,

प्रिय.....

तुम्हारा पत्र पाकर सुखी हुई।... सभी कार्यों में मैं भगवान के ऊपर निर्भर हूँ एवं तुम लोगों को भी उनके चरणों में समर्पित कर दिया है, इसलिए जो व्यवस्था हो, उसी को सबसे कल्याणजनक मानने की चेष्टा करो। तुम लोग भी सभी कार्यों में उनके ऊपर निर्भरशील बनो, मैं भी यही चाहती हूँ। मेरा आशीर्वाद तुम लोगों को घेरे हुए है एवं उनका आशीर्वाद मुझे घेरे हुए है, इसलिए हम लोगों को चिन्ता क्या ?

...कमर के नीचे के अंश को निम्नाङ्ग कहा जाता है। निम्नाङ्ग अपेक्षाकृत तामसिक भावापन्न होता है। इसलिए देव सेवा के पक्ष में या श्रद्धा दिखाने के पक्ष में इसका स्थान नीचे है, इसके सृष्टिकर्ता भी वे हैं। देह के अन्दर जैसे सत्व-रज-तम ये तीन गुण हैं, इसी प्रकार उत्तम, मध्यम, अधम ये तीन अंश भी हैं। फिर भी अनिच्छाकृत भाव से किसी वस्तु से यदि पैर लग जाय, इससे अपराध नहीं होता, किन्तु पीछे असम्मान दिखाना होता है—इसी भय से मन ही मन क्षमा प्रार्थना करके प्रणाम करना चाहिए। जिस प्रकार हमारे शरीर में ऊर्ध्व अंग, मध्य अंग, अधः अंग हैं, इसीलिए यह भेद है, लेकिन पशु में यह भेद नहीं है। ये लोग पैर उठाकर ही श्रद्धा ज्ञापित करते हैं।

मेरा स्नेहाशीष लो। अत्र मंगल।

राधेश्याम।

आशीर्वादिका—माँ

१९८

ॐ हरिः

सन्त आश्रम, वाराणसी

नारायणेषु,

प्रिय.....

तुम्हारा पत्र पाकर सुखी हुई।... तुम लोग सभी मिलकर यदि अपना संशोधन न करो, तो और भी अधःपतन होगा। परस्पर को दोषारोप करने से तो लाभ नहीं है, वरन् परस्पर संशोधन हो, ऐसी चेष्टा करो। चेष्टा के द्वारा बहुत कुछ संभव है। फिर भी—"दूसरे के जिस दोष को देखकर तुम रोष कर रहे हो, पहले देखो कि तुममें वह दोष है या नहीं। धीमान दूसरे के दोष का दर्शन करता है, अपनी

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

 Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दोषराशि का संशोधन करता है।'' —यही बात हर समय याद रखने की चेष्टा करो। इस सम्बन्ध में और विशेष कुछ नहीं लिखा।

...मेरा स्नेहाशीष जानो। अत्र मंगल।

राधेश्याम।

आशीर्वादिका—माँ

१९९

ॐ हरिः

सन्त आश्रम, वाराणसी

नारायणेषु,

प्रिय.....

तुम्हारा पत्र पाकर सुखी हुई।... तुम्हारी खबर जानी। अपने-अपने पूर्व जन्मकृत कर्म का फल इह जन्म में भोग करना है। क्योंकि तुम्हारा ऊपर वाला पूर्व-जन्म में करके आया है, इसीलिए इस जन्म में सरदारी कर रहा है। मनुष्य का कोई कर्म वृथा नहीं जाता। जो जैसा करके आया है, तदनुसार फल भोग करता है। गत जन्म में तुमने उसके ऊपर सरदारी की है, इसीलिए इस जन्म में उसकी ताबेदारी कर रहे हो। वह कर्म कट जाने पर उससे मुक्ति मिल जायेगी। जिसके पास जितना ऋण है वह कर्म रूप में हो या रुपये-पैसे के रूप में, शोध करना ही पड़ता है। यदि तुम्हारे मन में इसके लिए उसके ऊपर असंतुष्टि न रहे एवं सहजभाव से ग्रहण कर सको, तो भोग शीघ्रातिशीघ्र कट जायेगा।... मन को सुन्दर, परिष्कार, निर्लिप्त रखना चाहिए। शुद्ध सुन्दर मन में उनका वास समझो।

...मेरा स्नेहाशीष लो। अत्र मंगल।

राधेश्याम।

आशीर्वादिका—माँ

२००

ॐ हरिः

सन्त आश्रम, वाराणसी

नारायणेषु,

प्रिय.....

तुम लोगों का पत्र पाकर सुखी हुई।... जो स्थूलतः दूर रहते हैं उन्हें भी मैं अन्तर से भी अन्तरतम प्रदेश में सस्नेह रखे हुए हूँ। लेकिन हाँ, स्थूल का प्रकाश कुछ तो रहेगा ही। मेघों की आड़ में रहने पर भी सूर्य रहेंगे ही, ऐसे ही जो दूर हैं उनके लिए माँ का स्नेह प्यार अप्रकाशित होते हुए भी प्यार-स्नेह आशीर्वाद रहता

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ही है। अच्छा माँ, क्यों तुम अपना मन इतना खराब कर रही हो? तुम्हें क्यों इतना अकेला लगता है? भगवान तो हर समय तुम्हारे साथ-साथ हैं। जब स्वयं को ज्यादा अकेला समझो, तब कोई अच्छी पुस्तक पढ़ो, भजन सुनो, मन ही मन जप करो।

...मेरा स्नेहाशीष लो। अत्र मंगल।

राधेश्याम।

आशीर्वादिका—माँ

२०१

ॐ हरिः

सन्त आश्रम, वाराणसी

९.४.५१ ई.

नारायणेषु,

प्रिय.....

तुम्हारा पत्र पाकर सुखी हुई।... मन को सहज, सरल, सुन्दर करो। जिससे सब कुछ सुन्दर देख सको। जैसे—जब जिस रंग का चश्मा पहना जाता है, जगत को उसी रंग का देखा जाता है, ऐसे ही मन को सुन्दर कर सकने पर सभी कुछ सुन्दर दिखाई देता है। सचमुच, जगत तो सुन्दर ही है—उनकी सृष्ट वस्तु क्या असुन्दर हो सकती है? हम लोग दृष्टि विभ्रम से ही विकृत रूप देखते हैं। सहज, सरल, सुन्दर होओ, यही इच्छा करती हूँ।

...मेरा स्नेहाशीष लो। अत्र मंगल।

राधेश्याम।

आशीर्वादिका—माँ

२०२

ॐ हरिः

सन्त आश्रम, वाराणसी

नारायणेषु,

प्रिय.....

तुम्हारा पत्र पाकर सुखी हुई।... तुम्हारी हताशा भरी चिट्ठी मिली। जीवन में अनेक बार इस तरह का शुष्कभाव आता है। जब शुष्कभाव आये, तब सभी कुछ इस तरह तीता विस्वाद लगता है। एकमात्र नाम-जप और सद्ग्रन्थ पाठ को छोड़कर इस शुष्कभाव को काटने की अन्य कोई औषध नहीं है। यह ठीक दिल्ली का लड्डू है। जो खाता है वह भी पछताता है, जो नहीं खाता है वह भी पछताता है। इसलिए जिन्होंने विवाह किया है, वे भी पछताते हैं। जिन्होंने नहीं किया है उनमें से कई पछताते

CC-0. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हैं। जब तक मन में परिपूर्ण शान्ति नहीं आती, तब तक पछताने का भाव रहेगा ही। इसलिए हम लोग किसी से जोर देकर 'विवाह करो' यह नहीं कहते, और 'विवाह मत करो' यह भी नहीं कहते। सभी बड़े हो गये हैं, विचार करके ही अपना-अपना पथ चुन लेते हैं। फिर भी तत्त्वत: यह भी सत्य है, जो जिस पथ को चुनता है, वह भी भगवत् इच्छाधीन है। दोनों ही पथ भोग काटने के सोपान हैं।

...मेरा स्नेहाशीष लो। अत्र मंगल।

राधेश्याम।

आशीर्वादिका—माँ

२०३

ॐ हरि:

सन्त आश्रम, वाराणसी

नारायणेषु,

प्रिय.....

तुम लोगों का पत्र पाकर सुखी हुई।... तुम लोगों से नये रूप में क्या लिखूँ या बोलूँ—जो बोलना या लिखना था सभी हो गया है। अब केवल तुम लोगों को करना है। तुम लोग अपने-अपने कर्तव्य, दायित्व सुन्दर रूप में पालन करके उनकी वस्तु उनके निकट वापस जाने के लिए अपने मन-प्राण को तैयार करो। आत्मिक कल्याण ही हम लोगों का यथार्थ कल्याण है, यह भूलो मत।... सत्य पालन करना ही हमारा कर्तव्य है। सत्य ही हमारा पाथेय है। यद्यपि आजकल के समय में तुम लोग कहोगे—सत्याश्रयी होकर चलने में परिणाम में दु:ख ही बढ़ता हुआ देखकर हम कैसे इस पथ पर चलने की चेष्टा करें? सच, आजकल के समय में प्रेय न होने पर भी जो श्रेय है, इस विषय में संशय मत रखो। आपातत: दृष्टि से सत्य से हमारे दु:ख की मात्रा बढ़ जाने पर भी परिणाम में वह हमारे स्थायी आनन्द के पथ को ही प्रशस्त करेगा। यह केवल मेरी बात नहीं है—हमारी शास्त्रीय वाणी या उपदेश है। इसलिए तुम लोग जागतिक मोह में सत्य को मत भूलो। तुम लोगों के आचरण को देखकर ही तुम्हारे परवर्ती अनुसरणकारी कार्य करेंगे। तुम लोग ऐसे पथ का आदर्श ठिकाना बताकर जाओ जिससे तुम्हारे अनुसरणकारीजन ठिकाने के अनुसार पथ पर चलकर निर्भूलभाव से भगवत् चरणों में पहुँच सकें। चेष्टा तो हमें करनी ही होगी, वह कितनी ही कठिन क्यों न हो। तुम लोगों की चेष्टा के पीछे गुरुजी का आशीर्वाद होगा।

...मेरा स्नेहाशीष लो। अत्र मंगल।

राधेश्याम।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection. आशीर्वादिका—माँ

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

२०४

ॐ हरिः

सन्त आश्रम, वाराणसी
२२.३.९०

नारायणेषु,

प्रिय.....

तुम लोगों के पत्र पाकर सुखी हुई। उत्सव के शेष यात्रीगण कल रवाना हो गये। पुनः अब तुम लोगों में से कौन कब आयेगा इसी आशा में तुम्हारी माँ गोद फैलाकर बैठी है।

उत्सव के बाद दोल (होली) उत्सव हो गया। श्री श्री मदन मोहन और राधारानी को वज्रधाम में दोलमंच पर लाकर सजाया गया था। अनके रंगों के अबीर से मानो ब्रजधाम इन्द्रधनुष के रंग में रंजित हो गया था। ऐसे लग रहा था जैसे कोहरे से आच्छन्न सप्त रंगों के भीतर से हँसते हुए वे आनन्द में पुलकित हो रहे हैं। एक बार वे दिखाई पड़ रहे थे, फिर रंग से ढँके जा रहे थे। जैसे वह एक विचित्र लुक्काचोरी का खेल हो। यहाँ के एक माड़वाड़ी व्यक्ति ने कहा था—'होली पर वृन्दावन कभी नहीं गया, आज यहाँ वृन्दावन की होली लीला देखकर मन आनन्द से भर गया।' यही तो उनकी लीला और खेल है। तुम लोग स्वयं को उनके खेल का साथी बनाओ।

...मेरा स्नेहाशीष लो। अत्र मंगल।

राधेश्याम।

आशीर्वादिका—माँ

२०५

ॐ हरिः

सन्त आश्रम, वाराणसी
१६.१.९२

नारायणेषु,

प्रिय.....

तुम लोगों का पत्र पाकर सुखी हुई।... तुम सभी उनका स्मरण-मनन करते हुए पथ पर चलो। जितना संभव हो, अपनों के बीच में जिससे आत्मकलह न हो उस ओर लक्ष्य रखो। भाई-बहनों के बीच में एकता एक बहुत बड़ी चीज है। यदि अपनों के बीच में एकता रहे, तो दुनिया के अनेक विषयों में जय कर सकते हो। हर समय याद रखो—'दस जन मिलकर कार्य करते हैं, हारने जीतने

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection.

 Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

में लाज नहीं है'—किसी भी अवस्था में अपनों के बीच में अलगाव न हो, इस ओर चेष्टा रखो। कुछ मीठा मधुर संघात (Clash) तो आ ही सकता है, किन्तु वह गाँठ न बाँध ले। लोटा-कटोरी एक संग रहने पर भी टुं-टां आवाज करते हैं। प्रत्येक व्यक्ति क्रोध को संयत करने की चेष्टा करे। क्रोध से बुद्धि का नाश होता है, बुद्धि का नाश होने पर स्मृतिविभ्रम होता है—स्मृति विभ्रम से सर्वनाश हो जाता है। इसलिए हर समय अपने को सर्वनाश से रक्षा करने की चेष्टा करो। जब भी क्रोध उपस्थित हो, सभी अपने-अपने इष्ट-मंत्र का जप करो। तुम लोग मेरे बड़े प्रिय बेटे-बेटियाँ हो, इसीलिए इतनी बातें लिखीं। यदि कभी कोई मान-अभिमान करे, तो स्नेह बुद्धि से समझने की चेष्टा करो कि मेरे प्रति अपनत्व बुद्धि है इसीलिए मेरे साथ मान-अभिमान का खेल खेला है। दूसरा पक्ष जब अभिमान करे, तब तुम अभिमान मत करना। सन्तान स्नेह से, भ्रातृ प्रेम की दृष्टि से विषय को समझने की चेष्टा करना। तब देखोगे परस्पर में विरोध भाव कम होगा।

...मेरा स्नेहाशीष लो। अत्र मंगल।

राधेश्याम।

आशीर्वादिका—माँ

२०६

ॐ हरिः

विजयादशमी

नारायणेषु,

प्रिय.....

तुम्हारा पत्र पाकर सुखी हुई। तुम सभी मेरा विजया का स्नेहाशीष लो। तुम सभी की पूजा की अंजलि ग्रहण की। जब जहाँ भी रहो, पूरे मन-प्राण से उनकी पूजा आराधना करते रहो। नाम जप के समय जो होता है वह भी अति सुन्दर है। उसी से सिद्धि लाभ करोगे। किसी के प्रति विद्वेष बुद्धि मत रखो। संसार में शान्ति की रक्षा करते हुए चलने की चेष्टा करो एवं सत्य का भी आश्रय करो।... मैं तुम लोगों के साथ हर समय हूँ एवं इस देह में ही एक दिन इसका अनुभव भी करोगे।

अत्र मंगल।

राधेश्याम।

आशीर्वादिका—माँ

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

२०७

ॐ हरिः

सन्त आश्रम, वाराणसी
३०.११.५१

नारायणेषु,

प्रिय.....

तुम्हारा पत्र पाकर सुखी हुई।... तुम्हारे स्वप्न का पत्र मिला। स्वप्न अति सुन्दर है। मन को सुन्दर रखो, तब यह सब केवल स्वप्न में ही पर्यवसित नहीं होगा।

सभी के साथ मधुर कथा एवं मधुर व्यवहार करो। यह चिन्तन करने की चेष्टा करो कि सभी में जो भगवान हैं तुम उनके साथ व्यवहार कर रहे हो। किसी के प्रति विराग भाव (उदासीनता) मत रखो।

...सब कुछ उनकी इच्छा से हो रहा है एवं होगा, यह विश्वास स्थिर भाव से रखो। इससे शान्ति मिलेगी। भय मत करना। भय तमोगुण का लक्षण है। जब जिस अवस्था में पड़ो, वह उनके द्वारा निर्धारित अवस्था समझकर चलने की चेष्टा करो।

...मेरा स्नेहाशीष लो। अत्र मंगल।

राधेश्याम।

आशीर्वादिका—माँ

२०८

ॐ हरिः

सन्त आश्रम, वाराणसी

नारायणेषु,

प्रिय.....

तुम्हारा पत्र पाकर सुखी हुई।... घड़ी की बात जानी। अच्छी बात है, बाबा सब आकर्षण से मुक्त करके तुम्हें आश्रम में ले आये हैं। जो जाना है, वह जाये न। दुःख करने से क्या लाभ? और जो आना है वह आये, उसको भी वरण कर लेंगे। दुःख हम नहीं करेंगे, अच्छा?

संसार का घात-प्रतिघात (क्रिया-प्रतिक्रिया) सह्य करते रहो, विचलित मत होना। माँ का ध्यान रखो।... माँ की सेवा करते रहो। माँ को दुःख मत देना। माँ का आशीर्वाद अमूल्य रत्न है। सबके साथ सद्भाव रखो। किसी के साथ मनोमालिन्य न हो। अपने सुन्दर मन का परिचय सर्वत्र देना। मैं तुम्हारी हूँ, रहूँगी भी।

...मेरा स्नेहाशीष लो। अत्र मंगल।

राधेश्याम।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

आशीर्वादिका—माँ

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

२०९

ॐ हरिः

सन्त आश्रम, वाराणसी

नारायणेषु,

प्रिय.....

तुम्हारा पत्र पाकर सुखी हुई।... जीवन को जितना सहज, सरल, सुन्दर रूप में गठित किया जायेगा, उतना ही आनन्दमय का स्पर्श पाया जायेगा। जीवन में किसी अवस्था में भी उनको मत भूलो। उनके स्मरण से धीरे-धीरे काँटा भी फूल प्रतिभात होगा। गुलाब का फूल तोड़ने पर काँटा तो रहेगा ही, इससे क्या कोई फूल तोड़ने से विरत होगा? ऐसे ही उनकी प्राप्ति के मार्ग में नाना बाधाविघ्न हैं ही, उनसे विरत नहीं हुआ जा सकता—'एक बार संभव न होने पर सौ बार देखो।' फिर भी यह बात जान लो, बाबा, जो वास्तव में साधू-सन्त हैं, वे भूल नहीं करते। तब उन्होंने 'समय नहीं हुआ' यह कहा है, किन्तु 'समय नहीं होगा'—यह तो नहीं कहा! इसलिए तुम उनके निकट प्रार्थना करो। प्रार्थना से मन सुन्दर निर्मल होता है। प्रार्थना और मन्नत एक नहीं है।

...मेरा स्नेहाशीष लो। अत्र मंगल।

राधेश्याम।

आशीर्वादिका—माँ

२१०

ॐ हरिः

सन्त आश्रम, वाराणसी

नारायणेषु,

प्रिय.....

तुम्हारा पत्र पाकर सुखी हुई।... तुमसे एक बात कहूँ, माँ से कोई बात बोलने में लज्जा या भय का कोई कारण नहीं है।... मनुष्य तो माँ की अस्वस्थतावश जा ही सकता है, जैसे बेटी के लिए माँ जाती है। तुमने जो घटना लिखी है, उसमें मैं भय या लज्जा जैसी बात नहीं देख रही हूँ। फिर भी ये लोग कई बार कुछ-कुछ ठीक बोल सकते हैं। Cent Percent ठीक नहीं मिला सकते। जैसे, समझो... व्यापार में उसको पिशाच ने पकड़ा था, यह मैं नहीं मानती। पिशाच पकड़ने से उन्माद या अन्यान्य लक्षण देखे जाते हैं। उसको जो हुआ था, ऐसा अनेक समय इस उम्र के लड़के-लड़कियों में भाव परिवर्तन होता है। फिर भी हाँ, यह सत्य बात है, उसकी मृत्यु का समय वह नहीं समझ सका, यह तो अनेक नहीं बना पाते।

CC-0. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इसीलिए कहते हैं Suicide उसने नहीं की। उसका जब समय हुआ, तभी गया है। कोई भी शक्ति उसको रोक नहीं सकती थी। श्रीकृष्ण जैसे मामा एवं अर्जुन जैसे पिता होने पर भी अभिमन्यु को अकाल मृत्यु का वरण करना पड़ा। इसलिए तुम पहले पूजा मन्नत करते तो उसको रोक सकते थे, यह सोचना ठीक नहीं। यदि ऐसा ही होता, तो भगवान तुमको पूजा मन्नत करने का भाव देते। खेपा माँ काली की पूजा करके अनेक लोग Miracle की तरह विपद से उद्धार पा रहे हैं, यह मैं समझती हूँ, किन्तु सभी का एक ही पूजा से उद्धार नहीं होता। इसलिए तुम अपना मन मत खराब करो। तुम्हारी फूल जैसी लड़की भगवत् चरणों में फूल जैसी ही है।

...माँ के मन में यह दुर्बलता तो भगवान का दिया हुआ मधु है। माँ के हृदय में यह मधु है, इसीलिए हम बचे हैं। इसीलिए माँ के मन में दुर्बलता कुसंस्कार नहीं है—यह सन्तान के लिए स्नेह, प्रेम-प्रीति का निदर्शन है। माँ के मन में दुर्बलता के लिए लज्जा पाने की कोई बात नहीं। मेरे लिए भी तुम्हारी यह दुर्बलता रहे, मैं तो यही चाहती हूँ।

मेरा स्नेहाशीष लो। अत्र मंगल।

राधेश्याम।

आशीर्वादिका—माँ

२११

ॐ हरिः

सन्त आश्रम, वाराणसी

२०.३.९३

नारायणेषु,

प्रिय.....

तुम लोगों का पत्र पाकर खुशी हुई। मुझे भी तुम्हारे पास पत्र लिखने में अच्छा लगता है, फिर भी हर समय हर पत्र लिखने से मन नहीं भरता। असल में मैं भी पत्र के माध्यम से तुम लोगों को कुछ देना चाहती हूँ जो प्रलाप न होकर उपहार होगा, वह हर समय लिखने में प्रकाशित नहीं होता। मैं चाहती हूँ कि मुझमें यदि कुछ अच्छा है, तो बछड़े की तरह तुम लोग मुझमें से आकर्षण करके निकाल लो—और खराब जो है, मेरे पास ही रहे। मुझमें जो कुछ अच्छा है, सब देकर तुम लोगों को अच्छा बनाना चाहती हूँ। कारण मेरा अच्छा-बुरा सब वे ही हैं, कृपामय अपनी करुणा निरन्तर मुझे दिये जा रहे हैं। मुझे अपात्र जानकर भी उन्होंने मुझे करुणा दान कुछ कम नहीं दिया। उन्होंने जो ऐश्वर्य मुझे दिया है, उत्तराधिकारी रूप में तुम लोग उसे ले लो। गुरुपरम्परा की

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अनन्त शक्ति हममें है, जिसे देकर भी शेष नहीं किया जा सकता। जबरदस्ती कृपा भी नहीं की जा सकती—किन्तु वास्तविक शिष्यत्व के माध्यम से उसको आकर्षण करके लिया जा सकता है। मन की प्रसारता, निर्मलता, शुद्धता बढ़ाओ, तभी उनके धन से धनी हो सकते हो। तुच्छ खाने-पहनने, जटिलता, कुटिलता से मन को कलुषित मत करो। सुन्दर, शुभ्र, उज्ज्वल, मन की उनके चरणों में अंजलि दो—यही तुम लोगों से मेरी चाह है। पत्रोत्तर से मंगल इच्छा करके स्नेहाशीष देती हूँ।

अत्र मंगल।
राधेश्याम।

आशीर्वादिका—माँ

२१२
ॐ हरिः

सन्त आश्रम, वाराणसी

नारायणेषु,

प्रिय.....

आशा करती हूँ कि श्रीगुरुजी की कृपा से तुम लोग अच्छे एवं कुशल हो। बीच में कुछ दिन उनकी रौद्रलीला का ताण्डव व्यतीत हुआ। चारों ओर की इस हानाहानि, काटा-काटी की रुद्रलीला देखकर मानसिक भाव से हम लोगों में से कई थोड़ा-बहुत विचलित, विभ्रान्त हो गये थे। किन्तु याद रखो, ऊपर वाले एकजन हैं, जो सब देख रहे हैं, कर रहे हैं। किसी भी अवस्था में उनके ऊपर विश्वास मत खोना। वे कब कौन लीला किस उद्देश्य से कर रहे हैं, यह हमारी साधारण बुद्धि के द्वारा अगम्य है। किन्तु वे हमारे मंगलमय भगवान हैं, मंगल करना ही उनका कार्य है। किसी अवस्था में उनके कार्य पर विचार करने मत जाना। याद रखो, धर्म मनुष्य को उन्नत करता है। ऐसा कोई कार्य तुम लोग मत करो जिससे अधर्म, नीचता इत्यादि तुम लोगों को स्पर्श करे। दूसरे को ऊपर उठाने की चेष्टा करो, इसीलिए कहते हैं कि स्वयं अधःपतित मत होना। सभी नाम जपकर नामी का संग करने की चेष्टा करना। नाम-नामी अभिन्न हैं, यह बात हर समय याद रखो। स्वयं महत् आचरण करके अन्य जनों को महत् आचरण करने के लिए उद्‌बुद्ध करो। केवल मुख से बोलने से काम नहीं होगा—यदि कर्म का फल देखना चाहते हो तो 'स्वयं आचरित धर्म दूसरे को सिखाओ।'

तुम लोगों को अपना स्नेहाशीष देती हूँ। तुम लोगों में से किन लोगों ने मेरे पहले के पत्र पाये हैं, जानती नहीं। मैंने भी तुम लोगों में से सभी के पत्र

CC-0. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पाये हैं, ऐसा नहीं लगता। इसके लिए किसी को दोष देने से लाभ नहीं। जिस समय जो परिस्थिति हो, उसे मानकर ही जीवन पथ पर अग्रसर होना पड़ेगा।

अत्र मंगल।

राधेश्याम।

आशीर्वादिका—माँ

२१३

ॐ हरिः

सन्त आश्रम, वाराणसी

२७.१.९३

नारायणेषु,

प्रिय.....

तुम लोगों का पत्र पाकर सुखी हुई।... मेरे गुरुजी की कृपा से आशा करती हूँ कि तुम लोगों ने उत्सव के आमंत्रण पत्र यथासमय प्राप्त कर लिये हैं। तुम लोगों में से उत्सव में जो आ सकते हैं, जैसे उनका आवाहन करती हूँ, वैसे ही जो नहीं आ सकते हैं उन्हें भी आशीर्वाद देती हूँ। उत्सव का अर्थ है—सभी मिलित होकर आनन्द करें। वह आनन्द होगा परमदेवता, जिसे परम गुरुपरंपरा ने घेरकर रखा है। श्री श्री ठाकुरजी का स्मरण-मनन करते हुए अपनी-अपनी शक्ति के अनुसार उनकी पूजा, भोग, आरती करने की चेष्टा करो। सभी कर्मों में हमारा मूल उद्देश्य एक ही रहेगा, उनके नामगान, स्मरण-मनन करते हुए उनकी ओर अग्रसर होना। मिथ्या आपसी कलह, आत्म अभिमान में मग्न होकर हम असल उद्देश्य को विस्मृत न कर दें। तुम लोग अमृत की सन्तान हो, अमृतत्व का लाभ तुम्हें करना ही होगा, यह मत भूलो। तुम्हें ब्राह्मण होना होगा, जन्म से ब्राह्मण होना पर्याप्त नहीं। तुम लोगों को ब्राह्मण वर्ण श्रेष्ठ होना होगा, यह अपने सत्कर्म के द्वारा हुआ जा सकता है। सात्विक कर्म के द्वारा ही सत् अर्थात् ब्राह्मण हुआ जा सकता है। सभी ब्राह्मणों का सम्मान करते हैं उनके त्याग, संयम एवं ज्ञान के कारण। तुम लोगों में से जो ये तीन गुण अपनायेंगे वे जन्म से ब्राह्मण न होकर भी ब्राह्मण ही हैं, ऐसा समझो। इस उत्सव से तुम लोगों के ब्राह्मण होने की प्रचेष्टा आरम्भ हो। स्नेहाशीष देकर यहीं शेष कर रही हूँ और सोच रही हूँ तुममें से कब कौन आकर पहुँचेगा।

अत्र मंगल।

राधेश्याम।

आशीर्वादिका—माँ

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

 Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

२१४

ॐ हरिः

सन्त आश्रम, वाराणसी
१३९९ बँगला

नारायणेषु,

प्रिय.....

आज नव वर्ष के नवप्रभात में तुम सभी को पुनः नूतन रूप में स्नेहाशीष देती हूँ। सुख-दुःख, जय-पराजय, आनन्द-निरान्द इत्यादि से गुजरते हुए हम १३९९ बँगला वर्ष का स्वागत करने के लिए अग्रसर हो गये हैं। जिसकी कृपा का छाता सिर पर लगाकर हम लोग दिन पर दिन, मास पर मास को विदा देकर इस नूतन वर्ष का सादर आवाहन करने के लिए प्रस्तुत हैं, किसी भी अवस्था में उन्हें न भूलें। हम लोगों में से कोई साधु नहीं है। उनकी कृपा से साधु होने की वासना अन्तर में जाग्रत रखकर, उनके नाम का सुदृढ़ रूप में अवलंबन लेकर उनकी ओर आगे बढ़ सकें। मन में ध्यान रहे—वे तुम्हारे सर्वप्रकार धूलि-धूसरित अंग एवं मन के मैल को काटकर तुम्हें स्नेह-बन्धन रूप रज्जु के द्वारा अपना बना लेने के लिए प्रेम विगलित अन्तर से दो हाथ बढ़ाकर खड़े हैं। तुम भी मानसिक ध्यान में आकुलित मन से दो हाथ बढ़ाकर उनकी मधुर गोद में कूद पड़ो—जो गोद उन्होंने हम-तुम जैसे अपात्रों के लिए भी फैलाकर रखी है। उनके ध्यान-मनन में तुम्हारी दोनों आँखों से जल की धारा तारण-चरण को धोने के लिए बह उठे, जिस चरण के फूल-तुलसी-चन्दन तुम बनोगे, तभी सारे वर्ष का श्रम होगा सार्थक। वे बड़े मधुमय हैं—बड़े मंगलमय हैं! मेरे मन में बार-बार आता है कि उनके मधुत्व का तुम सभी अनुभव करके उनके भाव में आप्लुत हो जाओ। मुझमें न भाषा है, न है मुझमें पाण्डित्य—जिसके माध्यम से उनके आनन्दमय रूप के एक कण को भी तुम्हें समझा सकूँ। भाषा की दृष्टि से मैं मूक हूँ—पाण्डित्य में मैं मूर्ख—किसके द्वारा उनका मधुत्व मैं तुम्हें समझाऊँ? इसलिए अपनी इस असमर्थता के लिए मैं ही तुम लोगों के प्रति उत्तरदायी हूँ—जिनके प्रेमरस को समझाकर उस प्रेमसागर में छलाँग लगाने के लिए मैं तुम लोगों को प्रेरणा नहीं दे पा रही हूँ—इसीलिए मैं तुम लोगों के निकट क्षमार्ह (क्षमा योग्य) हूँ।

नूतन-पुरातन सब मिलाकर सकुशल रहने की चेष्टा करो। अपना स्नेहाशीष देकर आज के पत्र का राधेश्याम।

अत्र मंगल।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection. आशीर्वादिका—माँ

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

२१५

ॐ हरिः

सन्त आश्रम, वाराणसी
१.७.९२

नारायणेषु,

प्रिय.....

तुम लोगों का पत्र पाकर सुखी हुई। तुम सभी की माँ सकुशल हैं, चिन्ता मत करो।... तुम लोगों का भार अपने बाबा (गुरुजी) के ऊपर देकर मैं निश्चिन्त हूँ। मैं अच्छा-बुरा कुछ करने की मालिक नहीं हूँ। सब कार्यों के मालिक वे ही हैं, और कुछ न जानकर भी मैं यह समझती हूँ। इसलिए उनका कार्य ठीक तरह न होने से ही मुझे गुस्सा आ जाता है। मैं सोचती हूँ कि तुम सभी मालिक को पहचानो—ऐसा न होने से, जिस अंधकार में थे, उस अंधकार में ही रहोगे।—मैं आज हूँ, कल नहीं। किन्तु मालिक थे—हैं—रहेंगे। यदि उनको पहचान सको तो सब दुःख, कष्ट से त्राण पा जाओगे। तुम उनके हो जाओ, यही मन प्राण से चाहती हूँ। अपनों के बीच आपसी कलह मत करो, यह मुझे सबसे अधिक कष्टकर है।... इतने कामों में भी सकुशल रहने की चेष्टा करो। मेरा स्नेहाशीष लो।... सकुशल रहो। उनके नाम से हमें अच्छा रहना ही होगा।...

अत्र मंगल।

राधेश्याम।

आशीर्वादिका—माँ

२१६

ॐ हरिः

सन्त आश्रम, वाराणसी
२३.६.९४

नारायणेषु,

प्रिय.....

तुम लोगों का पत्र पाकर सुखी हुई। प्रायः एक मास से ऊपर हुआ मैं तुम लोगों के साथ पत्र के द्वारा कोई संपर्क नहीं कर सकी। फिर भी गुरुशिष्य में एवं माँ-पुत्र-पुत्रियों में अन्तर का संपर्क तो सर्वक्षण ही था। २१ मई को तुम सभी की माँ कोलकता सिंथि में पहुँची थीं। वहाँ डॉक्टर ने अनेक प्रकार के परीक्षणों के द्वारा देखकर औषधादि में परिवर्तन किया। तत्फलस्वरूप दीर्घकालीन खाँसी सामयिक भाव से ठीक हो गई। फिर भी लगता है कि चोर की तरह सेंध काटकर

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पुनः घुसने की चेष्टा कर रही है। फिर भी यह तो स्वाभाविक ही है—देह की तो क्रमशः उम्र बढ़ रही है, इससे नाना प्रकार के चोररूपी रोग के शुभागमन होने की संभावना रहेगी ही। यद्यपि डॉक्टर अनेक प्रकार से उनके पथ का अवरोध करने की चेष्टा कर रहे हैं। मैं चोर-पुलिस के खेल की भाँति डॉक्टर एवं रोग के इस खेल को देखती जा रही हूँ—खूब मजा आता है। तुम लोग चिन्ता मत करो, सब मिलाकर अच्छी हूँ। खराब तभी लगता है, जब तुम लोग चिन्ता करके कष्ट पाते हो। तुम लोग भगवत् नाम स्मरण-मनन करते हुए पथ पर चलने की चेष्टा करो। साधन पथ पर अनेक बाधा-विघ्न आते ही हैं। पथ के काँटे को देखकर पाथेय फूल को तोड़ने में भय मत करो। पाथेय फूल है, उनके नाम का स्मरण-मनन, जप-ध्यान, सत्सङ्ग, सद्ग्रन्थ पाठ इत्यादि। इनमें पहले-पहले रसास्वादन न होने पर भी परिणाम में रस का सन्धान मिलेगा ही। आपाततः आनन्द न मिलने पर भी नाम जपते रहो। नाम जपते-जपते नामी को पाओगे ही। **कारण याद रखो, भगवान सब सुन सकते हैं, देख सकते हैं।** उनके विचार में कोई भूल नहीं है। यदि तुम अपना काम ठीक तरह करते रहो, समय पर वे तुम्हें तुम्हारा साधनफल देंगे ही।

तुम सभी सकुशल रहो, कौन कैसा है, बताना। मेरा स्नेहाशीष लो।

अत्र मंगल।

राधेश्याम।

आशीर्वादिका—माँ

२१७

ॐ हरिः

सन्त आश्रम, वाराणसी

२२.९.९४

नारायणेषु,

प्रिय.....

तुम्हारा पत्र पाकर सुखी हुई।... तुम्हारा बेटा कैसा है? भगवान ही तो पुत्र के रूप में आते हैं। पिता रूप में भी वे ही हैं, मातृरूप में भी वे ही हैं। इसीलिए कहते हैं—'त्वमेव माता च पिता त्वमेव...' इत्यादि। **सभी की भगवत् बुद्धि से सेवा करते रहो।** जब भी जिस कर्म को करो, हर समय उनका स्मरण-मनन करते हुए करो, तब देखोगे कर्म बन्धन का हेतु न होकर मुक्ति के पथ को प्रशस्त करेगा। सभी कर्म भगवत् सेवार्थ कर रहे हो, यही विचार करने की चेष्टा करो। जैसे—पढ़ने की इच्छा होने पर मेधावी छात्र को मास्टर अधिक महत्व देता है, ऐसे ही साधन-भजन की इच्छा होने पर गुरुकृपा अधिक मिलती है। तुम सभी की चेष्टा

CC-0. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

में त्रुटि न हो।... तुम्हारे माता-पिता चिकित्सा के लिए तुम्हारे पास हैं, यह जाना। उनका सेवायत्न भी भगवत् बुद्धि से करते रहो। भगवान ही माता-पिता, पुत्र, बन्धु-बान्धव नाना रूपों में तुम लोगों के निकट सेवायत्न लेने के लिए आये हैं, यह समझकर उनकी सेवा करो।

मेरा स्नेहाशीष लो। अत्र मंगल।

राधेश्याम।

आशीर्वादिका—माँ

२१८

ॐ हरिः

सन्त आश्रम, वाराणसी
विजय दशमी
बँगला १४००

नारायणेषु,

प्रिय.....

पूजा के उपलक्ष्य में तुम लोगों को विजया का स्नेहाशीष देती हूँ। पूजा के पहले कितनी प्राकृतिक दुर्योग की घटनाओं—जैसे आसाम की बाढ़, महाराष्ट्र के भूकम्प इत्यादि—ने कमोबेश प्रत्येक के मन को भाराक्रान्त कर दिया था। इससे मुझे लगता है, माँ (दुर्गा) के आगमन से सभी के मन में शान्ति का कुछ आभास होने पर भी अन्य बार की भाँति अत्यधिक आनन्द ने मन को आलोड़ित नहीं किया, यह मेरा व्यक्तिगत अभिमत हो सकता है। मैं जाने क्यों भूल नहीं पा रही हूँ—इन नाना दुर्योगों में मेरे कितने सहस्र लड़के-लड़कियाँ हताहत हो गये। कितने पुत्र-पुत्रियाँ, शिशुओं के समूह हो गये पितृमातृहीन। इस बार दो हाथ बढ़ाकर इन्हें हृदय से लगाकर रखने की प्रबल इच्छा जैसे हृदय को उद्वेलित किये जा रही है। मेरी कोई क्षमता नहीं है, इसीलिए अपने असीम शक्तिशाली गुरुजी के चरणों में ही प्रार्थना है। वे ही अपनी अगणित सन्तानों में शान्ति, आनन्दमय पथ के आलोक की किरण जगायें। विजया पर तुम लोग भी उनके चरणों में यही प्रार्थना करो। प्रत्येक के सुख-दुःख को अपने जैसा अनुभव करने की चेष्टा करो। दूसरे के दोष को न देखकर, दूसरे को अपना बना लेने की चेष्टा करो—यही तुम लोगों के ऊपर श्री दुर्गा माँ की विजया का आशीर्वाद हो। तुम लोगों में से कोई क्षुद्र नहीं है, सभी उनके कृपाधन्य हैं—यह मत भूलो। उनके ही नाम का स्मरण-मनन करते हुए उनकी ओर अग्रसर होने की चेष्टा करो। स्वयं महान हो सकने से ही अन्य को भी महान होने के व्रत का साथी कर सकते हो।

CC-0 Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

 Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तुम सभी के द्वारा प्रेरित अर्घ पाकर स्नेह से ग्रहण किया। बाबा की कृपा से ५० लोगों को लेकर चित्रकूट दर्शनकर कुशलपूर्वक लौट आई हूँ। लौटने के रास्ते में प्रयाग के संगम में सभी के साथ स्नान किया। तुम्हारी माँ का शरीर अच्छा नहीं था, ज्वर चल रहा था, उसी स्थिति में गई थी। मैं कई बार गई हूँ, दूसरे जो लोग नहीं गये थे, उनके लिए जाना हुआ। अभी भी शरीर पूर्णत: स्वस्थ नहीं हुआ, फिर भी अच्छा हो रहा है।

अत्र मंगल।
राधेश्याम।

आशीर्वादिका—माँ

२१९

ॐ हरिः

सन्त आश्रम, वाराणसी
२५.११.९२

नारायणेषु,

प्रिय.....

तुम लोगों का पत्र पाकर सुखी हुई। सुख-दुःख से भरी इस दुनियाँ में प्रकृत सुखी एकमात्र उनके स्मरण-मनन से ही हुआ जा सकता है। किसी कवि ने लिखा है—'अकेले आया हूँ, अकेले जाऊँगा, साथ में कोई नहीं जायेगा'—लगभग ऐसी ही भाषा है। कविता ठीक याद नहीं है। किन्तु मुझे लगता है कि हम किसी समय भी अकेले नहीं हैं। देखो, आये हैं माता के साथ, बीच में अनेक लोगों के साथ बीतता है। इसके बाद जीवन के अंत में अकेले जायेंगे भी नहीं, गुरु का हाथ पकड़कर गुरु के साथ। तब हम कब अकेले हुए? गुरुसंग तो प्रतिनियत है, प्रतिक्षण हमें पकड़कर रखा है। इसीलिए कवि के साथ सुर मिलाकर मैं इस कविता की आवृत्ति नहीं कर सकी। तुम लोग भी कभी भी अपने को अकेला समझकर एकाकित्व का कष्ट अनुभव मत करना। हम उनका संग अनुभव कर सकें या नहीं कर सकें, लेकिन यह शाश्वत सत्य है कि वे अनुक्षण छाया की तरह हमारे साथ हैं। गुरुकृपा तथा साधन-भजन के द्वारा इस सत्य की उपलब्धि करने के लिए ही हमारा मानव जन्म है, यह स्वयं भी मत भूलो, दूसरों को भी मत भूलने दो। देखो, उनकी कृपा—हम सभी हर समय केवल उनका ध्यान-जप करते हुए ध्यानमग्न होकर नहीं रह सकते हैं, इसीलिए हमारे जैसे सामान्य व्यक्तियों के लिए नाना सेवा, पूजा, कीर्तन, पाठ इत्यादि की व्यवस्था की है। जिस व्यवस्थामय की व्यवस्था अतुलनीय है, उनके चरणों में अजस्र प्रणाम

CC-0. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

निवेदित कर तुम सभी को स्नेहाशीष देती हूँ। हर समय याद रखो कि नामरूपी नामी हमारे साथ-साथ हैं।

अत्र मंगल।

राधेश्याम।

आशीर्वादिका—माँ

२२०

ॐ हरिः

सन्त आश्रम, वाराणसी

नारायणेषु,

प्रिय.....

तुम्हारा पत्र पाकर सुखी हुई।... तुमने जो प्रश्न किया है, वह खूब स्वाभाविक है। यह जान लो कि हम बाह्यिक कितना भी रुदन क्यों न करें, उससे हम लिप्त नहीं होते। हमारा रुदन तुम लोगों के कल्याण के लिए ही है एवं तुम लोगों के साथ अन्तर का सानिध्य बढ़ाने के लिए ही है। इस रुदन से हमारा कुछ नहीं होता, किन्तु तुम लोग आकर्षित होते हो। फिर भी हाँ, तुम लोगों का साधारण जो माया-मोह है, उसे तो त्याग करना ही पड़ेगा एवं उससे ऊर्ध्व में उठना होगा। तुम लोगों ने जो 'नाम' (मंत्र) लिया है, वही तुम सभी को माया-मोह से ऊर्ध्व में ले जायेगा। जिनसे जुड़े हुए हो, उनमें से कोई स्थायी नहीं है यह समझो।

...मेरा स्नेहाशीष लो। अत्र मंगल।

राधेश्याम।

आशीर्वादिका—माँ

२२१

ॐ हरिः

सन्त आश्रम, वाराणसी

नारायणेषु,

प्रिय.....

तुम्हारा पत्र पाकर सुखी हुई।... सभी के प्रति सुन्दर रूप में कर्तव्य करने की चेष्टा करो। जैसे समझो कि एक महाजन की अनेक गायें हैं। वह उनको बाँट करके एक-एक ग्वाले के ऊपर कुछ गायों का भार सौंप देता है। ग्वाला यदि अपने ऊपर सौंपे हुए गायों की सेवा-यत्न सुचारू रूप से करता है, तो महाजन उसके ऊपर संतुष्ट हो जाता है। इसी तरह हमारे ऊपर सौंपे हुए संसार के भार का यदि हम ठीक तरह निर्वाह कर सकें, तो परमपिता हमारे प्रति संतुष्ट

CC-0. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हो जायेंगे एवं उनका आशीर्वाद प्राप्त किया जा सकता है। उनके द्वारा दिये हुए कर्त्तव्य भार को शेष करके पुनः हम उनकी गोद में वापस लौट जायेंगे। इसी प्रकार कर्मभार लेकर जीव आता है और कर्म की समाप्ति पर उसका क्षय करके उनके निकट लौट जाता है।

...मेरा स्नेहाशीष लो। अत्र मंगल।

राधेश्याम।

आशीर्वादिका—माँ

२२२

ॐ हरिः

सन्त आश्रम, वाराणसी
२१.१२.६३ ई.

नारायणेषु,

प्रिय.....

तुम सभी का पत्र पाकर सुखी हुई।... यदि कोई अच्छा बनना चाहता है, तो भगवान उसकी सहायता करता है। इसलिए तुम अच्छे बनने के लिए आप्राण चेष्टा करो। थोड़े से ही विचलित मत होना। भूल-त्रुटि का संशोधन करके सत्य-पथ पर चलने की चेष्टा करो। मन की दृढ़ता के द्वारा पाप कर्म से काफी कुछ अपनी रक्षा की जा सकती है। बीच-बीच में सत्संग करना अच्छा है, उसके अभाव में सद्ग्रन्थ का पाठ कर सकते हो।

...स्नेहाशीष लो। अत्र मंगल।

राधेश्याम।

आशीर्वादिका—माँ

२२३

ॐ हरिः

सन्त आश्रम, वाराणसी
१७.१२.६२

नारायणेषु,

प्रिय.....

तुम सभी का पत्र पाकर सुखी हुई।... मन दुःखी मत करना। भगवान जब जहाँ पर रखना मंगलजनक समझते हैं, तब वहीं रहने की व्यवस्था करते हैं। वे सब कुछ मंगल के लिए ही करते हैं—यह केवल बात नहीं है, सत्य जानो। तुम लोग जब जहाँ रहते हो, तुम सभी की माँ तो साथ-साथ ही रहती हैं, मन दुःखी

CC-0. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

करने की क्या बात है? स्थूलतः तुम्हारे दूर जाने से मुझे भी खूब कष्ट है, किन्तु यही भगवत् विधान एवं कल्याणजनक है, यह मानने की चेष्टा कर रही हूँ। मन को शान्त रखने की चेष्टा करो। मैं यही विश्वास करती हूँ, बाबा (गुरुजी) कल्याणजनक समझकर पुनः यहाँ आने की व्यवस्था करेंगे। **स्थूल व्यवधान बड़ी बात नहीं है—असली प्राप्ति ही बड़ी प्राप्ति है। माँ बाहर नहीं हैं, तुम्हारे भीतर ही हैं। उन्हें खोजकर पहचानने की चेष्टा करो, यह पाना ही असल पाना है।** जब जिनके बीच रहते हो, उनके भीतर ही तुम्हारी माँ हैं—इसी भाव को लाने की चेष्टा करो। बीच-बीच में स्थूल दर्शन न होने पर पाने की आकांक्षा बढ़ जाती है। वे जब जैसा भी आघात देते हैं, उससे हमें निकट ही आकर्षित कर लेते हैं।

....मेरा स्नेहाशीष लो। अत्र मंगल।

राधेश्याम।

आशीर्वादिका—माँ

२२४

ॐ हरिः

सन्त आश्रम, वाराणसी

१७.१२.६२

नारायणेषु,

प्रिय.....

तुम्हारा पत्र पाकर सुखी हुई।... तुम क्यों सोच रहे हो कि तुम्हारा कोई नहीं है? तुम्हारे तो सभी हैं। तुम्हारे प्रारब्ध के भोग को काटने के लिए ही गुरुजी अनेक प्रकार के दुःख कष्ट देते हैं, इसके द्वारा कल्याण ही होता है। सुख-दुःख जो भी मिले, सभी अवस्थाओं में उनको दृढ़तापूर्वक पकड़ने की चेष्टा करो। मनुष्य संसार में आनन्द नहीं पाता, इसीलिए तो उन्हें पुकारता है। अतः यह भी कल्याणकारक है। मनुष्य में पाने की आकांक्षा समाप्त नहीं होती। इसलिए सांसारिक मनुष्य जितना पाता है, उतना ही चाहता है। एकमात्र भगवान के नाम से ही निवृत्ति आती है—**निवृत्तिमार्ग ही तुम लोगों का मार्ग है, यह न भूलो।**

मेरा स्नेहाशीष लो। अत्र मंगल।

राधेश्याम।

आशीर्वादिका—माँ

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

२२५

ॐ हरिः

सन्त आश्रम, वाराणसी
२४.३.५८

नारायणेषु,

प्रिय.....

तुम्हारा पत्र पाकर सुखी हुई।...आजकल के समय में अधिकारी समझकर बीज वपन नहीं किया जाता। ऐसा होने पर मेरे गुरुजी भी संभवतः मेरे ऊपर कृपा नहीं करते। आजकल प्रार्थी देखकर कृपा की जाती है, इसलिए नाम की प्रार्थना की जाती है। कारण, हम प्रार्थना को उपलक्ष्य करके बीज वपन करने की चेष्टा करते हैं। अधिकारी तो, जो ग्रहण करेंगे वे ही तैयार कर लेंगे। अधिकारी होने की सामर्थ्य हम लोगों में कहाँ है ? इसलिए प्रार्थी होने के लिए यत्नशील बनो।

मेरा स्नेहाशीष लो। अत्र मंगल।

राधेश्याम।

आशीर्वादिका—माँ

२२६

ॐ हरिः

सन्त आश्रम, वाराणसी
नववर्ष १९६५

नारायणेषु,

प्रिय.....

नववर्ष के नवप्रभात में मैं तुम सभी को अपना स्नेहाशीष देती हूँ। पुरातन जो कुछ भी सुख-दुःख-ग्लानि हो सब भूल जाओ, नूतन उत्साह प्रेरणा लेकर कर्मक्षेत्र में अवतीर्ण हो जाओ एवं निष्काम व्रत का अनुष्ठान करते रहो। याद रखो, उनके जगत में तुममें से कोई भी अप्रयोजनीय नहीं हो। प्रत्येक के माध्यम से वे अपना ही कर्म कराकर एक बृहत् कर्मानुष्ठान कर रहे हैं। उनको जानने, समझने, पाने के लिए चेष्टा को जाग्रत करो।

...मेरा स्नेहाशीष लो। अत्र मंगल।

राधेश्याम।

आशीर्वादिका—माँ

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

२२७

ॐ हरिः

सन्त आश्रम, वाराणसी
१२.६.६१

नारायणेषु,

प्रिय.....

तुम्हारा पत्र पाकर सुखी हुई।... मैं स्थूलतः उपस्थित न होने पर भी हर समय तुम लोगों के साथ ही हूँ। इसलिए तुम ठाकुरजी एवं गुरुजी की छवि (फोटो) हृदय से लगाकर गृहप्रवेश का कार्य सुसम्पन्न करो।

स्त्री शरीर में सद्गुरु नहीं होते, यह समझना ठीक नहीं है। गोस्वामी प्रभू अपनी कन्या शान्तिसुधा को गुरुपद पर प्रतिष्ठित कर गये थे और स्त्री सम्प्रदाय की आदिगुरु थीं लक्ष्मीदेवी—जिनके कारण 'श्री' सम्प्रदाय का नाम पड़ा।

...मेरा स्नेहाशीष लो। अत्र मंगल।

राधेश्याम।

आशीर्वादिका—माँ

२२८

ॐ हरिः

सन्त आश्रम, वाराणसी

नारायणेषु,

प्रिय.....

तुम्हारा पत्र पाकर सुखी हुई।... गुण में भेद होने पर ही भगवान ने वर्ण में भेद की रचना की है। शरीर का एक-एक अंग जैसे एक-एक कार्य करता है—हाथ हाथ का कार्य करता है, पैर पैर का कार्य करता है, इनमें से कोई भी हेय नहीं है, सभी अवश्य प्रयोजनीय हैं। चक्षुहीन का देखना अज्ञता का ही परिचय है। गुण के पार्थक्य से ही वस्तु में स्पर्शदोष लगता है। स्पर्शजन्य गुण के वैषम्य के कारण ही एक के द्वारा स्पर्शित वस्तु अन्य के लिए अनिष्टकारी होती है। आजकल के समय में वर्णभेद ठीक नहीं है। इसलिए देखा जा रहा है कि ब्राह्मण के घर में भी शूद्र का जन्म हो रहा है एवं शूद्र के घर में भी ब्राह्मण का जन्म हो रहा है। फिर भी ठाकुरसेवा का अधिकार प्रत्येक जाति का है एवं प्रत्येक उनको साधना से प्राप्त कर सकता है। उनके निकट जातिभेद नहीं है, फिर भी व्यावहारिक जगत में तो है ही। सामने होने पर ये सब बातें तुम्हें समझाने में सुविधा होती। फिर भी बीच-बीच में तुम्हारे मन में

CC-0. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जो प्रश्न हो, उन्हें पत्र के द्वारा बताने की चेष्टा करना, उत्तर देने की पर्याप्त चेष्टा करूँगी।

...मेरा स्नेहाशीष लो। अत्र मंगल।

राधेश्याम।

आशीर्वादिका—माँ

२२९

ॐ हरिः

सन्त आश्रम, वाराणसी

८.१.९४

नारायणेषु,

प्रिय.....

तुम लोगों का पत्र पाकर खूब खुशी हुई। बीच में डाक की गड़बड़ी के कारण चिट्ठी पत्र में बड़ा अनियम हुआ। इसी तरह तुम सभी की माँ का शरीर भी अनियमित चल रहा है। यों मैं अच्छी ही हूँ, किन्तु तुम्हारी माँ के गले में इन्फैक्शन हो जाने से गत चार मास से गले में कष्ट रहा। गले का स्वर एकदम बंद हो गया था, इसके लिए कोई बात नहीं। लेकिन सबसे कष्टकर यह रहा कि तुम लोगों की माँ आरती की जय तक नहीं दे सकीं। ठाकुरजी, गुरुजी की जय न दे पाना कितना कष्टकर है, यह कमोबेश सभी समझेंगे। छोड़ो इसके लिए कष्ट नहीं, इस अस्वस्थता में भी मुझे यही आनन्द है कि इस अस्वस्थता के समाचार से तुम लोगों को गुरु का स्मरण-मनन अधिक होगा। शरीर रहने से अस्वस्थता तो होगी ही। इस शरीर का भोग कुछ कटेगा, तभी इस देह के रोग-भोग की सार्थकता होगी। कारण तुम सभी की माँ तो तुम लोगों के माध्यम से ही सुख-असुख भोग करती हैं। उनका स्वयं कोई रोग भी नहीं है, भोग भी कुछ नहीं है। तुम लोग सुन्दर निर्मल होकर उनके चरणों के निर्माल्य हो जाओ, तभी इस रोग-भोग की सार्थकता है। डॉक्टरों की चेष्टा चल रही है, कब इस इन्फैक्शन के प्रेमालिंगन से मुक्त हुआ जाय।

तुम सभी सकुशल रहकर उनके हो जाओ, यही आशीर्वाद करती हूँ। यहाँ के शीत की आबहवा अब तक मीठी-मधुर है। इस दुनिया में सभी अस्थायी है, इसलिए किसी के स्थायित्व की आशा नहीं की जा सकती। पत्रोत्तर में तुम सभी के मंगल की इच्छा करती हूँ।

अत्र मंगल।

राधेश्याम।

आशीर्वादिका—माँ

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

२३०

ॐ हरिः

सन्त आश्रम, वाराणसी
नववर्ष १३९८ बँगला

नारायणेषु,

प्रिय.....

श्री गुरुजी की कृपा से हम लोग और एक वर्ष १३९७ बँ० को विदा देकर १३९८ बँ० का आवाहन कर रहे हैं। कितने घात-प्रतिघात, आनन्द-निरानन्द, सुख-दुःख, जय-पराजय, सम्मान-अपमान से भरा रहता है एक-एक वर्ष में—केवल एक व्यक्ति का नहीं, अनेक व्यक्तियों का भाग्य। एकमात्र श्रीभगवान के नाम और ध्यान में तन्मयता प्राप्त करके इन नाना प्रकार की तरंगों से हम अपनी रक्षा कर सकते हैं। समुद्र की तरंग आयेगी जायेगी यह उसका स्वधर्म है। हम यदि आना और जाना दोनों को समभाव से ग्रहण कर सकें तभी हम दुःख से त्राण पा सकते हैं। सुख-दुःख दोनों ही मन के व्यापार हैं। एक का दुःख अनेक समय अन्य के आनन्द का कारण होता है। इसलिए कर्म ही हमें सुख-दुःख देता है। केवल यही नहीं, मन ही हमारे सुख-दुःख का दाता है। यदि मन के सुर को उनकी वंशी के सुर से बाँध सको, तो देखोगे सुख-दुःख कुछ भी क्यों न आये तुम्हें उद्वेलित नहीं कर सकते। विश्वसृष्टा अपने विश्व के साथ नाना प्रकार के खेल खेल रहे हैं, द्रष्टा होकर यदि उनका खेल देख सको—तुम्हारा मन यदि उससे अभिभूत न हो, तो देखोगे तुम्हारे लिये सुख-दुःख कुछ नहीं है। सभी कुछ उनका है, तुम भी उनके हो यह समझने के लिए ही तो साधन-भजन हैं—तुम्हारे साथ उनका अंगांगी सम्बन्ध है। उनको ही जीवन के सर्व आकर्षणों का मूल समझकर पकड़ने की चेष्टा करो। तुम लोगों की चेष्टा होने पर, शरणागति होने पर, उनकी कृपा से उनको जान सकने से ही एकमात्र सुख-दुःख से अतीत होकर आनन्द के अधिकारी हो सकते हो। नववर्ष के नवप्रभात में तुम लोगों को अपना स्नेहाशीष देती हूँ। पुरातन सब कालिमा भूलकर पुनः नूतन उद्योग से उनको पाने की साधना के लिए आत्ममग्न हो जाओ। चेष्टा के पीछे उनकी आशीष धारा रहेगी। तुम लोग किसी से भी हीन नहीं हो। तुम लोग उनके बल से बलवान हो। सब 'मेरा' सोचने से गोलमाल है—'उनका' समझने से आनन्द है। उनको ही जीवन का ध्रुवतारा जानकर उनकी ओर बढ़ना होगा। यही तुम्हारे नववर्ष का व्रत हो। तुम सभी कैसे हो। मेरा स्नेहाशीष लो।

अत्र मंगल।

राधेश्याम।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

आशीर्वादिका—माँ

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

२३१

ॐ हरिः

वरकान्ता

२.९.४२

तुम्हारा पत्र यथासमय मिल गया।

१. तुम्हारे ससुर ने पूर्वजन्म में विश्वास किया, यह जानकर पिताजी अत्यन्त प्रसन्न हुए। क्योंकि पत्र लिखने से पहले पिता जी ने कहा था, यदि पूर्वजन्म के सम्बन्ध में कुछ लिखो तो इस तरह लिखना जिससे विश्वास हो जाय। पिताजी ने तुम्हारा पत्र पढ़ा नहीं था। मैंने पिताजी से कहा था तुम पूर्वजन्म इत्यादि जानना चाहती हो।

२. किशोरगंज में जिस शक्ति की बात कही थी, वह तुममें से होकर... उनमें गई थी। वह शक्ति दोनों को शुद्ध-सुन्दर होने में सहायक होगी। वह शक्ति अभी भी है। समय-समय पर कार्य भी करती है, करेगी भी।

३-४. गीता का पन्ना फटा हुआ गिरा था, यह जाना। गीता को भगवान् के रूप में देखना चाहिए। इनमें साक्षात् भगवान् हैं, यह सोचो। गीता को सावधानीपूर्वक रखने के लिए ही संभवतः भगवान ने तुमको इस तरह शिक्षा दी हो।

५. हिस्टिरिया होना भी पूर्वजन्म की दुष्कृति का फल है। रोज चरणामृत पीना, गीता पाठ करना, ठाकुरजी की सेवा करना इत्यादि प्रतिकार है। तुम्हारे पत्र संग्रह करके रखे हैं। तुमने लिखा है, 'उसके पास जाने की खूब इच्छा होती है।' यह खूब स्वाभाविक है। शीघ्रातिशीघ्र जिससे मिलना हो तुम स्थूलतः चेष्टा करो, मैं सूक्ष्मतः इस विषय में तुम्हारी सहायता करने की चेष्टा करूँगी। 'पूजा के समय शरीर खराब रहेगा' लिखा है, तब अवस्थानुसार व्यवस्था की जायेगी। पूर्वजन्म की दुष्कृति के फल से पिता-माता के छोटे-छोटे बच्चे मर जाते हैं। किस दुष्कृति के फल से मर जाते हैं, यह स्पष्ट नहीं लिखा जाता। कारण, सभी का कर्मफल एक ही हो, ऐसी बात नहीं है। यदि विशेष व्यक्ति का नाम बोला जाय, तो कहा जा सकता है कि उसके अमुक कर्म-फल से उसके छोटे-छोटे लड़के-लड़कियाँ मर गये या मर रहे हैं।

हमेशा पत्र के द्वारा अपना संवाद देना। यहाँ इस बार भी झूलनोत्सव किया गया था। इस बार गोपालजी जन्माष्टमी तक झूले में रहेंगे।

आज और नहीं। आशीर्वाद जानो। भगवत् कृपा से कुशल और आनन्द से रहो, यही इच्छा करती हूँ। तुम कैसे हो? शीघ्र पत्र का उत्तर देना। अत्र मंगल।

इति—

आशीर्वादिका—शोभा

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

२३२

ॐ हरिः

२७ नं. बालीगंज प्लेस, कोलकाता
१६.८.४३

नारायणेषु,

प्रिय.....

तुम्हारा पत्र यथासमय मिल गया, किन्तु उत्तर देने में देरी हो गई। आज लगभग ११ दिन हुए मैं यहाँ आई हूँ। कुछ दिन यहाँ और रहने के बाद यहाँ से मानभूम जाने की बात है। सर्वदा पत्र देना। तुम पत्र देने में बहुत देर करते हो।

जानो, संभवतः कि उसने...पास किया है, यह खबर हमें मिली है। इस बार पूजा में तुम लोग कहाँ रहोगे? नीचे तुम्हारा प्रश्नोत्तर दे रही हूँ—

१. तब उसके पूर्वजन्म की स्मृति जाग उठी। छाया की तरह अनेक विषय उसकी आँखों के सामने झलकने लगते हैं। अवश्य यह सब कुछ दिन के बाद ही तिरोहित हो जायेगा। कारण, इस समय चित्त निर्मल है, इसलिए ऐसा हो रहा है।

२. स्वप्न की बात विचार करके मन खराब मत करना।

३. तुम्हारे द्वारा उल्लिखित साधू खूब उच्च स्तर के थे। तुम लोगों के ऊपर कृपा करना ही उनका उद्देश्य था।

अपने सभी समाचार देना। उपरोक्त पते पर ही पत्र देना। आशीर्वाद लेना। अत्र मंगल।

इति—

आशीर्वादिका—शोभा

२३३

ॐ हरिः

सन्त आश्रम,
१८.६.५४

नारायणेषु,

प्रिय.....

तुम्हारा १२.५ तारीख का पंत्र पाकर सुखी हुई। बीच-बीच में पत्र देना।

१. लक्ष्मी-नारायण की मूर्ति एक साथ ही प्रशस्त है। एक-एक मूर्ति में भी दोष या अकल्याण नहीं होता। फिर भी जिस फोटो या मूर्ति की पूजा होती है, उनको ही आसन पर रखना चाहिए। संभव हो तो नारायण के सा[illegible] लक्ष्मी जी

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
की मूर्ति विराजित करने की चेष्टा करना। सुबह-संध्या एवं बृहस्पतिवार को पूजा-भोग का कार्य ठीक एवं सुन्दर ही है। कर द्वारा जप किया जा सकता है। भ्रू-द्वय के बीच में मन:संयोग करके जप करना ही अच्छा है। इससे सहज ही चक्रभेद हो जाता है। ओष्ठ न हिलाकर मानस जप ही प्रशस्त है। जप से पहले गुरु एवं इष्ट का ध्यान करना। जप के समय जप का ध्यान करना, अर्थात् मंत्र की ध्वनि कान में सुस्पष्ट सुन सको, ऐसी चेष्टा करना। लेकिन जिह्वा मत हिलाना। मेरुदण्ड में अनुभूति कुलकुण्डलिनी का मृदु प्रकाश है। माथे के ठीक तालू में जो हो, वह सहस्रार का मृदु स्पन्दन है। संसार में जब हो, तो उसके कार्य के लिए उठना ही पड़ेगा। फिर भी कार्य करते-करते मन ही मन जप चले, ऐसा ध्यान रखना।

२. चेचक एक व्यक्ति को होने पर दूसरों को भी होती रहती है, यह किसी अमंगल का सूचक नहीं है। इस दिन ज्योतिष के द्वारा निर्धारित विपत्ति की संभावना थी। भगवान ने निज अंग में दु:ख लेकर तुमको दु:ख से बचा लिया। एवं यही दूसरे दिन तुमको समझने की सामर्थ्य दी थी। अब वह अन्यभाव से विकृत हो सकता है।

३. नारायण-पूजा से अमंगल नहीं हो सकता। ये सब व्यर्थ संस्कार मन में न रखना ही अच्छा है।

४. यथार्थत: जलाशय के महापुरुष के हाथ द्वारा तुमको यही दिखलाया गया। नाम था पतितपावनदासजी। तुम्हारे सुख-दु:ख में वे साथ ही हैं, यही उन्होंने इंगित किया।

संक्षेप में तुम्हारा पत्रोत्तर दिया। **याद रखो, साधन-भजन का पथ छुरे की धार की भाँति बड़ा कठिन है। सावधानी से चलना। किसी की बात या उपहास से पथभ्रष्ट मत होना। ये सब आते हैं, किन्तु स्थायी नहीं होते।**

मेरा स्नेहाशीष लेना। अत्र मंगल। मंगल इच्छा करती हूँ।

इति—

आशीर्वादिका—शोभा

२३४

ॐ हरि:

सन्त आश्रम, वाराणसी

२०.१.५५

नारायणेषु,

प्रिय.....

तुम्हारा पत्र पाकर सुखी हुई। तुम्हारे पत्र मिलने के साथ ही साथ यहाँ चली आयी, इसीलिए पत्रोत्तर देने में देरी हुई। संभवत: ३१ जनवरी को मैं यहाँ से रवाना होऊँगी।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

माथा और मेरुदण्ड में सुरसुराहट होने का कारण कुल-कुण्डलिनी शक्ति का जागरण है। माथा जो एक-एक ओर झुक जाता है (हिलता है), इसका कारण भी यही है। तुम सभी अवस्थाओं में 'नाम' जपते रहना। किसी भी अवस्था में नाम मत छोड़ना एवं इसी से क्रमशः इस अवस्था की उन्नति होगी। तुम्हें कुछ भी करने का प्रयोजन नहीं है। अपना 'नाम' तुम जपते रहो। और जो करना है वह हम ही करेंगे। तुम्हारे पास जो सेवा लेने के लिए आये हैं, अपनी शक्ति के अनुसार उनकी सेवा करते रहो।

बीच-बीच में पत्र देना। मेरा स्नेह और आशीर्वाद लेना। अत्र मंगल।

इति—

आशीर्वादिका—शोभा

२३५

ॐ हरिः

सन्त आश्रम, वाराणसी

नारायणेषु, १३.३.५५

प्रिय.....

तुम्हारा पत्र पाकर सुखी हुई। तुम्हारे गोपाल जी की मूर्ति की बात जानी। कष्टि पत्थर की गोपाल मूर्ति निर्मित कराने पर १७५ रु. लगता है। यदि तुम्हारी दृष्टि से संभव हो, तो बताना। यहाँ से मूर्ति बनवाकर प्रतिष्ठा करके भेजी जायेगी या नहीं, यह चेष्टा करके देखा जायेगा। प्रतिष्ठित मूर्ति को भेजना अवश्य मुश्किल है। तुम्हारे परिचित कई लोग कलकत्ते में हैं, उनमें से यदि कोई ले जाय। कष्टि पत्थर की गोपाल मूर्ति अत्यन्त सुन्दर है। आसन पर ज्यादा मूर्ति न रखना ही अच्छा है। गोपाल मूर्ति रखने पर भी लक्ष्मी-नारायण की पूजा हो सकती है। गोपाल मूर्ति की जैसी...सेवा करते हो, उसी तरह प्रेमपूर्वक करने की चेष्टा करो।

बाहरी कीर्तनादि में खूब ज्यादा जाने का प्रयोजन नहीं है। बीच-बीच में जा सकते हो। फिर भी कीर्तन में सभी के आसन के साथ न बैठकर पृथक् आसन पर बैठना अच्छा है। अथवा एक कम्बल का आसन ऊपर बिछाकर बैठ सकते हो। कारण, ऐसा न होने पर कीर्तनादि में जो भाव आता है, अन्य का संस्पर्श होने पर वह अन्य के शरीर में चला जाता है। इससे जिसमें जायेगा उसका लाभ होगा, किन्तु तुम्हारी क्षति होगी।

संसार में जब तक हो, तब तक उसके साथ संगति की रक्षा करके चलने की चेष्टा करो। सबसे मजेदार क्या होगा, जानते हो। यदि गोपाल-मूर्ति बनवाओ एवं उनकी सेवा हेतु तुम यहाँ आओ। देखो, यहाँ आना संभव होता है या नहीं।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इस बार... ये सब आये थे। छाया दीदी दीक्षा लेकर गयीं हैं।

जिस मार्ग पर हो, उनके साथ किसी भी अवस्था में विच्छेद भाव मत लाना। उनको दृढ़तापूर्वक पकड़े रहने की चेष्टा करो।

मेरा स्नेहाशीष लो।

इति—

आशीर्वादिका—शोभा

२३६

ॐ हरिः

सन्त आश्रम, वाराणसी

नारायणेषु, १.११.५५

प्रिय.....

भगवत् कृपा से यहाँ का पूजा-उत्सव सुन्दर रूप में सुसम्पन्न हुआ। माँ के इस आगमन से तुम लोगों का मन पवित्रता के स्पर्श से आनन्दमय हो उठे। तुम लोगों को आनन्दमय लोक की ओर अग्रसारित करे, यही इच्छा करती हूँ। उनके आगमन से आकाश एवं वायुमण्डल में जो पवित्रता का सुन्दर-निर्मल रूप व्याप्त हो जाता है, तुम लोग उसे हृदयाकाश में भरकर पवित्रता से सुन्दर महान होकर मातृ-गर्व से अपने को गर्वित करो। मन को सुन्दर-निर्मल करो। छोटी-मोटी हिंसा-द्वेष-कोलाहल भूल जाओ। माँ आनन्दमयी की सन्तान तुम लोग हो यह बात मत भूलो, भुलाना भी मत। स्वयं आनन्दरस में मग्न होकर दूसरों को भी मग्न कराओ। गुरु-कृपा से तुम लोगों की चेष्टा सफल हो, विजया पर यही आशीर्वाद करती हूँ।

उन्हीं की कृपा से तुम लोगों के आश्रम के पास की जमीन देवी-पक्ष में रजिस्ट्री हुई है। सभी के सहयोग एवं महान चेष्टा से ही यह सम्भव हुआ है। तुम लोग उनकी सन्तान हो—इसीलिए सत् कार्य, सत् दान वे सफल कर देते हैं। **स्वयं को उनके चरणों में विलीन कर दो, यही सर्वश्रेष्ठ दान करके तुम लोग दानी बनो, मैं यही चाहती हूँ। अत्र मंगल।**

इति—

आशीर्वादिका—शोभा

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

२३७

ॐ हरिः

सन्त आश्रम, वाराणसी

१३.११.५७

नारायणेषु,

प्रिय.....

तुम्हारा पत्र पाकर सुखी हुई। चन्द्र-ग्रहण के सम्बन्ध में पत्रावली में जो विधि है, उसी को मान सकते हो। अर्थात् ग्रहण लगने से ९ घंटा पहले सूतक-ग्रहण मान सकते हो।

नीलमणि की सेवापूजा ठीक तरह से ही चल रही है, यह जाना। **यदि उनके ऊपर निर्भर करके रह सको, तो इस कार्य में कभी कोई असुविधा नहीं होगी।** यह बात याद रखो, निर्भरशील को वे हर समय निर्भय रखते हैं।

तुम्हारे ऊपर कोई नाराज है, यह सोचकर मुझे अच्छा नहीं लगता। मैं सोचती हूँ कि अपने संसार में तुम कल्याण की प्रतिमूर्ति होकर रहो। **अहमिका का विसर्जन जितना कर सकोगे, देखोगे आत्मसमर्पण का भाव शीघ्र आ रहा है। जो कुछ हो रहा है, सब भगवत्-विधान से हो रहा है यह जानकर मन में सन्तोष-भाव लाने की चेष्टा करना।**

परीक्षा की बात जानी। उन्होंने कैसी परीक्षा दी, सूचना देना। मेरा स्नेहाशीष लेना। अत्र मंगल।

इति—

आशीर्वादिका—शोभा

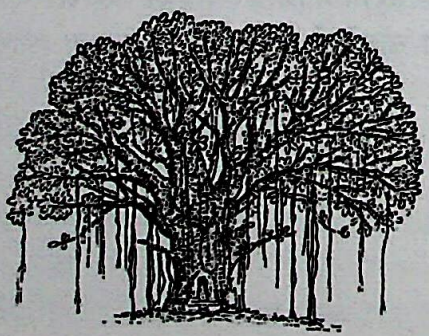

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मातृवाणी

१. "सदगुरु को उनकी कृपा के बिना पहचाना नहीं जा सकता।"

२. "प्रभु सेवक विनिमय की आशा न रखकर सेवा करते हैं।"

३. "तुमने किसी को आघात दिया है, तो उसको संतुष्ट करने की चेष्टा करो अर्थात् वह अपने मन की व्यथा को भूल जाये।"

४. "इस जन्म का कर्मफल भी मिलता है और पूर्व-पूर्व जन्म का कर्मफल भी।"

५. "जो भगवत् पद में समर्पित हैं, वे अन्याय का फल बहुत जल्दी पाते हैं एवं इसके द्वारा वे निर्मल हो जाते हैं।"

६. "जो साधक गुरु के ऊपर निर्भर होते हैं, उनके खाने-पीने, वस्त्रादि का भार गुरु को वहन करना ही पड़ता है।"

७. "गुरु सर्वव्यापी हैं। सभी के साथ उनका अङ्गाङ्गी सम्पर्क है। इसलिए शिष्य का सुख-दुःख उनको स्पर्श करता है।"

८. "दास भाव का अर्थ गुलाम नहीं है।"

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.